संडे स्कूल पाठ्य पुस्तक

8

प्रकाशक :

ब्रदरन संडे स्कूल समिति

- **Brethren Sunday School**
  Text Book-8 (Hindi)

- **All Rights Reserved**

- *Original Text Books Published in Malayalam and English by :*
  The Brethren Sunday School Committee, Kerala

- *Project Co-Ordinator :*
  Jacob Mathen (New York)
  athmamanna@yahoo.com

- *Language Consultant :*
  Dr. Johnson C. Philip

- *Translated by :*
  Dora Alex (Delhi)

- *Copies Available From :*
  *** SBS Camp Centre, Puthencavu,**
  Chengannur, Kerala

  *** Brethren Sunday School Committee**
  P.B. No. 46, Pathanmthitta, Kerala

- *Printed, Published and Distributed By :*
  The Brethren Sunday School Committee

प्रस्तावना

आरंभकाल से ही ब्रदरन विश्वासी लोग अपने बच्चों को परमेश्वर का वचन सिखाने को काफी महत्व देते आये हैं। जैसे ही कोई बच्चा 'मम्मी' या 'पापा' बोलने लगता है वैसे ही उसे घर वाले ''यहोवा मेरा चरवाहा है'' जैसी छोटी बाइबल आयतें सिखाना शुरू कर देते हैं, जैसे ही वह नर्सरी में जाने लगता है वैसे ही उसे संडे स्कूल भी भेजना शुरू हो जाता है।

भारत में ब्रदरन मंडलियों की संख्या जब बढ़ने लगी तब कई भाईयों को लगा कि सभी मंडलियों के लिये उपयोगी एक संडे स्कूल पाठ्यक्रम बनाया जाना चाहिये। इस विषय में तत्पर काफी सारे भाईयों ने कई साल पहले **पत्तनमथिट्टा** नामक स्थान पर गॉस्पल हॉल में एकत्रित होकर **''ब्रदरन संडे स्कूल पाठ्यक्रम''** की नींव डाली। अगले कुछ सालों में उन लोगों ने कुल दस कक्षाओं का पाठ्यक्रम मलयालम भाषा में तैयार किया और तब से मलयालमभाषी मंडलियों में इनका व्यापक उपयोग होता आया है।

इस बीच कई भाई-बहनों, मंडलियों एवं **SBS India** की मदद से इन पुस्तकों का अनुवाद अंग्रेजी एवं कई भारतीय भाषाओं में हुआ जिसके कारण इन पाठ्यपुस्तकों का उपयोग और भी व्यापक हो गया। हिंदीभाषी मंडलियों की व्यापकता के कारण हिन्दी संस्करण का सारे भारत में स्वागत हुआ। इस बीच हर जगह से मांग आने लगी कि जल्दबाजी में किये गये हिंदी अनुवाद को अब संशोधित किया जाये। इस मामले में भाई **जेकब मात्तन** ने काफी व्यक्तिगत दिल्चस्पी लेकर यह कार्य बहिन **डोरा एलेक्स** को सौंपा। पुराने अनुवाद का संशोधन करने के बदले यह बहिन सारे दसों पाठ्य पुस्तकों का नया एवं आधुनिक बोलचाल की

हिंदी में अनुवाद कर रही हैं। इस कार्य को **ब्रदरन संडे स्कूल समिति** एवं **SBS India** का पूर्ण अनुमोदन प्राप्त है। बहिन **डोरा एलेक्स** ने अभी तक जितने पुस्तकों का अनुवाद किया है उन सबका मैंने अवलोकन किया एवं उनको बहुत ही सरल, सुलभ एवं सटीक पाया है, मैं इस कार्य के लिये उनका एवं भाई **जेकब मात्तन** का अभिनंदन करता हूँ।

मनुष्य जन्म से ही पापी होता है, नया जन्म पाने के बाद उसे कई साल तक परमेश्वर का वचन सिखाया जाना जरूरी है जिससे कि उसका मन रूपांतर पाकर (रोमियों 12:1, 2) वह सही रीति से सोचने लगे। मुझे पूरा यकीन है कि इस महान कार्य के लिये **ब्रदरन संडे स्कूल पाठ्यक्रम** एकदम उचित माध्यम है। हिंदी के नये संस्करण के छपने से हिंदीभाषी मंडलियों को बच्चों एवं नये विश्वासियों के प्रति अपनी आत्मिक जिम्मेदारी निभाने के लिये 10 अति उत्तम पुस्तकें उपलब्ध हो जायेंगी।

विनीत

शास्त्री जानसन सी फिलिप

विषय सूची

पाठ		पृष्ठ संख्या
1.	यशायाह	1
2.	यिर्मयाह	5
3.	योएल, ओबद्याह	10
4.	मीका, नहूम	13
5.	हबक्कूक	17
6.	होशे	21
7.	आमोसं	23
8.	योना	27
9.	यहेजकेल	31
10.	हाग्गै	36
11.	जकर्याह	39
12.	मलाकी	43
13.	दानिय्येल (1)	46
14.	दानिय्येल (2)	49
15.	दानिय्येल (3)	53
16.	दानिय्येल (4)	56
17.	दानिय्येल (5)	59
18.	दानिय्येल (6)	62
19.	दानिय्येल (7)	66

20. दानिय्येल (8) 69
21. दानिय्येल (9) 72
22. दानिय्येल (10) 75
23. दानिय्येल (11) 77
24. दानिय्येल (12) 80
25. दानिय्येल (13) 83
26. दानिय्येल (14) 85
27. दानिय्येल (15) 87
28. पुराने व नए नियम के बीच (1) 91
29. पुराने व नए नियम के बीच (2) 93
30. उद्धार 96
31. उद्धार और पवित्र आत्मा 101
32. उद्धार की सुरक्षा (1) 105
33. उद्धार की सुरक्षा (2) 108
34. धर्मी ठहराना, पवित्रीकरण और महिमान्वित करना 111
35. बपतिस्मा (1) 115
36. बपतिस्मा (2) 118
37. बपतिस्मा : जीवन में लागू करना 122
38. प्रभु-भोज (1) 125
39. प्रभु-भोज (2) 129
40. अलगाव 132

पाठ-1

यशायाह

यशायाह की भविष्यद्वाणियाँ 760 से 698 ईसा पूर्व के समय की घटनाओं का वर्णन करती हैं। भविष्यद्वाणी की पुस्तकों में यह अपनी उच्च साहित्यिक शैली के कारण सबसे ऊँचे स्थान पर है। इस पुस्तक में 66 अध्याय हैं जो हमें बाइबल की 66 पुस्तकों का स्मरण कराती हैं। कुछ लोगों का कहना है कि यह पुस्तक बाइबल का ''लघु रूप'' है। इसमें दिए सुसमाचार के संदेश इसकी विशिष्टता है। यशायाह की पुस्तक को ''यशायाह रचित सुसमाचार'' भी कहते हैं।

भविष्यद्वक्ता : आमोस (आमोस भविष्यद्वक्ता नहीं) का पुत्र यशायाह राजसी परिवार का सदस्य था। उसके दो पुत्र थे। (7:3; 8:3, 18)। कहा जाता है कि मनश्शे के शासन काल में उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए, संभवत: जिसका उल्लेख इब्रानियों 11:37 में किया गया है।

विषय-वस्तु : यशायाह शब्द का अर्थ है ''यहोवा उद्धार है''। यही इस पुस्तक का विषय वस्तु है। इस पुस्तक में ''उद्धार'' शब्द 26 बार आया है, जबकि अन्य सभी भविष्यद्वाणियों की पुस्तकों में सब मिलाकर मात्र सात बार ही यह शब्द आया है। अध्याय 1-39 मनुष्य के लिए उद्धार की आवश्यकता को चित्रित करता है। अध्याय 40-66 तक परमेश्वर की दया से उसके प्रावधान का वर्णन है। यशायाह की इस्राएल को चेतावनी थी कि परमेश्वर उसे उसकी दुष्टता का दण्ड देंगे। तथापि, परमेश्वर जो उद्धार का परमेश्वर है वह यहूदियों और अन्यजातियों के लिए एक उद्धारकर्ता का प्रावधान करेंगे।

इस पुस्तक में हम छ: विषयों को देखते हैं :

1. भविष्यद्वक्ता का चुना जाना
2. प्रभु यीशु का जीवन
3. उद्धारकर्ता के कष्ट

4. महिमामय युग–सहस्राब्दि

5. सुसमाचार

6. प्रभु यीशु का प्रकट होना

1. भविष्यद्वक्ता का चुना जाना :

इस पुस्तक का पहला अध्याय इस बात का वर्णन करता है कि किस प्रकार परमेश्वर को उसके अपने लोगों ने त्याग दिया और मूर्तियों के पीछे हो लिए। परमेश्वर कहते हैं, ''बैल तो अपने मालिक को और गदहा अपने स्वामी की चरनी को पहचानता है, परन्तु इस्राएल मुझे नहीं जानता, मेरी प्रजा विचार नहीं करती।'' यशायाह 1:3.। अध्याय 6 में हम यशायाह के दर्शन के विषय में पढ़ते हैं। उसने देखा कि परमेश्वर सिंहासन पर विराजमान है और साराप एक दूसरे से पुकार-पुकार कर कह रहे थे, ''सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है।'' यह सुनकर भविष्यद्वक्ता ने अपनी स्थिति को पहिचाना और उसने कहा, ''हाय, हाय! मैं नष्ट हुआ, क्योंकि मैं अशुद्ध होंठवाला मनुष्य हूँ और अशुद्ध होंठवाले मनुष्यों के बीच में रहता हूँ। क्योंकि मैं ने सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज को अपनी आँखों से देखा है।'' तब एक साराप हाथ में अंगारा लिए हुए जिसे उसने चिमटे से वेदी पर से उठा लिया था, और उससे उसके होंठों को छू दिया। तब परमेश्वर ने उसे अपने प्रवक्ता के रूप में भेजा। यहाँ पर हम देखते हैं कि पवित्रीकरण सभी विश्वासियों के लिए आवश्यक है, विशेषकर उनके लिए जो परमेश्वर के सेवक हैं। हमें यह याद रखना चाहिए कि पवित्रता के बिना हम प्रभु को देख नहीं सकते। (इब्रानियों 12:14)। व्यावहारिक पवित्रता के बगैर फलदायक सेवा संभव नहीं है।

2. प्रभु यीशु का जीवन :

1. कुंवारी से जन्म (7:14)

2. उसका ईश्वरत्व और अनंत अस्तित्व (9:6)

3. उसका परिवार (11:1)

4. परमेश्वर के आत्मा के द्वारा प्रभु का अभिषेक (11:2)

5. प्रभु का चरित्र (11:3, 4)

6. प्रभु का सादा जीवन और नम्रता (42:1-4)

7. प्रभु के कष्ट, मृत्यु और पुनरुत्थान (अध्याय 53)

8. उसका महिमामय शासन (11:3-16)

3. प्रभु यीशु के कष्ट :

अध्याय 53 में दिया गया यह विषय स्पष्ट करता है कि किस प्रकार प्रभु ने पापियों के लिए अपने जीवन का बलिदान किया। पद 2 से आगे हम देखते हैं कि उद्धारकर्ता अपनी देह पर संसार के पापों को उठाता है। इस्राएली लोगों ने सोचा कि परमेश्वर का उद्धार केवल उन ही के लिए है। परन्तु सच्चाई यह है कि यह उद्धार हर एक के लिए है। पद 9 ध्यान देने योग्य है। उन्होंने प्रभु को दो डाकुओं के बीच क्रूस पर चढ़ाया। एक धनी पुरुष यूसुफ की कब्र में प्रभु को दफनाया गया। (मत्ती 27:57-60) यह अद्‌भुत है कि ऐसी भविष्यद्वाणियाँ पूर्ण रूप से पूरी हुईं।

4. सहस्राब्दि :

अध्याय 11:6-11 और 65:17-25 में हम महिमामय सहस्राब्दि के राज्य के विषय में पढ़ते हैं। यह भविष्यद्वाणी तब पूरी होगी जब प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर अपने एक हज़ार वर्ष के राज्य की स्थापना करेंगे। पृथ्वी पर बहुत सी बातें बदल जाएँगी। जंगली जानवरों का स्वभाव बदल जाएगा और मरुभूमि में भी हरियाली होगी। प्रभु यीशु मसीह स्वयं तब राजा होंगे।

5. सुसमाचार :

इस भविष्यद्वाणी में हम उद्धार का स्पष्ट संदेश देखते हैं। अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा परमेश्वर सब मनुष्यों को अपने पास आने का निमंत्रण देते हैं-''आओ, हे सब प्यासे लोगो, पानी के पास आओ, और

जिन के पास रुपया न हो, तुम भी आकर मोल लो और खाओ! दाखमधु और दूध बिना रुपए और बिना दाम ही आकर ले लो।'' (यशा. 55:1) इफिसियों 2:8-9 भी पढ़ें।

6. प्रभु यीशु का दो बार प्रकट होना :

अध्याय 61 में हम प्रभु के दो बार प्रकट होने के विषय में पढ़ते हैं। प्रभु यीशु का पहला देहधारण ''यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष'' (पद 2) का आरंभ था। वही पद 'परमेश्वर के पलटा लेने के दिन'' के बारे में भी कहता है, जो कि प्रभु के दूसरी बार प्रकट होने पर होगा। पहले आगमन की भविष्यद्वाणी के विषय में लूका 4:18-21 में स्वयं प्रभु ने कहा। उन्होंने दूसरी घटना का जिक्र नहीं किया क्योंकि वह उनके द्वितीय आगमन पर पूरी होगी। अभी हम प्रभु की दया और अनुग्रह के युग में जी रहे हैं।

प्रश्न :

1. यशायाह शब्द का क्या अर्थ है?
2. इस पुस्तक में हम किन-किन विषयों को देखते हैं?
3. अध्याय 53 का क्या महत्व है?
4. सहस्राब्दि युग कैसा होगा?
5. ''यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष'' और परमेश्वर के ''पलटा लेने के दिन'' का क्या अर्थ है?

पाठ–2

यिर्मयाह

परिचय :

योशिय्याह राजा के राज्य के तेरहवें वर्ष और बाबुल की बंधुआई के दौरान 41 वर्षों तक यिर्मयाह ने भविष्यद्वाणी की। यरूशलेम के आने वाले नाश और परमेश्वर के लोगों के भटके हुए जीवन के कारण वह आँसुओं के साथ भविष्यद्वाणी करता था। इस कारण उसे ''रोनेवाला भविष्यद्वक्ता'' कहते हैं।

भविष्यद्वक्ता :

अन्य भविष्यद्वक्ता से अलग, यिर्मयाह अपने विषय में काफी कुछ बताता है। वह एक याजक था (1:1) छोटी उम्र में ही परमेश्वर ने उसे अपने सेवाकार्य के लिए अलग किया था। भविष्यद्वाणी के महान कार्य को देखते हुए उसने कहा, ''हाय, प्रभु यहोवा! देख, मैं तो बोलना भी नहीं जानता क्योंकि मैं लड़का ही हूँ।'' परन्तु यहोवा ने उससे कहा, ''मत कह कि मैं लड़का ही हूँ। क्योंकि जिस किसी के पास मैं तुझे भेजूँ वहाँ तू जाएगा, और जो कुछ मैं तुझे आज्ञा दूँ, वही तू कहेगा।'' उसने आज्ञा मानी। परमेश्वर ने उसे विवाह करने से मना किया। (16:2)। इस दयालु भविष्यद्वक्ता ने बहुत दु:ख उठाए। परमेश्वर की ओर से आने वाले न्याय के संदेश से उसका दिल बहुत दु:खी हुआ। लोगों के लिए उसके संदेश को स्वीकार करना कठिन था। उसके परिवार (12:6), उसके शहर के लोग (11:8) और यरूशलेम के लोगों ने (18:8) उसके विरुद्ध कार्य किया। उन्होंने उसे मारा और काठ में जकड़ दिया। (20:2) उन्होंने उसे मार डालने का भी यत्न किया। (26:15)। अनेकों बार उसे कैदखाने में डाला। (37:1–11; 38:6–8)। जब नबूकद्नेस्सर ने यरूशलेम पर कब्जा किया तब यिर्मयाह रिहा किया गया। लोगों के साथ उसे भी ज़बरदस्ती मिस्र ले जाया गया (43:6–7)। इतिहास कहता है कि चालीस

वर्षों के सेवा कार्य के पश्चात् उसे पत्थरवाह करके मार डाला गया।

उसका संदेश :

भविष्यद्वक्ता ज़ोर देकर इस बात को कहता है कि इस्राएल परमेश्वर से दण्ड पाएगा क्योंकि उन्होंने अन्य देवताओं की उपासना की। परन्तु वह यह भी कहता है दया और अनंत प्रेम करने वाला परमेश्वर अपने लोगों पर दया करेगा और उन्हें वापस ले आएगा। यिर्मयाह नाम का अर्थ है ''यहोवा के द्वारा ऊँचा उठाया जाना''।

भविष्यद्वक्ता का चुना जाना :

परमेश्वर ने उसे छूकर, उसके मुँह में अपने वचन डाले। उसका उत्तरदायित्व था कि भटक गए लोगों को परमेश्वर का संदेश सुनाए! परमेश्वर ने उसे नियुक्त किया, ''उन्हें गिराने और ढ़ा देने के लिए, नष्ट करने और काट डालने के लिए, या उन्हें बनाने और रोपने के लिए।'' (1:10)। सुसमाचार सुनाने की तुलना में यह अधिक कठिन कार्य था। पहले के शब्द न्याय को दर्शाते हैं और अंतिम दो शब्द पश्चाताप करने वालों के लिए आश्वासन को दर्शाते हैं। अंततः परमेश्वर दो दर्शनों के द्वारा अपने सेवक को ढ़ाढ़स बँधाते हैं। बादाम के पेड़ की टहनी का दर्शन दिखाकर उसे दिलासा दिया कि वह लगातार परमेश्वर के वचन की पूर्ति होते देखता रहेगा (1:12) बादाम की टहनी, प्रभु यीशु के जी उठने की सामर्थ का उदाहरण है। (गिनती 17:8)। दूसरे दर्शन में भविष्यद्वक्ता ने एक उबलता हुआ हण्डा देखा (1:13) जिसका मुँह उत्तर दिशा की ओर था। परमेश्वर इसकी व्याख्या करके कहते हैं कि पूर्व के राजा यरूशलेम के विरुद्ध आकर उससे युद्ध करेंगे। परन्तु यिर्मयाह को भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि परमेश्वर की उपस्थिति उनके साथ है।

परमेश्वर का मंदिर और मूर्तियाँ (7:10)

यहूदियों के लिए परमेश्वर का मंदिर महत्वपूर्ण था परन्तु उनकी जीवन शैली इस बात को नकारती थी। वे स्वर्ग की रानी के लिए रोटी

बनाने के लिए उत्सुक थे। परन्तु परमेश्वर ने उन्हें चेतावनी दी थी कि यदि वे अपने बुरे मार्गों से नहीं फिरे तो उनके साथ भी वही होगा जो शीलोह के साथ हुआ। और ऐसा हुआ कि पलिश्ती परमेश्वर का संदूक ले गए और एली याजक के पुत्र मार डाले गए। (1 शमू. 4; भजन 78:57-60)।

इस्राएलियों की दुर्दशा देखकर यिर्मयाह रोता है (8:7) ''भला होता कि मेरा सिर जल ही जल, और मेरी आँखें आँसुओं का सोता होतीं, कि मैं रात दिन अपने मारे हुए लोगों के लिए रोता रहता।'' (9:1)।

हम दावा करते हैं कि हम मूर्तिपूजा नहीं करते। परन्तु याद रखें कि प्रभु यीशु और एक विश्वासी के मध्य में आने वाली हर वस्तु मूर्ति है। 1 यूहन्ना 5:21 की आज्ञा पर ध्यान दें, ''हे बालको, अपने आपको मूरतों से बचाए रखो।''

लुंगी का उदाहरण :

यहोवा ने उससे कहा, ''जाकर सनी की एक लुंगी मोल ले और उसे कमर में बाँध और जल में मत भीगने दे।'' उसने यहोवा की इस आज्ञा का पालन किया। तब यहोवा ने दूसरी बार उससे कहा, ''जो लुंगी तू ने मोल लेकर अपनी कमर में बाँधी है, उसे फरात के तट पर ले जा और उसे वहाँ एक चट्टान की दरार में छिपा दे।'' उसने फिर परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। बहुत दिनों के बाद यहोवा ने उससे कहा, ''उठ और फरात के तट पर छिपाई लुंगी को लेकर आ।'' तब वह गया और उस लुंगी को लेकर आया। परन्तु अब वह बिगड़ गई थी और किसी काम की न रही थी। तब यहोवा का यह वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा, ''इसी प्रकार से मैं यहूदियों का गर्व और यरूशलेम का बड़ा गर्व नष्ट कर दूँगा। वे इस लुंगी के समान हो जाएँगे जो किसी काम की नहीं रही। जिस प्रकार से लुंगी मनुष्य की कमर में कसी जाती है, उसी प्रकार मैं ने इस्राएल और यहूदा के सारे घराने को अपनी कटि में बाँध लिया था कि वे मेरी प्रजा बनें और मेरे नाम और कीर्ति और शोभा का कारण हों, परन्तु उन्होंने न माना।''

कैद में उसका जीवन :

राजा सिदकिय्याह ने यिर्मयाह को कैद में डलवा दिया क्योंकि उसने राजा से कहा कि परमेश्वर यरूशलेम को बेबीलोन के राजा नबूकद्नेस्सर के हाथ में कर देगा। राजा ने सोचा कि वह शत्रुओं से मिला हुआ है। यदि यिर्मयाह राजा के पक्ष में बातें कहता तो राजा सिदकिय्याह उसे रिहा करने के लिए तैयार था, परन्तु यिर्मयाह इस बात के लिए राजी न हुआ। अंततः हाकिमों ने राजा से कहा, ''उस पुरुष को मरवा डाल, क्योंकि वह ऐसे वचन कहता है जिससे योद्धाओं के हाथ-पाँव ढीले पड़ जाते हैं। क्योंकि वह पुरुष इस प्रजा के लोगों की भलाई नहीं वरन् बुराई ही चाहता है।'' सिदकिय्याह राजा ने उन से कहा, ''सुनो, वह तुम्हारे वश में है।'' तब उन्होंने यिर्मयाह को एक गड्हे में डाल दिया। उसमें पानी नहीं, केवल दलदल था। और यिर्मयाह कीचड़ में धँस गया। परन्तु परमेश्वर ने उसे वहाँ से निकलवा दिया। एबेदमेलेक नाम का एक कूशी था जो राजभवन का एक खोजा था, उसने राजा से आज्ञा लेकर यिर्मयाह को गड्हे में से निकाल दिया और फिर वह पहरे के आंगन में रहने लगा।

दस्तावेज का जलाया जाना :

राजा यहोयाकीम शीतकाल के भवन में एक अंगीठी के सामने बैठा था। बारूक के द्वारा लिखे गए यिर्मयाह के वचन के दस्तावेज में से कुछ राजा को पढ़कर सुनाया गया। राजा ने बहुत क्रोधित होकर उस पुस्तक को चाकू से काटा और अंगीठी में जल रही आग में फेंक दिया, और वह पुस्तक जलकर भस्म हो गई। यहूदियों का राजा होने के कारण उसे परमेश्वर के वचन की सुरक्षा और आदर करना चाहिए था, परन्तु उसने यिर्मयाह की भविष्यद्वाणियों को जला दिया। परन्तु परमेश्वर ने यिर्मयाह की सहायता की और वह भविष्यद्वाणियों को फिर से लिख सका।

प्रश्न :

1. यिर्मयाह ''रोनेवाला भविष्यद्वक्ता'' क्यों कहलाता है?

2. ''यिर्मयाह'' नाम का क्या अर्थ है?
3. यिर्मयाह के सेवाकार्य और उसके नाम के अर्थ में क्या संबंध है?
4. यिर्मयाह को सेवाकार्य के लिए किस ने नियुक्त किया?
5. शीलोह में इस्राएलियों को क्या दण्ड मिला था?
6. खराब हो चुकी लुंगी किसका प्रतीक था?
7. यहोयाकीम ने दस्तावेज को कैसे नाश किया?

पाठ-3

योएल, ओबद्याह

भविष्यद्वक्ता योएल के बारे में हमें अधिक जानकारी नहीं मिलती। उसने राजा योआश के दिनों में भविष्यद्वाणी की थी। संभवत: उसने अपने बचपन में यशायाह और यिर्मयाह को देखा था। योएल नाम का अर्थ है 'यहोवा, मेरा परमेश्वर''।

1. देश पर दंड : अध्याय 1

योएल की भविष्यद्वाणी के दिनों में देश पर बहुत सी आपदाएँ आईं। सारी फसलें नष्ट हो गईं। सब कुछ टिड्डियाँ खा गईं। (1:4) इस कारण भयंकर अकाल पड़ गया। इस प्रकार के दंड के बारे में मूसा ने पहले से कहा था। (व्यवस्था. 28:38-39)। इस दंड से बचाव केवल पश्चाताप और प्रार्थना के द्वारा ही संभव है। (1 राजा 8:37-39)। परमेश्वर के लोग यहोवा को छोड़कर अन्य देवताओं की आराधना करने लगे जिसके परिणामस्वरूप यह दण्ड उन पर आया। भविष्यद्वक्ता उनसे कहता है कि मन फिराएँ और परमेश्वर की ओर मुड़ें। (पद 13-14)। यह एक विश्वासी पर भी लागू हो सकता है जो पाप में पड़ गया हो। (1 यूहन्ना 1:8-10)। स्वयं भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के लोगों के छुटकारे के लिए विनती करता है। (1:19)।

2. प्रभु का दिन (2:1-15)

यहाँ पर हम प्रभु के दिन का आरंभ देखते हैं क्योंकि इस्राएल राष्ट्र ने मन फिराने में विलंब किया। अध्याय 1 के पद 6 में हम पढ़ते हैं कि एक सामर्थी राष्ट्र उनके विरुद्ध चढ़ाई कर रहा है। उस सामर्थी राष्ट्र के आक्रमण का परिणाम हम 2:1-10 में देखते हैं अर्थात् प्रभु के दिन का वर्णन। इस प्रकार के प्रभु के दिन (यशा. 20:10-22) भविष्य में फिर से आएँगे जिसका संकेत प्रकाशितवाक्य 19:11-21 में दिया गया है।

3. पश्चाताप (2:12-17)

इस्राएल राष्ट्र के सामने एकमात्र मार्ग यह था कि पश्चाताप करें और लौट आएँ। परन्तु उन्होंने उस क्षण तक मन न फिराया। अत: पद 12 में परमेश्वर उन से फिर से कहते हैं कि ''उपवास के साथ, रोते-पीटते, अपने पूरे मन से फिरकर मेरे पास आओ।'' यद्यपि परमेश्वर सच्चा न्यायी और धर्मी है तौभी वह प्रेमी और दयालु (पद 13) भी है। वह क्षमा करने के लिए तैयार है।

4. आशीषें (2:18-32; 3:18-20)

सच्चा पश्चाताप आशीष लाता है। अत: परमेश्वर ने उन्हें उनके शत्रुओं से बचाया और उन्हें सांसारिक और आत्मिक आशीषें दीं।

ओबद्याह :

भविष्यद्वक्ता और उसका संदेश :

इस भविष्यद्वक्ता के विषय में हमें अधिक जानकारी नहीं मिलती। माना जाता है कि योशिय्याह राजा के समय उसने भविष्यद्वाणी की थी। उसके नाम का अर्थ है-''दास'' अथवा ''यहोवा का आराधक'' उसने एदोम पर परमेश्वर के न्याय के विषय में प्रचार किया।

एदोम : एसाव का दूसरा नाम एदोम है। दो भाइयों की संतानें होने के कारण इस्राएली और एदोमियों में अच्छे संबंधों की अपेक्षा की जाती है। पद 3 और 11 से यह ज्ञात होता है कि एदोमी ज्ञानी लोग थे। परन्तु उनके ज्ञान का परिणाम प्रेम नहीं परंतु शत्रुता थी। बाइबल में हम अनेक स्थानों पर देखते हैं कि विभिन्न अवसरों पर एदोमियों ने इस्राएलियों के विरुद्ध बलवा किया। अत: परमेश्वर ने उन्हें दण्ड देने का निश्चय किया और अंतत: एदोमी एक तिरस्कृत जाति बन गई।

एदोम का पाप और दंड :

अन्यजाति जब यरूशलेम की संपत्ति लूट कर ले जा रहे थे, तब एदोमियों को इस्राएलियों की सहायता करनी चाहिए थी। परन्तु वे शत्रुओं के साथ मिलकर इस्राएल के विरुद्ध खड़े हुए। परन्तु इस्राएली एदोमियों

के इस विषय को परमेश्वर के सम्मुख लाए। पद 9 से 15 में हम उस क्रूरता को देखते हैं जो एदोमियों ने उन पर किए।

हम एदोमियों पर परमेश्वर के न्याय के विषय में भी पढ़ते हैं। और यह भी कि किस प्रकार एदोम के देश पर शत्रुओं ने कब्जा कर लिया और इस्राएली एदोमियों के हाथ से छुड़ाए गए। एदोमियों को यह समझाया गया कि ''राज्य यहोवा का ही है।'' (पद 21)। नए नियम में एदोम को इदुमिया कहा गया है। ईस्वी सन् 70 में एदोमियों का इतिहास समाप्त हो गया।

प्रश्न :

1. 'प्रभु के दिन' का क्या अर्थ है?
2. सच्चे पश्चाताप के क्या प्रमाण हैं?
3. योएल 2:28-32 कैसे पूरा हुआ?
4. एदोम के विरुद्ध क्या दोष लगाए गए?
5. एदोम को क्या दंड मिला?

टिप्पणी : * इतिहास में 'प्रभु का दिन' उन अवसरों को कहा गया है जब परमेश्वर ने किसी भी बात में एक न्यायी के रूप में दखल दिया।

मसीह का दिन (फिलि. 2:16) उस दिन के लिए कहा गया है, जब प्रभु दोबारा आएँगे।

पाठ-4

मीका, नहूम

मीका

लेखक : मीका ने यहूदा में भविष्यद्वाणी की। वह यशायाह का समकालीन था (यशा. 1:1; मीका 1:1)। उसके नाम का अर्थ है–''यहोवा के समान कौन है?''

इस भविष्यद्वाणी में मुख्यत: बताया गया है–

1. परमेश्वर से दूर जाने के कारण जो दंड इस्राएल को मिला।

2. सच्चे पश्चाताप के साथ जब वे वापस परमेश्वर के पास आए तो उन्हें शांति प्राप्त हुई।

1. दंड = अध्याय 1-3

2. शांति = अध्याय 4-8

इस पुस्तक के बाँटे जाने के आधार पर बाइबल के विद्वान इसे यशायाह की पुस्तक का लघु रूप कहते हैं।

दण्ड और चेतावनी (अध्याय 1-3)

ये अध्याय उस समय का विवरण देते हैं जब राजा आहाज के दिनों में अश्शूरियों ने यहूदा पर चढ़ाई की थी (1:6-16; 2 राजा 17:3-16)। यह दण्ड इस्राएल के पाप के कारण आया। (1:5)। पद 6 और 7 में हम सामरिया के विनाश के विषय में पढ़ते हैं। पद 9 और 10 में हम यहूदा पर आक्रमण के विषय में पढ़ते हैं।

इस्राएल के अगुवे भी बिगड़ गए थे। उन्होंने लोगों से पाप करवाया (3:1) अपना कार्य करने के लिए उन्होंने घूस लिया और दिखावा किया कि उनकी शिक्षा और न्याय यहोवा की ओर से है। (3:11) परिणामस्वरूप परमेश्वर ने उन्हें भयंकर दण्ड दिया।

आश्वासन (अध्याय 4, 5)

इन अध्यायों में अपने लोगों के प्रति परमेश्वर के व्यवहार में एक परिवर्तन देखते हैं। उनके पश्चाताप करने पर परमेश्वर न केवल दया दिखाते हैं परंतु उनसे अच्छे भविष्य का वायदा भी करते हैं। मीका ने भविष्यद्वाणी की कि परमेश्वर के मंदिर की महानता फिर से स्थापित होगी। (4:1)। और ''यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा।'' (पद 2) और ''वह बहुत से देशों के लोगों का न्याय करेगा और दूर-दूर तक की सामर्थी जातियों के झगड़ों को मिटाएगा।'' (पद 3)

अध्याय 5 इस्राएल को भविष्य में मिलने वाले विजय के विषय में कहता है। पद 2 स्पष्ट कहता है कि ये आशीषें उन्हें उस राजा के द्वारा प्राप्त होंगी जिसका जन्म बैतलहम में होगा। ''हे बैतलहम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हज़ारों में गिना नहीं जाता, तौभी तुझ में से मेरे लिए एक पुरुष निकलेगा, जो इस्राएलियों में प्रभुता करनेवाला होगा, और उसका निकलना प्राचीन काल से, वरन् अनादिकाल से होता आया है।'' (पद 2)। यह प्रभु यीशु मसीह के जन्म स्थान के विषय में की गई भविष्यद्वाणी है जो मत्ती 2:5 में पूरी हुई।

इस्राएल पर अभियोग :

परमेश्वर इस्राएल पर अभियोग लगाते हैं कि उनके लिए सब कुछ करने के बावजूद भी वे परमेश्वर से दूर चले गए। (6:1-5)। परन्तु परमेश्वर उनसे कहते हैं, ''हे मनुष्य, वह तुझे बता चुका है कि क्या अच्छा है और यहोवा इसे छोड़ और तुझ से क्या चाहता है कि तू न्याय से काम करे और कृपा से प्रीति रखे और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले?'' (पद 8)।

क्षमा : (अध्याय 7)

इस्राएल नैतिक रूप से पतित हो चुका था परन्तु भविष्यद्वक्ता उनके साथ खड़े होकर उनके लिए परमेश्वर से विनती करता है। (पद 7)।

अंतत: परमेश्वर अपने लोगों को बचाएगा और उसके शत्रु लज्जित होंगे। यरूशलेम फिर बनाया जाएगा और उसकी सीमाएँ बढ़ाई जाएँगी। (11-13)। बंधुए अपनी बंधुआई से लौट आएँगे। आशा की एक किरण के साथ इस पुस्तक का अंत होता है और पद 18-20 में हम परमेश्वर के प्रति स्तुति-गान देखते हैं।

नहूम

नहूम एल्कोश वासी था, जो संभवत: गलील का कफरनहूम ही था। उसके नाम का अर्थ है–''आश्वासन''। निश्चित रूप से वह यहूदा के लिए आश्वासन का संदेश लेकर आया क्योंकि उसकी भविष्यद्वाणी अश्शूरियों के विनाश के विषय में थी। अश्शूर की राजधानी नीनवे थी। आपको याद होगा कि परमेश्वर ने नीनवे के विरुद्ध न्याय का संदेश योना के द्वारा भेजा था। नीनवे नगर के सब लोगों ने मन फिराया था और दण्ड से बच गए थे। लगभग 150 वर्षों के पश्चात् वही अश्शूरी लोग संसार के सबसे दुष्ट जाति बन गए। अत: 661 ई.पू. में उनके विनाश का संदेश परमेश्वर की ओर से नहूम के पास आया। 612 ई.पू. में अश्शूर की राजधानी नीनवे पूरी रीति से नाश किया गया। इस पुस्तक को 3 भागों में बाँटा जा सकता है। न्यायी, न्याय और उद्धार।

1. न्यायी : (1:1-8)

''यहोवा जल उठनेवाला और बदला लेनेवाला और जलजलाहट करने वाला है, यहोवा अपने द्रोहियों से बदला लेता है, परन्तु यहोवा विलम्ब से क्रोध करने वाला और बड़ा शक्तिमान है।'' (पद 2)।

2. न्याय : (पद 8-9)

''परन्तु वह उमड़ती हुई धारा से उसके स्थान का अन्त कर देगा और अपने शत्रुओं को खदेड़कर अन्धकार में भगा देगा।'' इससे हम जो आत्मिक पाठ सीखते हैं वह यह है कि जो न्याय अविश्वासियों पर आनेवाला है वह इससे भी भयंकर होगा। (प्रका. 29:11-15)।

3. उद्धार :

यहोवा यों कहता है, ''चाहे वे सब प्रकार से सामर्थी हों, और बहुत

भी हों, तौभी पूरी रीति से काटे जाएँगे और शून्य हो जाएँगे। मैं ने तुझे दु:ख दिया है, परन्तु फिर न दूँगा। क्योंकि मैं अब उसका (अश्शूरियों) जूआ तेरी गर्दन पर से उतारकर तोड़ डालूँगा, और तेरा बंधन फाड़ डालूँगा।'' (1:12-13)। नीनवे लुप्त हो जाएगा यह यहूदा के लिए खुशखबरी थी। (1:15)। इसका जिक्र पौलुस रोमियों 10:15 में करते हैं-एक सुसमाचार प्रचारक पापियों के लिए शांति का संदेश लाता है।

आगे के अध्यायों में हम नीनवे के संपूर्ण विनाश के बारे में पढ़ते हैं जो वास्तव में पूर्ण हुआ।

प्रश्न :

1. 'मीका' नाम का क्या अर्थ है?
2. यहूदा पर आक्रमण क्यों हुआ?
3. 'मीका' 'यशायाह' का लघु रूप क्यों माना जाता है?
4. मीका 5:2 का क्या महत्व है?
5. पुस्तक का अंत कैसे होता है?
6. 'नहूम' नाम का क्या अर्थ है?
7. भविष्यद्वक्ता परमेश्वर को एक न्यायी के रूप में कैसे दर्शाता है?

पाठ-5

हबक्कूक

भविष्यद्वक्ता और उसका कार्य :

इस भविष्यद्वक्ता के विषय में हमें अधिक जानकारी नहीं मिलती। उसके नाम का अर्थ है–''आलिंगन करना''। इस पुस्तक में दिया गया परमेश्वर का संदेश अति महत्वपूर्ण है। 3:19 में हम देखते हैं कि हबक्कूक एक भविष्यद्वक्ता होने के साथ-साथ एक कवि और संगीतकार भी था। राजा योशिय्याह के राज्य के अंतिम दिनों में उसने भविष्यद्वाणी की।

यह भविष्यद्वक्ता अक्सर ''सुधार का पिता'' भी कहलाता है, क्योंकि उसने धर्मी ठहराए जाने के सिद्धान्त का आह्वान किया था, और यही धर्म-सुधार का भी मुख्य विषय था। रोमियों और गलातियों की पत्रियों में पौलुस इसकी व्याख्या करते हुए हबक्कूक के विषय में कहते हैं। (हब. 2:4; रोमि. 1:17; गला. 3:11; इब्रा. 10:38)। यद्यपि हबक्कूक को बहुत सी कठिनाइयों और विरोध का सामना करना पड़ा फिर भी परमेश्वर के समीप रहा। उसने प्रार्थना की और उसके उत्तर की प्रतीक्षा की। यह पुस्तक परमेश्वर से उसके वार्तालाप का वर्णन करता है। इस पुस्तक को हम 3 भागों में विभाजित कर सकते हैं–1. परमेश्वर के साथ पहला वार्तालाप 2. परमेश्वर के साथ दूसरा वार्तालाप 3. स्तुति गान।

1. पहला वार्तालाप : (अध्याय 1:1-12)

भविष्यद्वक्ता लोगों में अनर्थ के काम और उपद्रव देखता है। वह परमेश्वर से प्रार्थना करता है, परन्तु उसे कुछ उत्तर नहीं मिलता। इसलिए वह कहता है ''लूट-पाट और उपद्रव होते रहते हैं और न्याय का खून हो रहा है।'' तब परमेश्वर कहते हैं कि क्रूर जाति के कसदियों द्वारा उन्हें दण्ड दिया जाएगा।

दूसरा वार्तालाप : (1:12-2:20)

अपने दूसरे वार्तालाप में हबक्कूक परमेश्वर से कहता है कि क्या दुष्ट इस्राएल को दण्ड देने के लिए कसादियों का उपयोग करना सही है, क्योंकि वे तो और भी अधिक दुष्ट हैं। वह अपने प्रश्न के उत्तर की प्रतीक्षा करता रहता है। (2:1)। तब यहोवा ने उसे उत्तर देकर कहा, ''दर्शन की बातें लिख दे क्योंकि दर्शन की बातें नियत समय में पूरी होने वाली हैं। चाहे इसमें विलम्ब हो, तौभी वह पूरी होगी।'' (2-3)

भविष्यद्वक्ता का स्तुति गीत : (अध्याय 3)

भविष्यद्वक्ता को अपनी सभी प्रार्थनाओं का उत्तर प्राप्त हो गया। इस कारण वह परमेश्वर की स्तुति करता है। ''उसका तेज आकाश पर छाया हुआ है, और पृथ्वी उसकी स्तुति से परिपूर्ण हो गई है।'' (पद 3)। ''चाहे अंजीर के वृक्षों में फूल न लगें, और न दाखलताओं में फल लगें, तौभी मैं यहोवा के कारण आनंदित और मगन रहूँगा। और अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर के द्वारा अति प्रसन्न रहूँगा।'' (भजन 4:7 भी पढ़ें)।

सपन्याह

भविष्यद्वक्ता : सपन्याह राजा हिजकिय्याह के परिवार से था। यहूदा के राजा योशिय्याह के दिनों में उसने भविष्यद्वाणी की। उसके नाम का अर्थ है–''परमेश्वर के द्वारा आश्रय दिया गया।''

उसका कार्य : भविष्यद्वक्ता के सेवाकाल में थोड़ी सी जागृति तो आई परन्तु शीघ्र ही उनका नैतिक पतन हो गया और राजा नबूकद्नेस्सर के आक्रमण के द्वारा परमेश्वर ने उन्हें दण्ड दिया। परमेश्वर के लोगों को बन्धुआई में बेबीलोन जाना पड़ा।

तीन भविष्यद्वाणियाँ

1. परमेश्वर के जलन की आग = इस्राएल के प्रति : (1:18)

अध्याय 1:1-18 में भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के जलन की उस आग

के विषय में कहता है, जिसके द्वारा पूरी पृथ्वी भस्म हो जाएगी। अतः ''परमेश्वर यहोवा के सामने शान्त रहो। क्योंकि यहोवा का दिन निकट है।'' (पद 7)। भविष्यद्वक्ता स्पष्ट कहता है कि दुष्ट अपना दण्ड पाएँगे।

2. परमेश्वर के जलन की आग = समस्त संसार के प्रति :

जब इस्राएल परमेश्वर से दूर भटककर अन्य देवताओं की उपासना करने लगा तो परमेश्वर के लिए यह आवश्यक था कि अन्यजातियों के द्वारा उन्हें दण्ड दें। वैसे ही दुष्ट अन्यजातियों को भी दण्ड देना आवश्यक था। मोआबियों और अम्मोनियों के विषय में परमेश्वर की योजना स्पष्ट थी। परमेश्वर कहते हैं कि ''मैं ने यह ठान लिया है कि जाति-जाति के और राज्य-राज्य के लोगों को मैं इकट्ठा करूँ कि उन पर अपने क्रोध की आग पूरी रीति से भड़काऊँ, क्योंकि सारी पृथ्वी मेरी जलन की आग से भस्म हो जाएगी।'' (3:8)।

3. परमेश्वर के जलन की भयंकर आग का बुझना : (3:9)

परमेश्वर का न्याय लोगों में पश्चाताप लाया। मन फिराने वाले को परमेश्वर क्षमा करते हैं। ''उस समय मैं देश-देश के लोगों से एक नई और शुद्ध भाषा बुलवाऊँगा, कि वे सब के सब यहोवा से प्रार्थना करें, और एक मन से उसकी सेवा करें।'' (पद 9)।

सपन्याह परमेश्वर के लोगों के भविष्य के विषय में कहता है, ''इस्राएल के बचे हुए लोग न तो कुटिलता करेंगे और न झूठ बोलेंगे, और न उनके मुँह से छल की बातें निकलेंगी। वे चरेंगे और विश्राम करेंगे, और कोई उनको डरानेवाला न होगा।'' (3:13)। अतः ''हे सिय्योन ऊँचे स्वर से गा, हे इस्राएल जय जयकार कर। हे यरूशलेम अपने संपूर्ण मन से आनंद कर और प्रसन्न हो।'' (3:14)।

प्रश्न :

1. हबक्कूक 'सुधार का पिता' क्यों कहलाता है?
2. हबक्कूक किस बात की प्रतीक्षा करता रहा?

3. वह परमेश्वर की उपस्थिति में कैसे आनंदित हुआ?
4. 'सपन्याह' नाम का क्या अर्थ है?
5. परमेश्वर के जलन की आग किन-किन पर प्रकट हुई?
6. उस आग के बुझने का क्या परिणाम हुआ?

पाठ–6

होशे

होशे के पिता का नाम बेरी था। उसने यहूदा के राजा उजिजयाह, योताम, आहाज और हिजकिय्याह के दिनों में और इस्राएल के राजा यारोबाम के दिनों में भविष्यद्वाणी की। इसका अर्थ यह है कि वह यशायाह का समकालीन था। उसने लगभग 50 वर्षों तक भविष्यद्वाणी की। इसे हम तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं–

1. लोगों का विद्रोह (अध्याय 1–5)
2. लोगों की वापसी (अध्याय 6–13)
3. लोगों का आनंद (अध्याय 14)

1. लोगों का विद्रोह : (अध्याय 1–5)

होशे नाम का अर्थ है–उद्धार। यह उस सत्य की ओर इंगित करता है कि होशे उन लोगों के लिए उद्धार का संदेश लाया जो नैतिक पतन में जी रहे थे। उसने बहुत ही कठिन समयों में अपना सेवा कार्य किया। कई बार लोगों ने उसे तुच्छ जाना और उसकी उपेक्षा की। तुलना की जाए तो यहूदा के राजा इस्राएल के राजाओं की तरह परमेश्वर से दूर नहीं गए। फिर भी यहूदा के राजाओं के समय परमेश्वर के लोग बुरी तरह भटक गए और मूर्तिपूजा और दुष्टता में डूब गए। फिर भी यह अद्‌भुत है कि हमारा परमेश्वर दयालु है और अपने लोगों पर दया करके उन्हें बचाने और वापस लाने के लिए अपने भविष्यद्वक्ताओं को उनके पास भेजता है।

2. लोगों की वापसी (अध्याय 6–13)

भविष्यद्वाणी की इस पुस्तक के पहले पाँच अध्यायों में हम देख सकते हैं कि परमेश्वर उन भटके हुए लोगों को अपने पास वापस लाने

का प्रयत्न करते हैं। तब वे कहते हैं, ''चलो हम यहोवा की ओर फिरें, क्योंकि उसी ने फाड़ा और वही चंगा भी करेगा; उसी ने मारा और वही हमारे घावों पर पट्टी बाँधेगा।'' (6:1)। प्रत्युत्तर में परमेश्वर कहते हैं, ''मैं बलिदान से नहीं, स्थिर प्रेम ही से प्रसन्न होता हूँ और होमबलियों से अधिक यह चाहता हूँ कि लोग परमेश्वर का ज्ञान रखें।'' (6:6) हम में से हर एक को यह सोचना चाहिए कि क्या हम उस प्रेम करने वाले परमेश्वर से भटक जाते हैं या स्थिर प्रेम करते हैं।

3. लोगों का आनंद (अध्याय 14)

अध्याय 14 में हम उन लोगों को देखते हैं जो परमेश्वर के पास वापस लौट आए। वे लोग परमेश्वर में आनंदित हैं। परमेश्वर ने उनसे बहुतायत से प्रेम किया और उन्हें समृद्ध किया। आरंभ के पहले तेरह अध्यायों में हम देखते हैं कि भविष्यद्वक्ता परमेश्वर की तरफ से लोगों से बातें करता है। अंत में लोगों को परमेश्वर के मार्ग समझ में आ गए। अत: लोगों के पास अब आनंद मनाने का कारण था। इस भविष्यद्वाणी का अंत आश्वासन के वचनों के साथ होता है, ''जो बुद्धिमान हो वही इन बातों को समझेगा, क्योंकि यहोवा के मार्ग सीधे हैं, और धर्मी उनमें चलते रहेंगे।'' (14:9)।

प्रश्न :

1. होशे किसका समकालीन था?
2. होशे के समय में परमेश्वर के लोगों की क्या दशा थी?
3. होशे का संदेश क्या था?
4. होशे नाम का क्या अर्थ है?
5. पश्चाताप करके परमेश्वर के पास लौट आए लोगों को क्या मिला?

पाठ–7

आमोस

आमोस भविष्यद्वक्ता एक साधारण सा चरवाहा था। (7:14)। यद्यपि वह यहूदा से था, परन्तु उसने इस्राएल के विरुद्ध भविष्यद्वाणी की। उसके नाम का अर्थ है–परिचारक अथवा संदेशवाहक। अपने नाम के अनुरूप ही उसने परमेश्वर के संदेश को लोगों तक पहुँचाया।

उसका संदेश :

आमोस ने न्याय के विषय में भविष्यद्वाणी की। जो लोग ऐशो आराम और बहुतायत में जी रहे थे उनको एक कठोर सत्य का संदेश सुनाया। लोगों के पापों के कारण यह दण्ड समस्त राष्ट्र पर आया। पद 1:1 में हम भूकम्प के विषय में पढ़ते हैं जो उस न्याय का हिस्सा था। जकर्याह भविष्यद्वक्ता उस भूकम्प के विषय में कहता है कि वह इतना भयंकर होगा कि बहुत समय तक याद रहेगा। (जक. 14:5)।

इस पुस्तक को हक 5 भागों में बाँट सकते हैं–

1. पड़ोसी राष्ट्रों पर न्याय (1:2–2:3)
2. इस्राएल और यहूदा पर न्याय (2:4–16)
3. इस्राएल के विरुद्ध तीन बातें (अध्याय 3–6)
4. इस्राएल के विषय में दर्शन (7:1–9:10)
5. इस्राएल की पुनः स्थापना (9:11–15)

1. पड़ोसी राष्ट्रों पर न्याय :

अराम (1:3–5), पलिश्तिया (1:6–8), सोर (1:9–10), एदोम (1:11–12), अम्मोन (1:13–15), मोआब (2:1–3) इन राष्ट्रों पर परमेश्वर का न्याय सुनाया गया।

2. इस्राएल और यहूदा पर न्याय :

पद 4-5 में हम देखते हैं कि परमेश्वर यहूदा पर अपना क्रोध उंडेल रहे हैं क्योंकि उन्होंने मूर्तियों की आराधना की। पद 6-8 में हम देखते हैं कि इस्राएल के पाप के कारण परमेश्वर उनका भी न्याय चुका रहे हैं। इस्राएलियों को छुड़ाने के लिए परमेश्वर ने अम्मोरियों से जो किया यह इस्राएल के लिए एक चेतावनी होनी चाहिए थी। परन्तु उन्होंने ''नाज़ीरों को दाखमधु पिलाया और नबियों को आज्ञा दी कि भविष्यद्वाणी न करें।'' (पद 12)।

3. इस्राएल के विरुद्ध तीन बातें :

इस्राएल के विरुद्ध तीन बातें इस चेतावनी के साथ आरंभ होती हैं, ''हे इस्राएलियो, यह वचन सुनो जो यहोवा ने तुम्हारे विषय में कहा है।'' (पद 1)।

a. पहली बात : (अध्याय 3:1-15) : परमेश्वर के चुने हुए लोग इस्राएली दंगा करने लगे और अपने ही जाति भाइयों को कष्ट देने लगे। परमेश्वर ने घोषणा की कि यद्यपि वे समृद्ध और सामर्थी हैं, तौभी शत्रु उन पर टूट पड़ेगा और नाश कर देगा।

b. दूसरी बात : (अध्याय 4:1-13) : सामरिया की स्त्रियाँ गरीबों और ज़रूरतमंदों पर अत्यंत अत्याचार कर रही हैं। वे अन्य देवताओं की उपासना कर रही हैं और साथ ही साथ बेतेल में यहोवा के लिए बलिदान भी चढ़ाती हैं। परिणामस्वरूप देश में अकाल पड़ गया (पद 4:9)। परमेश्वर कहते हैं कि फिर भी वे यहोवा परमेश्वर की ओर नहीं फिरे। (पद 9, 11) अंत में परमेश्वर उन्हें मन फिराव का एक और मौका देते हैं (पद 12) परमेश्वर उन्हें कठोर चेतावनी देते हैं, ''हे इस्राएल, अपने परमेश्वर के सामने आने के लिए तैयार हो जा।''

c. तीसरी बात : (अध्याय 5, 6) : यहाँ भविष्यद्वक्ता इस्राएल राष्ट्र के पतन और नाश के विषय में उनको बताता है। (पद 5:1) और अपने आह्वान को दोहराता है, ''यहोवा की खोज करो तो जीवित रहोगे।''

(पद 6) ''बुराई से बैर और भलाई से प्रीति रखो, और फाटक में न्याय को स्थिर करो।'' (पद 15)। परन्तु लोग परमेश्वर को बलिदान चढ़ाते रहे और अधर्म में बने रहे। परमेश्वर उनसे कहते हैं, ''चाहे तुम मेरे लिए होमबलि और अन्नबलि चढ़ाओ, तौभी मैं प्रसन्न न होऊँगा।'' (पद 22)। अतः भविष्यद्वक्ता उनसे कहता है-''इस कारण सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, हे इस्राएल के घराने, देख, मैं तुम्हारे विरुद्ध एक ऐसी जाति खड़ी करूँगा, जो हमात की घाटी से लेकर अराबा की नदी तक तुमको संकट में डालेगी।'' (6:14)।

4. इस्राएल के विषय में दर्शन (7:1-9:10)

टिड्डियों और आग के दर्शन के द्वारा परमेश्वर ने इस्राएल को नाश करने की अपनी योजना को प्रकट किया था। भविष्यद्वक्ता ने प्रार्थना की कि उनको क्षमा किया जाए, और परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी। परन्तु उसके बाद के दर्शनों के द्वारा परमेश्वर ने यह प्रकट किया कि उन्हें कठोर दंड दिया जाएगा। तब अमस्याह याजक ने आमोस से कहा, ''हे दर्शी, यहाँ से निकलकर यहूदा देश में भाग जा, और वहीं रोटी खाया कर, और वहीं भविष्यद्वाणी किया कर।'' (पद 12)। इस प्रकार अमस्याह याजक ने परमेश्वर को और उसके भविष्यद्वक्ता को तुच्छ जाना। उसे इसका जो दण्ड मिला वह पद 17 में हम पढ़ते हैं।

5. इस्राएल की पुनः स्थापना (9:11-15)

अंततः भविष्यद्वक्ता आमोस के द्वारा परमेश्वर यह प्रतिज्ञा करते हैं कि वह इस्राएल को पूरी तरह से नष्ट नहीं करेंगे (9:8)। इस प्रकार भविष्यद्वक्ता हमें संकेत देता है कि प्रभु के दोबारा आगमन से पहले इस्राएल की पुनःस्थापना होगी। ''मैं उन्हें उन्हीं की भूमि में बोऊँगा, और वे अपनी भूमि में से जो मैं ने उन्हें दी है, फिर कभी उखाड़े न जाएँगे। तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का यही वचन है।'' (पद 9:15)। यद्यपि यह असंभव प्रतीत होता है, परन्तु द्वितीय महायुद्ध से इस्राएल के इतिहास की घटनाएँ यह दिखाती हैं कि परमेश्वर अपने समय में इस भविष्यद्वाणी को पूरा करेंगे।

प्रश्न :

1. इस्राएल के विरुद्ध कौन सी तीन बातें परमेश्वर ने कहीं?
2. इस्राएल के विषय में किन दर्शनों के द्वारा परमेश्वर ने अपनी योजना प्रकट की?
3. इस्राएल की पुनःस्थापना के क्या प्रमाण हैं?

पाठ-8

योना

योना का जीवन काल उस समय का था जब यारोबाम द्वितीय ने इस्राएल पर राज्य किया। (2 राजा 14:25)। वह अमित्तै का पुत्र था। योना नाम का अर्थ है ''कबूतर''। परमेश्वर ने योना से कहा कि अश्शूर की राजधानी, नीनवे नगर को जा और उसके विरुद्ध प्रचार कर क्योंकि वहाँ के लोग बहुत ही दुष्ट हैं। यह ध्यान देने योग्य बात है कि वह पहला इस्राएली भविष्यद्वक्ता था जिसे अन्यजातियों के बीच भेजा गया था। इस पुस्तक को हम पाँच भागों में बाँट सकते हैं–

1. योना की अनाज्ञाकारिता (1:1-3)
2. योना के कारण विपत्ति (1:4-11)
3. परमेश्वर का दंड (1:12-2:10)
4. योना का प्रचार-नीनवे में (3:1-10)
5. योना सबक सीखता है (4:1-11)

1. योना की अनाज्ञाकारिता :

योना को बुलाया गया कि नीनवे को जाकर परमेश्वर के न्याय का प्रचार उन दुष्ट लोगों से करे। परंतु योना वहाँ जाना नहीं चाहता था। नीनवे जो पूर्व दिशा में है, वहाँ जाने के बजाय वह पश्चिम दिशा में तर्शीश को जाने वाले जहाज़ पर चढ़ गया। बाइबल के अधिकतर विद्वानों का मानना है कि यह तर्शीश स्पेन में स्थित है।

2. योना के कारण विपत्ति :

योना यहोवा के सम्मुख से भाग जाने को उठा और तर्शीश जाने वाले एक जहाज़ पर भाड़ा देकर चढ़ गया। परन्तु हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर की दृष्टि से हम बच नहीं सकते (भजन 130:7-12)। योना

जहाज़ के निचले भाग में उतरकर सो गया था और गहरी नींद में सो गया। तब यहोवा ने समुद्र में एक प्रचण्ड आँधी चलाई, यहाँ तक कि जहाज़ टूटने पर था। तब मल्लाह लोग डरकर अपने-अपने देवता की दोहाई देने लगे और जहाज़ में जो व्यापार की सामग्री थी उसे समुद्र में फेंकने लगे कि जहाज़ हल्का हो जाए। माँझी ने योना से कहा, ''तू भारी नींद में पड़ा हुआ क्या कर रहा है? उठ अपने देवता की दोहाई दे।'' तब उन्होंने आपस में कहा, ''आओ, हम चिट्ठी डालकर देख लेते हैं कि यह विपत्ति किसके कारण हम पर पड़ी है।'' तब उन्होंने चिट्ठी डाली और वह योना के नाम पर निकली। उनके पूछने पर योना ने उन्हें सब सच बता दिया और उनसे कहा, ''मुझे उठा कर समुद्र में फेंक दो।'' न चाहते हुए भी उन्होंने योना को समुद्र में फेंक दिया और भयानक लहरें थम गईं।

3. परमेश्वर का दंड :

यहोवा ने एक बड़ा सा मच्छ ठहराया था कि योना को निगल ले, और योना उस महामच्छ के पेट में तीन दिन और तीन रात पड़ा रहा। वहाँ से उसने परमेश्वर से प्रार्थना की। हम कभी भी और कहीं भी रहकर प्रार्थना कर सकते हैं। परमेश्वर योना को घुटनों पर लाए, क्योंकि जब उसे प्रार्थना करनी चाहिए थी, तब उसने नहीं की।

4. योना का प्रचार-नीनवे में :

यहोवा ने महामच्छ को आज्ञा दी और उसने योना को स्थल पर उगल दिया। तब यहोवा का वचन दूसरी बार योना के पास पहुँचा, ''उठकर उस बड़े नगर नीनवे को जा, और जो बात मैं तुझ से कहूँगा, उसका उसमें प्रचार कर।'' इस बार योना ने यहोवा की आज्ञा का पालन किया और नीनवे को गया। उसने वहाँ प्रचार किया ''अब से चालीस दिन के बीतने पर नीनवे उलट दिया जाएगा।'' तब नीनवे के मनुष्यों ने परमेश्वर के वचन की प्रतीति की और उपवास का प्रचार किया गया और बड़े से लेकर छोटे तक सभी ने टाट ओढ़ा। जब नीनवे के राजा ने यह सुना तो उसने सिंहासन से उठकर अपने राजकीय वस्त्र उतारे और

टाट ओढ़ लिया और राख पर बैठ गया। तब सब लोगों ने उपवास किया और मन फिराया और परमेश्वर से प्रार्थना की। जब परमेश्वर ने उनके कामों को देखा कि वे कुमार्ग से फिर रहे हैं, तब परमेश्वर ने अपना निर्णय बदल दिया और उनकी जो हानि करने की ठानी थी, उसको न किया।

5. योना सबक सीखता है :

परमेश्वर की यह बात योना को बुरी लगी। उसने यहोवा से यह कहकर प्रार्थना की, ''हे यहोवा, जब मैं अपने देश में था, तब क्या मैं यही बात न कहता था? इसी कारण मैं तर्शीश को भाग जाना चाहता था। मैं जानता था कि तू अनुग्रहकारी और दयालु है। इसलिए अब हे यहोवा, मेरा प्राण ले ले। क्योंकि मेरे लिए जीवित रहने से मरना ही भला है।'' यहोवा ने योना से पूछा, ''तेरा जो क्रोध भड़का है क्या वह उचित है?'' तब योना उस नगर से निकलकर उसकी पूरब की ओर बैठ गया। और वहाँ एक छप्पर बनाकर उसकी छाया में बैठकर देखने लगा कि नीनवे का क्या होगा।

तब परमेश्वर ने एक रेंड़ का पेड़ उगाकर ऐसा बढ़ाया कि योना के सिर पर छाया हो, जिससे उसका दुःख दूर हो। योना उस रेंड़ के पेड़ के कारण आनंदित हुआ। परन्तु परमेश्वर योना को एक सबक सिखाना चाहते थे। सवेरे जब पौ फटने लगी, तब परमेश्वर ने एक कीड़े को भेजा, जिसने रेंड़ के पेड़ को ऐसा काटा कि वह सूख गया। जब सूर्य उगा, तब परमेश्वर ने पुरवाई बहाकर लू चलाई, और धूप योना के सिर पर ऐसी लगी कि वह मूर्छित होने लगा। और उसने यह कहकर मृत्यु माँगी, ''मेरे लिए जीवित रहने से मरना ही अच्छा है।'' परमेश्वर ने योना से कहा, ''तेरा क्रोध जो रेंड़ के पेड़ के कारण भड़का है, क्या वह उचित है?'' योना ने कहा, ''हाँ वह उचित है।'' परमेश्वर ने उससे कहा, ''जिस रेंड़ के पेड़ के लिए तू ने कुछ परिश्रम नहीं किया, न उसको बढ़ाया, जो एक ही रात में हुआ और एक ही रात में नष्ट भी हुआ, उस पर तू ने तरस खाई है। फिर यह बड़ा नगर नीनवे, जिस में

एक लाख बीस हज़ार से अधिक मनुष्य हैं, जो अपने दाहिने बाएँ हाथों का भेद नहीं पहचानते, और बहुत से घरेलू पशु भी उसमें रहते हैं, तो क्या मैं उस पर तरस न खाऊँ?''

योना एक महान भविष्यद्वक्ता था। प्रभु यीशु ने स्वयं उसके विषय में मत्ती 12, 39, 41 में उल्लेख किया। अपने गाड़े जाने के विषय में भी प्रभु ने योना के तीन दिन रात महामच्छ के पेट में रहने से तुलना की थी।

प्रश्न :

1. अन्यजातियों के पास भेजा गया पहला इस्राएली भविष्यद्वक्ता कौन था?
2. उसने कैसे अनाज्ञाकारिता दिखाई?
3. तर्शीश कहाँ पर स्थित है?
4. योना महामच्छ के पेट में कैसे पहुँचा?
5. नीनवे के लोगों के लिए उसका संदेश क्या था?
6. नीनवे के लोगों का प्रत्युत्तर क्या था?
7. परमेश्वर ने योना को क्या सिखाया और कैसे?

पाठ-9

यहेजकेल

यहेजकेल ऐसा भविष्यद्वक्ता था जिसने बेबीलोन में बँधुआई में रहने वाले लोगों के बीच अपना संदेश दिया था। उसने यहोवा की आवाज़ और उपस्थिति का प्रतिनिधित्व उन लोगों के बीच में किया जिनके पास न पवित्र नगर, न मंदिर और न ही राष्ट्रीय पहचान थी। यरूशलेम में यिर्मयाह अपने सेवा काल के अंत में लोगों को आनेवाले विनाश की चेतावनी दे रहा था, उस समय यहेजकेल बेबीलोन में बँधुआई में जी रहा था। भविष्यद्वक्ता के विषय में तीन तथ्य हमें उसके महत्वपूर्ण कार्य को समझने में सहायक होंगे जो उसने बेबीलोन के बँधुआई में पड़े लोगों के जीवन में किया।

597 ई.पू. में यहेजकेल को बेबीलोन ले जाया गया :

586 ई.पू. में नबूकद्नेस्सर की सेना ने यरूशलेम को पूरी तरह तबाह कर दिया था परन्तु उसके पहले दो बार 605 ई.पू. और 597 ई.पू. में लोगों को बँधुआई में ले जाया गया था। (2 राजा 24:8-17) यहेजकेल 1:1-3 के अनुसार वह 25 वर्ष का था जब 597 ई.पू. में वह बँधुआई में गया था और 30 वर्ष की उम्र में परमेश्वर ने उसे भविष्यद्वाणी करने के लिए बुलाया।

यहेजकेल याजकों के परिवार से था। याजक लोग परमेश्वर की सेवा 30 वर्ष की उम्र में ही आरंभ करते थे। (गिनती 4:3)। परमेश्वर का मंदिर न होने पर भी परमेश्वर ने उसे अपनी सेवा के लिए बुलाया ताकि वह परमेश्वर के वचनों का प्रचार करे। यहेजकेल नाम का अर्थ है–''परमेश्वर सामर्थ देते हैं।''

परमेश्वर ने यहेजकेल को गूँगा कर दिया था परन्तु जब परमेश्वर की ओर से संदेश दिया जाना होता था तब ही वह बोल पाता था। यह

स्थिति सात वर्षों तक यरूशलेम के संपूर्ण विनाश तक बनी रही। यहेजकेल के लिए सबसे दु:खद पाठ अपनी पत्नी को खो देना था। (24:16)। और उसे रोने की अनुमति भी नहीं थी। यह बँधुआई में पड़े लोगों के लिए निर्देश की तरह था कि वे भी अपनी ''आँखों की प्रिय'' यरूशलेम के मंदिर की आनेवाली तबाही पर न रोएं।

परमेश्वर का हाथ यहेजकेल पर था :

परमेश्वर का सामर्थी हाथ यहेजकेल पर था। यह आवश्यक था क्योंकि बँधुआई में पड़े लोगों के पास न मंदिर था न याजक थे और न बलिदान जिसके द्वारा परमेश्वर की महिमा प्रकट होती। अत: परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ता को चुना कि वह परमेश्वर की पवित्रता का प्रचार कर सके।

विषय वस्तु का अवलोकन :

यिर्मयाह की तरह यहेजकेल भी यहूदा पर और राष्ट्रों पर परमेश्वर के न्याय और अपने लोगों की पुन:स्थापना का वर्णन करता है। अध्याय 1-3 बताता है कि परमेश्वर भविष्यद्वक्ता को अपने कार्य के लिए अलग करते हैं। अध्याय 4:23 में यहूदा के पाप और उसके दण्ड का वर्णन है। पद 25-32 में अन्यजाति राष्ट्रों पर आने वाले न्याय का वर्णन है। अध्याय 33-48 में परमेश्वर की महिमा की वापसी और अपने लोगों के साथ अनंत काल की उपस्थिति की भविष्यद्वाणी की गई है।

यहेजकेल की बुलाहट :

यहेजकेल बन्दियों के बीच कबार नदी के तट पर था जब उसने देखा कि स्वर्ग खुल गया और उसने परमेश्वर के दर्शन पाए। उसने देखा कि उत्तर दिशा से बड़ी घटा और लहराती हुई आग सहित बड़ी आँधी आ रही है। उसके बीच से चार जीवधारियों के समान कुछ निकले। उनका रूप मनुष्य के समान था। उनमें से हर एक के चार-चार मुँह और चार-चार पंख थे। पंखों के नीचे मनुष्यों के से हाथ थे। भूमि पर उनके पास चारों मुखों की गिनती के अनुसार एक-एक पहिया था।

पहियों के घेरों में चारों ओर आँखें ही आँखें भरी हुई थीं। जब जीवधारी चलते थे, तब पहिए भी उनके साथ चलते थे। उनका चलना-फिरना बिजली का सा था। (1:14) इस प्रकार यशायाह और यिर्मयाह की तरह ही यहेजकेल को भी सेवाकार्य के लिए बुलाए जाने से पहले परमेश्वर की महिमा और भव्यता दिखाकर तैयार किया गया।

परमेश्वर ने यहेजकेल को अलग किया कि बलवा करने वाले इस्राएल के घराने को परमेश्वर का संदेश सुनाए। (अध्याय 2) परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्ता को अपने आत्मा की सामर्थ दी, अपने वचन से भरा और विश्वासयोग्यता के साथ उसे संदेश सुनाने की आज्ञा दी और उसे उनके बीच में भेजा। (अध्याय 3)।

यहूदा के विरुद्ध न्याय :

चिह्नों और दृष्टांतों के द्वारा यहेजकेल ने यहूदा पर आने वाले परमेश्वर के न्याय के विषय में लोगों को बताया। यद्यपि लोग बँधुआई में चले गए थे फिर भी परमेश्वर चाहते थे कि वे जानें कि यरूशलेम के विनाश का उत्तरदायित्व उन पर है। परमेश्वर की आज्ञानुसार यहेजकेल ने एक ईंट पर यरूशलेम का चित्र बनाया। फिर उसकी घेराबन्दी करके शहर की होने वाली स्थिति के विषय में बताया। (अध्याय 4)। उसने बाल और दाढ़ी के बाल मूँड़ दिए और तौलने का काँटा लेकर उसके हिस्से किए और नगर के भीतर एक तिहाई आग में डालकर जला दिया और एक तिहाई लेकर चारों ओर तलवार से मारा और एक तिहाई को हवा में उड़ा दिया। उनमें से थोड़े से बाल लेकर कपड़े की छोर से बाँधा और कुछ को लेकर आग में डाल दिया। ये सब कुछ यरूशलेम पर परमेश्वर के क्रोध के प्रतीक के रूप में था। (5:2-4)।

अध्याय 11 में हम बँधुआई में गए लोगों से परमेश्वर की प्रतिज्ञा के विषय में पढ़ते हैं। ''मैं उनका हृदय एक कर दूँगा और उनके भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा, और पत्थर का हृदय निकालकर उन्हें माँस का हृदय दूँगा, ताकि वे मेरी विधियों पर चल सकें और मेरे नियमों को मानें तब वे मेरी प्रजा ठहरेंगे और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा। (11:19-20)।

अध्याय 12-24 में यहूदा पर आने वाले न्याय की सीमा और उसके कारणों का वर्णन किया गया है। यहूदा ने विश्वासघात किया परन्तु परमेश्वर वायदा करते हैं कि उसके न्याय के बाद उसे पुन:स्थापित करेंगे। क्योंकि परमेश्वर कहते हैं, ''क्या मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न होता हूँ? क्या मैं इससे प्रसन्न नहीं होता कि वह अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे?'' (18:23)। ''क्योंकि प्रभु यहोवा की यह वाणी है कि जो मरे उसके मरने से मैं प्रसन्न नहीं होता, इसलिए पश्चाताप करो तो तुम जीवित रहोगे।'' (18:32)।

अन्यजातियों पर न्याय : (अध्याय 25-32)

अम्मोन, मोआब, एदोम और पलिश्तिया इस्राएल के पड़ोसी और पुराने शत्रु थे। (अध्याय 25)। परमेश्वर ने उन्हें भी चेतावनी दी कि उनका भी न्याय शीघ्र ही होने वाला है। तीन अध्याय 26-28 में सोर के विरुद्ध भविष्यद्वाणी की गई है। परमेश्वर ने यहेजकेल से कहा, ''इस्राएल के घराने के चारों ओर की जितनी जातियाँ उनके साथ अभिमान का बर्ताव करती हैं, उनमें से कोई उनका चुभनेवाला काँटा या बेधनेवाला शूल फिर न ठहरेगी, तब वे जान लेंगे कि मैं परमेश्वर यहोवा हूँ।'' (28:24)। अध्याय 29-32 में मिस्र के विरुद्ध भविष्यद्वाणी की गई है। ''वह सब राज्यों में छोटा होगा, क्योंकि मैं मिस्रियों को ऐसा घटाऊँगा कि वे जाति-जाति पर फिर प्रभुता न करने पाएँगे। वह फिर इस्राएल के घराने के भरोसे का कारण न होगा। तब वे जान लेंगे कि मैं परमेश्वर यहोवा हूँ।'' (29:15:16)।

परमेश्वर के लोगों की पुन:स्थापना : (अध्याय 33-48)

परमेश्वर की ओर से नियुक्त पहरेदार की तरह यहेजकेल ने इस्राएली लोगों के प्राणों का बोझ अपने कंधों पर उठाया। उसके ऊपर उत्तरदायित्व था कि वह परमेश्वर के लोगों को उनके पाप के विषय में और आने वाले न्याय के विषय में चेतावनी दे। (अध्याय 33) परमेश्वर का न्याय एक वास्तविकता तब बनी जब नबूकद्नेस्सर ने यरूशलेम का विनाश किया। तब परमेश्वर ने उनकी पुन:स्थापना का वायदा देकर उन्हें आश्वासन दिया।

यरूशलेम के विनाश का समाचार सुनने के पश्चात् उसके आश्वासन का पहला संदेश था कि परमेश्वर स्वयं इस्राएल का महान चरवाहा होगा। क्योंकि जिन चरवाहों को परमेश्वर ने अपने लोगों के ऊपर ठहराया था उन्होंने अपने ही लाभ के लिए कार्य किया और लोगों की परवाह नहीं की। (34:1-10)। परमेश्वर ने वायदा किया कि वे स्वयं ही अपने लोगों की सुधि लेंगे। (34:11-16)। परमेश्वर कहते हैं, ''मैं तुमको एक नया मन दूँगा और तुम्हारे भीतर एक नई आत्मा उत्पन्न करूँगा और तुम्हारी देह में से पत्थर का दिल निकालकर तुम को माँस का हृदय दूँगा।'' (36:26)।

अध्याय 37 में यहेजकेल के दर्शन के अनुसार जिस प्रकार उन सूखी हड्डियों पर माँस चढ़ गया और चमड़े से ढँप गया और साँस आ गई और वह जीवित मनुष्य बन गए उसी प्रकार परमेश्वर अपने लोगों को फिर से जीवित और स्वस्थ करने का वायदा करते हैं। (यूहन्ना 10:10)। में बहुतायत के जीवन का वायदा दिया गया है।

अध्याय 40-48 में पुनःस्थापना का चित्रण और भावी मंदिर, याजकों और बलिदान का विस्तृत वर्णन किया गया है। परमेश्वर के लोगों के लिए नए शहर और नई भूमि का भी वायदा दिया गया है।

यहेजकेल के दर्शन का आरंभ बेबीलोन की समतल भूमि से आरंभ होता है, परन्तु परमेश्वर का नए मंदिर में महिमा के साथ वापसी के दर्शन से अंत होता है। परमेश्वर अपने लोगों के मध्य सदा सर्वदा के लिए! ''उस दिन से आगे को नगर का नाम 'यहोवा शाम्मा' रहेगा।'' (48:35)।

प्रश्न :

1. यहेजकेल को लोगों के लिए परमेश्वर का संदेश कहाँ पर मिला?
2. भविष्यद्वक्ता ने पहला दर्शन कौन सा देखा? वह क्या दर्शाता है?
3. परमेश्वर ने मंदिर से अपनी महिमा को क्यों हटा लिया था?
4. इस्राएल के पड़ोसी और पुराने शत्रु कौन-कौन थे?
5. यहेजकेल ने सूखी हड्डियों के दर्शन में क्या देखा?
6. पुस्तक का अंत विजय के किन शब्दों से होता है?

पाठ–10

हाग्गै

परिचय :

बेबीलोन की बँधुआई के दौरान हाग्गै का जन्म हुआ। फारस के राजा कुस्त्रू ने बेबीलोन पर चढ़ाई करके उसे कब्जे में कर लिया। उसने सभी बंधुओं को वापस अपने-अपने देश जाने की अनुमति दे दी। उसकी आज्ञानुसार (2 इति. 36:22-23; एज्रा 1) यहूदियों का एक झुण्ड वापस यहूदिया को गया और वहाँ बस कर वे परमेश्वर के मंदिर की मरम्मत में लग गए जिसे नबूकद्नेस्सर ने तबाह कर दिया था। तुरंत ही इस्राएलियों के शत्रु उठ खड़े हुए और उनके निर्माण कार्य को बलपूर्वक रोक दिया। इस प्रकार 15 वर्ष बीत गए। इसी दौरान परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता हाग्गै ने भविष्यद्वाणी की ताकि लोगों को परमेश्वर के मंदिर के पुनर्निर्माण कार्य के लिए प्रोत्साहित करे। (एज्रा 5:1)।

हाग्गै नाम का अर्थ है–पर्व। यह उन पर्वों का प्रतीक है जो परमेश्वर के लोगों के जीवन में होने वाला था। उसकी भविष्यद्वाणी छोटी थी। वह चार संदेश देता है, जिनमें पहले डाँट लगाता है और फिर प्रोत्साहित करता है। अपने प्रभावशाली संदेश को लोगों के दिलों तक पहुँचाने के लिए वह बार-बार दोहराता है कि ''सेनाओं का यहोवा यों कहता है'' (हाग्गै 1:2, 5, 7; 2:6, 11)। ''अपनी चाल चलन पर ध्यान करो'' (हाग्गै 1:5, 7)। ''मैं तुम्हारे संग हूँ'' (हाग्गै 1:13, 2:4) और ''हियाव बाँध'' (हाग्गै 2:4 तीन बार)

इस पुस्तक के चार भाग हैं–

1. मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए बुलाहट (अध्याय 1)

2. नए मंदिर की महिमा (अध्याय 2:1-9)

3. पवित्रता और आशीष के वायदे के विषय में एक सिद्धान्त (अध्याय 2:10-19)

4. जरुब्बाबेल से विशेष प्रतिज्ञा (अध्याय 2:20-23)।

1. मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए बुलाहट :

इस संदेश की निश्चित तिथि दी गई है। राजा दारा (1) के दूसरे वर्ष के आठवें महीने के पहले दिन यह संदेश दिया गया। (हाग्गै 1:1)। अर्थात् यह दिन 29 अगस्त, 520 ई.पू. है। अन्य भविष्यद्वक्ताओं ने लोगों को संदेश सुनाया परन्तु हाग्गै का संदेश अगुओं, जरुब्बाबेल, जो यहूदा का अधिपति था, और महायाजक यहोशू के लिए था। लोग अपने लिए घरों का निर्माण कर रहे थे परंतु परमेश्वर के भवन का कार्य अधूरा पड़ा था। वह कहता है, ''पहाड़ पर चढ़ जाओ और लकड़ी ले आओ और इस भवन को बनाओ, और मैं उसको देखकर प्रसन्न हूँगा और मेरी महिमा होगी, यहोवा का यही वचन है।'' (पद 8)।

2. नए मंदिर की महिमा :

मंदिर के निर्माण कार्य के प्रति शीघ्र ही लोग आलसी हो गए। अत: सातवें महीने के बीसवें दिन (सितंबर 21, 520 ई.पू.) परमेश्वर का वचन फिर से भविष्यद्वक्ता के पास पहुँचा, ''अब यहोवा की यह वाणी है, हे जरुब्बाबेल, हियाव बाँध और हे यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक, हियाब बाँध, और यहोवा की यह भी वाणी है कि हे देश देश के सब लोगों, हियाब बाँधकर काम करो, क्योंकि मैं तुम्हारे संग हूँ, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है'' (पद 4) ''इस भवन की पिछली महिमा इसकी पहली महिमा से बड़ी होगी।'' (2:5)।

3. पवित्रता और आशीष के वायदे के विषय में एक सिद्धान्त :

दो महीनों के पश्चात् परमेश्वर ने हाग्गै को एक और संदेश दिया। ''सेनाओं का यहोवा यों कहता है : याजकों से इस बात की व्यवस्था पूछ, 'यदि कोई अपने वस्त्र के आँचल में पवित्र माँस बाँधकर, उसी आँचल से रोटी या किसी भी प्रकार के भोजन को छुए, तो क्या वह भोजन पवित्र ठहरेगा?'' याजकों ने उत्तर दिया, ''नहीं।'' फिर हाग्गै ने पूछा, ''यदि कोई व्यक्ति मनुष्य के शव के कारण अशुद्ध होकर ऐसी

किसी वस्तु को छुए, तो क्या वह अशुद्ध ठहरेगी?'' याजकों ने उत्तर दिया कि ''हाँ, अशुद्ध ठहरेगी।'' फिर हाग्गै ने कहा, यहोवा की यही वाणी है, कि मेरी दृष्टि में यह प्रजा और यह जाति वैसी ही है।'' इसका अर्थ यह है कि पवित्र स्थान में कार्य करना उन्हें पवित्र नहीं बनाता है। तथापि, इस संदेश का अंत परमेश्वर एक वायदे के साथ करते हैं, ''परंतु आज के दिन से मैं तुमको आशीष देता रहूँगा।'' (पद 19)।

4. जरुब्बाबेल से विशेष प्रतिज्ञा :

उसी दिन हाग्गै ने परमेश्वर से अंतिम संदेश प्राप्त किया। यह संदेश जरुब्बाबेल के लिए था। ''सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, उस दिन, हे मेरे दास जरुब्बाबेल, मैं तुझे लेकर अंगूठी के समान रखूँगा, यहोवा की यह वाणी है, क्योंकि मैं ने तुझी को चुन लिया है, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।'' (पद 23)।

हाग्गै की भविष्यद्वाणी नए नियम के विश्वासियों के लिए भी मूल्यवान पाठ सिखाती है। ''पहले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।'' (मत्ती 6:33)।

प्रश्न :

1. किस राजा ने बँधुओं को वापस अपने-अपने देश जाने की आज्ञा दी?
2. 'हाग्गै' नाम का क्या अर्थ है?
3. उसने कितने संदेश दिए और किसे दिए?
4. परमेश्वर और मंदिर के प्रति बँधुआई से वापस आए लोगों का क्या रवैया था?
5. जरुब्बाबेल से परमेश्वर की विशेष प्रतिज्ञा क्या थी?
6. इस भविष्यद्वाणी से हम विश्वासी क्या सीखते हैं?

पाठ-11

जकर्याह

परिचय :

जकर्याह एक भविष्यद्वक्ता था जो बेरेक्याह का पुत्र और इद्दो का पोता था। जब हम इन तीनों नामों को मिलाकर उसका अर्थ देखते हैं, तब हमें एक अद्भुत सत्य प्राप्त होता है - ''यहोवा स्मरण रखता है और अपने समय पर आशीष देता है।'' (जकर्याह = यहोवा स्मरण रखता है; बेरेक्याह = यहोवा आशीष देता है; इद्दो = अपने समय पर)। बाइबल में कम से कम 28 लोग हैं जिनका नाम जकर्याह था।

जब हाग्गै बंधुआई से लौट आए लोगों से मंदिर के निर्माण कार्य को जारी रखने की विनती कर रहा था, तब यरूशलेम में जवान जकर्याह ने भविष्यद्वक्ता के रूप में अपना सेवाकार्य आरंभ किया। (जकर्याह 2:4)। जकर्याह का संदेश प्रोत्साहित करने वाला था, जबकि हाग्गै का संदेश फटकार लगाने वाला था। हाग्गै का बोझ था लोगों को निर्माण कार्य के बाहरी कार्य के लिए प्रेरित करना, परन्तु जकर्याह का बोझ था कि उन लोगों में आत्मिक रूप से परिवर्तन हो। आगे जकर्याह इस्राएल के भविष्य के विषय में, अन्यजातियों के विषय में और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के आगमन के विषय में भी भविष्यद्वाणी करते हैं। (जकर्याह 3:8; 9:9; 14:4)।

पहला संदेश (अध्याय 1:1-6) :

उसका पहला संदेश लोगों से परमेश्वर की ओर लौटने का आह्वान था, ताकि परमेश्वर भी उनकी ओर फिरे। जिस प्रकार उनके पूर्वज परमेश्वर से दूर चले गए, उसी प्रकार वे लोग भी परमेश्वर से दूर चले गए थे। यद्यपि वे बंधुआई से लौट आए थे, परन्तु वे पूरे हृदय से परमेश्वर की ओर नहीं लौटे थे। विरोध होने पर उन्होंने मंदिर के निर्माण

का कार्य स्थगित कर दिया था। अतः भविष्यद्वक्ता उस कार्य को फिर से आरंभ करने के लिए उन से विनती कर रहा है।

दूसरा संदेश (अध्याय 1:7- अ. 6) :

इस संदेश में परमेश्वर ने आठ दर्शनों के द्वारा यह प्रकट किया कि परमेश्वर उन लोगों की परवाह करते हैं। उनके कष्टों में परमेश्वर उन के साथ रहेंगे और उन्हें छुड़ाएँगे। पहले दर्शन में प्रजा मेंहदी के पौधों के समान है और परमेश्वर एक लाल घोड़े पर सवार होकर उनकी सुरक्षा करने के लिए आए हैं। अध्याय 2:1 में वह घोषणा करते हैं कि वह इस्राएल को शक्तिशाली शत्रुओं से छुड़ाएँगे और यरूशलेम की सीमाओं को बढ़ाएँगे। परमेश्वर स्वयं उसके चारों ओर आग की शहरपनाह ठहरेंगे। चौथे दर्शन में महायाजक मैले वस्त्र पहने हुए खड़ा था। यह लोगों के नैतिक पतन को चित्रित करता है। शैतान इस्राएल पर दोष लगाता है कि वह याजक के कार्य के लिए अयोग्य है। परमेश्वर शैतान को उत्तर देते हैं कि इस्राएल आग से निकाली हुई लुकटी के समान है। अर्थात् परमेश्वर ने उन्हें बंधुआई से छुड़ा लिया है। (पद 1-3)। परमेश्वर ने महायाजक को शुद्ध पगड़ी और वस्त्र पहिनाए।

पाँचवाँ दर्शन सोने की दीवट का था। दीवट के दोनों तरफ जैतून के दो वृक्ष थे। यह प्रकट करता है कि इस्राएल राष्ट्रों के मध्य में यह सब हुआ "न तो बल से, न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा।" (4:6)। छठवाँ दर्शन एक लिखा हुआ पत्र है जो उड़ रहा है। (5:1) उस पत्र की लम्बाई बीस हाथ की और चौड़ाई दस हाथ की थी। यही नाम तम्बू का है परमेश्वर की लिखी हुई व्यवस्था का उल्लंघन करने वाले पर परमेश्वर के न्याय का यह प्रतीक है।

सातवें दर्शन में एक स्त्री है जो इस्राएल का प्रतीक है। वह एपा के बीच में बैठी है। उसे बाबुल को ले जाया जा रहा है जो मूर्तिपूजा और अन्य पाप का स्थान है। अतः इस दर्शन के द्वारा भी न्याय के बारे में बताया जा रहा है। आठवाँ दर्शन चार रथों का है। ये भी राष्ट्रों पर परमेश्वर के दण्ड का प्रतीक हैं।

यहोशू का राज्याभिषेक (अध्याय 6:11-15) :

महायाजक यहोशू का राज्याभिषेक करने के लिए परमेश्वर जकर्याह को निर्देश देते हैं। यह कार्य इस बात का द्योतक है कि दाऊद के सिंहासन पर विराजमान होने के लिए मसीह यीशु आएँगे जो याजक भी हैं और राजा भी। मसीह के दो विभिन्न आगमन के संदर्भ दिए गए हैं। (अध्याय 9:9 और 10)। ''हे सिय्योन, बहुत ही मगन हो! हे यरूशलेम जयजयकार कर! क्योंकि तेरा राजा तेरे पास आएगा; वह धर्मी और उद्धार पाया हुआ है, वह दीन है, और गदहे पर वरन् गदही के बच्चे पर चढ़ा हुआ आएगा।'' (पद 9:9)। उसके दूसरे आगमन के समय उसका राज्य पृथ्वी के दूर-दूर के देशों तक होगा। (पद 10)। इस्राएल के शत्रु नष्ट किए जाएँगे (पद 11-15)। वे लोग धन्य लोग होंगे (पद 9:16-10:1)। परमेश्वर स्वयं उनका चरवाहा होगा (पद 2-7)। अध्याय 11 में हम दो प्रकार के चरवाहों को देखते हैं-'अच्छा चरवाहा' पद 7 और 'दुष्ट चरवाहा' (ख्रीस्त विरोधी) (पद 14-17)। अध्याय 12-14 में हम यरूशलेम के भविष्य का विवरण पढ़ते हैं। परमेश्वर अपने लोगों के लिए लड़ेगा और उनके लिए शांति स्थापित करेगा (12:1-9)। उसके पश्चात् परमेश्वर अपना आत्मा उन पर उण्डेलेगा। ''मैं दाऊद के घराने और यरूशलेम के निवासियों पर अपना अनुग्रह करने वाली और प्रार्थना सिखाने वाली आत्मा उण्डेलूँगा, तब वे मुझे ताकेंगे, अर्थात् जिसे उन्होंने बेधा है, और उस के लिए ऐसे रोएँगे जैसे एकलौते पुत्र के लिए रोते-पीटते हैं, और ऐसा भारी शोक करेंगे, जैसा पहिलौठे के लिए करते हैं।'' (12:10)। ''उस समय दाऊद के घराने और यरूशलेम के निवासियों के लिए पाप और मलिनता धोने के निमित्त एक बहता हुआ सोता फूटेगा।

(13:1)। अध्याय 13 के पद 7-9 में हमारे प्रभु यीशु के मार डाले जाने और उनके शिष्यों के तितर-बितर हो जाने के विषय में कहा गया है। पद 8-9 में हम उन्हें देखते हैं जो इन क्लेशों में से होकर बच गए। ''उस तिहाई को मैं आग में डालकर ऐसा निर्मल करूँगा, जैसा रूपा निर्मल किया जाता है, और ऐसा जाँचूँगा जैसा सोना जाँचा जाता है। वे

मुझ से प्रार्थना किया करेंगे और मैं उनकी सुनूँगा। मैं उन के विषय में कहूँगा, ''ये मेरी प्रजा हैं'', और वे मेरे विषय में कहेंगे, 'यहोवा हमारा परमेश्वर है'।'' (पद 13:9)।

अध्याय 14 का पद 9 कहता है– ''तब यहोवा सारी पृथ्वी का राजा होगा और उस दिन एक ही यहोवा और उसका नाम भी एक ही माना जाएगा।'' यरूशलेम पर फिर श्राप न होगा और परमेश्वर के लोग सुरक्षित रहेंगे (पद 11)। यहूदी लोगों के साथ मिलकर सारे राष्ट्र यरूशलेम में मसीहा की आराधना करेंगे। संसार एक महिमामय युग में प्रवेश करेगा।

प्रश्न :

1. जकर्याह ने किस स्थान में भविष्यद्वाणी की?
2. हाग्गै की भविष्यद्वाणी और जकर्याह की भविष्यद्वाणियों में क्या अन्तर है?
3. जकर्याह का पहला संदेश परमेश्वर के लोगों के लिए क्या था?
4. भविष्यद्वक्ता को कितने दर्शन मिले?
5. यहोशू का राज्याभिषेक किस बात का प्रतीक है?

पाठ–12

मलाकी

परिचय :

मलाकी नाम का अर्थ है – ''मेरा संदेशवाहक''। मलाकी को नए नियम में अनेक बार उद्धृत किया गया है – (मलाकी 3:1 = मत्ती 11:10, मलाकी 4:5 = मत्ती 17:12 ; मलाकी 3:1 = मरकुस 1:2; मलाकी 4:5 = मरकुस 9:11–12; मलाकी 4:5, 6 = लूका 1:17; मलाकी 1:2–3 = रोमियों 9:13)।

इस पुस्तक में इसके लिखे जाने के समय के विषय में कुछ नहीं कहा गया। परन्तु पद 1:8 में हमें एक संकेत मिलता है जहाँ शब्द ''हाकिम'' (राज्यपाल) आया है। क्योंकि इस शब्द का सामान्य तौर पर फारसी राज्यपालों के लिए ही उपयोग होता था (एस्तेर 3:12) अत: यह स्पष्ट होता है कि यह पुस्तक फारसी शासन के दौरान लिखी गई थी। दारा राजा के शासन काल (ई.पू. 12 मार्च – 516) (एज्रा 6:15) के छठे वर्ष के अदार नाम महीने के तीसरे दिन को मंदिर के निर्माण का कार्य पूरा हुआ। ई.पू. 444 में नहेम्याह की अगुआई में यरूशलेम की शहरपनाह का पुन: निर्माण हुआ। ई.पू. 432 में नहेम्याह वापस फारस चला गया और ई.पू. 425 में वह वापस यरूशलेम आया। ई.पू. 432 से 425 तक मलाकी ने भविष्यद्वाणी की जिस समय नहेम्याह यरूशलेम में नहीं थे। इस्राएली लोगों की नैतिक और आत्मिक दशा बिगड़ गई थी। उन्होंने दशमांश देना बंद कर दिया था इस कारण लेवीयों ने अपना सेवाकार्य छोड़ दिया था (नहेम्याह 13:4–11)। लोग सब्त के विषय में लापरवाह हो गए थे (नहे. 13:15–18)। वे परमेश्वर के प्रेम के प्रति संदेह करने लगे (मलाकी 1:2)। उनकी शिकायत थी कि दुष्टता करने वाले समृद्ध होते जा रहे थे (मलाकी 3:14–15)। ऐसे हालातों में मलाकी ने भविष्यद्वाणी की। परमेश्वर का संदेश लोगों तक पहुँचने पर उन्होंने प्रश्नों के द्वारा अवरोध उत्पन्न किया परन्तु भविष्यद्वक्ता ने उनके

सटीक उत्तर दिए।

पुस्तक की समीक्षा :

परमेश्वर की बड़ी घोषणा के साथ मलाकी का संदेश आरंभ होता है- ''मैं ने तुम से प्रेम किया है।'' (मलाकी 1:2)। यह प्रत्येक विश्वासी के लिए एक चुनौती होना चाहिए। परमेश्वर का प्रेम ही परमेश्वर की सेवा करने का आधार होना चाहिए। मलाकी 1:2-14 इस्राएल के प्रति परमेश्वर के प्रेम का वर्णन करता है। परन्तु वे लंगड़े और रोगी पशुओं का बलिदान चढ़ाकर परमेश्वर का निरादर कर रहे थे।

मलाकी 2:1-16 में याजकों के लिए संदेश है। उन्हें चेतावनी दी गई कि यदि वे अपने मार्गों को बदलेंगे नहीं तो उन पर भयंकर न्याय आएगा। विवाह-विच्छेद और अन्यजाति स्त्रियों से विवाह की भी निंदा की गई है। मलाकी 2:17-3:6 तक भविष्यद्वक्ता आने वाले न्याय के विषय में कहता है। ''तुम लोगों ने अपनी बातों से यहोवा को उकता दिया है। तौभी पूछते हो 'हम ने किस बात में उसे उकता दिया?'' इसमें कि तुम कहते हो 'जो कोई बुरा करता है वह यहोवा की दृष्टि में अच्छा लगता है, और वह ऐसे लोगों से प्रसन्न रहता है,' और यह कि, 'न्यायी परमेश्वर कहाँ है?' (पद 2:17)। तब परमेश्वर उत्तर देते हैं ''देखो, मैं अपने दूत को भेजता हूँ और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा'' (यह दूत यूहन्ना बपतिस्मादाता है)। ''और प्रभु जिसे तुम ढूँढ़ते हो, वह अचानक अपने मन्दिर में आ जाएगा, हाँ वाचा का वह दूत, जिसे तुम चाहते हो, (यह प्रभु यीशु मसीह है)। सुनो वह आता है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।'' (पद 3:1)। ''परन्तु उसके आने के दिन को कौन सह सकेगा और जब वह दिखाई दे, तब कौन खड़ा रह सकेगा? क्योंकि वह सोनार की आग और धोबी के साबुन के समान है।'' (3:2)। ''वह रूपे का ताने वाला और शुद्ध करने वाला बनेगा, और लेवियों को शुद्ध करेगा और उन को सोने रूपे के समान निर्मल करेगा, तब वे यहोवा की भेंट धर्म से चढ़ाएँगे।'' (पद 3:3)। परमेश्वर आगे कहते हैं, ''क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं, इसी कारण हे याकूब की

संतान तुम नष्ट नहीं हुए।'' (पद 3:6)। परमेश्वर उनसे दया की प्रतिज्ञा करते हुए कहते हैं – ''तब यहोवा का भय माननेवालों ने आपस में बातें की, और यहोवा ध्यान धरकर उनकी सुनता था, और जो यहोवा का भय मानते और उसके नाम का सम्मान करते थे, उनके स्मरण के निमित्त उसके सामने एक पुस्तक लिखी जाती थी। सेनाओं का यहोवा यह कहता है, ''जो दिन मैं ने ठहराया है, उस दिन वे लोग मेरे निज भाग ठहरेंगे, और मैं उन से ऐसी कोमलता करूँगा जैसी कोई अपने सेवा करने वाले पुत्र से करे। तब तुम फिरकर धर्मी और दुष्ट का भेद, अर्थात् जो परमेश्वर की सेवा करता है, और जो उसकी सेवा नहीं करता, उन दोनों का भेद पहिचान सकोगे।'' (पद 3:16–18)।

मलाकी 4 प्रभु के दिन के आगमन के विषय में कहता है कि उस दिन सब दुराचारी और अभिमानी लोग नाश किए जाएँगे। परन्तु ''तुम्हारे लिए जो मेरे नाम का भय मानते हो, धर्म का सूर्य उदय होगा, और उसकी किरणों के द्वारा तुम चंगे हो जाओगे।'' (पद 4:2)। एक महिमामय आरंभ के विषय में बताते हुए मलाकी का अंत होता है। इस पुस्तक में हम परमेश्वर के विषय में कुछ बातें सीख सकते हैं–

1. संचारण (बातचीत) करने वाला परमेश्वर – 1:1; 3:16
2. प्रेम करने वाला परमेश्वर – 1:1
3. न बदलने वाला परमेश्वर – 3:6
4. क्षतिपूर्ति करने वाला परमेश्वर – 3:17,18
5. भस्म करने वाला परमेश्वर – 4:1

प्रश्न :

1. विश्व के इतिहास में 'मलाकी' किस काल का है?
2. भविष्यद्वक्ता का आरंभिक संदेश क्या था?
3. लोगों के बलिदान परमेश्वर के स्तर के नहीं थे –क्यों?
4. भविष्यद्वक्ता से लोगों के प्रश्न क्या थे?
5. इस पुस्तक में परमेश्वर के विषय में हम क्या सीखते हैं?

पाठ–13

दानिय्येल

परिचय :

दानिय्येल की भविष्यद्वाणी पुराने नियम की सत्ताईसवीं पुस्तक है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक नए नियम की सत्ताईसवीं पुस्तक है और मुख्यत: अंतिम दिनों की घटनाओं का वर्णन करती है। यह रुचिकर बात है कि उन दोनों पुस्तकों में बहुत सी समानताएं हैं।

जिस प्रकार यूहन्ना ने जो ''प्रिय शिष्य'' था (यूहन्ना 21:20) प्रकाशितवाक्य लिखा, उसी प्रकार दानिय्येल ने जो ''अति प्रिय'' था (दानि. 9:23; 10:19) अपनी भविष्यद्वाणियाँ लिखीं। दोनों ही लेखक पुस्तक को लिखते समय वृद्धावस्था में पहुँच चुके थे। दानिय्येल नाम का अर्थ है– ''यहोवा मेरा न्यायी है''। उसके नाम का अर्थ उसकी पुस्तक के संदेश की ओर संकेत करता है। हर एक अध्याय में हम परमेश्वर को एक न्यायी के रूप में देख सकते हैं।

लेखन और तिथि :

दानिय्येल उन यहूदी बंधुओं में से एक था जिन्हें नबूकदनेस्सर बेबीलोन ले गया था। दानिय्येल ने यह पुस्तक लिखी और उसे प्राप्त दर्शन के विषय में लिखी। (दानि. 7:2, 4; 8:1; 15) वह युवक ही था जब उसे ई.पू. 605 में बेबीलोन ले जाया गया।

इस हिसाब से उसका जन्म योशिय्याह के राज्यकाल में हुआ था जो आत्मिक जागृति का सामय था। (2 राजा 22; 2 इतिहास 34)।

पुस्तक की रूप-रेखा :

इस पुस्तक को दो मुख्य भागों में बाँटा जा सकता है-अध्याय 1-6 ऐतिहासिक हैं और 7-12 भविष्यद्वाणियाँ।

हर एक अध्याय का विषय निम्नलिखित हैं-

अध्याय 1. - निर्वासन

अध्याय 2. - बड़ी मूर्ति

अध्याय 3. - आग का भट्ठा

अध्याय 4. - विशाल वृक्ष

अध्याय 5. - दीवार पर लिखा जाना

अध्याय 6. - सिंहों की माँद में-दानिय्येल

अध्याय 7. - जंगली पशु

अध्याय 8. - मेढ़े और बकरे का दर्शन

अध्याय 9. - सत्तर हफ्तों का दर्शन

अध्याय 10. - नदी किनारे मिला दर्शन

अध्याय 11. - पापी पुरुष

अध्याय 12. - बन्द पुस्तक

यद्यपि पहले छः अध्याय ऐतिहासिक हैं, परन्तु उनमें भविष्यवाणी के विषय भी पाए जाते हैं जिनके आधार पर भी हम इस पुस्तक का विभाजन कर सकते हैं-

अध्याय 1 - परमेश्वर के लोगों पर न्याय

अध्याय 2 - अन्यजाति दर्शनशास्त्र पर न्याय

अध्याय 3-4 - अन्यजाति अहंकार पर न्याय

अध्याय 5 - अन्यजाति राष्ट्रों की अभक्ति पर न्याय

अध्याय 6 - अन्यजाति अत्याचारियों पर न्याय

अध्याय 7-12 - अन्यजातियों के राजनैतिक सामर्थ्य पर न्याय

प्रभु यीशु ने अपने वक्तव्यों में दानिय्येल की पुस्तक से उद्धरण दिए

है। (मत्ती 24:15; मरकुस 13:14)।

प्रश्न :

1. दानिय्येल और प्रकाशित की पुस्तकों में क्या समानताएं हैं?
2. दानिय्येल की पुस्तक के कौन से दो मुख्य भाग हैं?
3. पुस्तक के अनुसार किन पर न्याय आएगा?
4. इस पुस्तक में से प्रभु यीशु ने कौन से उद्धरण दिए?

पाठ–14

दानिय्येल (2)

(दानिय्येल अध्याय 1)

सुनहरा पद : दानिय्येल 1:8

दानिय्येल का पहला अध्याय बंधुआई के विषय में है। परमेश्वर अपने लोगों का न्याय कर रहे थे। इस न्याय के विषय में हम चार बातें देखते हैं–

1. न्याय का समय :

यहोयाकीम के राज्यकाल में ई.पू. 606 में बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम पर चढ़ाई करके उसे जीत लिया। वह बहुत से यहूदियों को बंधुआ बनाकर ले गया जिनमें दानिय्येल और उसके मित्र भी थे। ई.पू. 598 और ई.पू. 587 में यह आक्रमण फिर दोहराया गया।

2. न्याय का कारण :

परमेश्वर के वचन के प्रति यहोयाकीम की अवहेलना के कारण उन पर यह न्याय आया। यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा दी गई व्यवस्था की पुस्तक को उसने जला दिया (यिर्मयाह 36:20–23)।

3. न्याय का तरीका :

अनेक बार चेतावनी के दिए जाने के पश्चात् ही उन पर यह न्याय आया। परमेश्वर ने अपने लोगों से अनुनय विनय किया कि वे मूर्तिपूजा, अभक्ति और अधर्म को छोड़कर उसके पास लौट आएँ। बेबीलोन के राजा के द्वारा परमेश्वर ने उन्हें दण्ड दिया।

4. न्याय के परिणाम :

यहोयाकीम के साथ ही परमेश्वर के न्याय का आरंभ हो गया था।

''तब परमेश्वर ने यहूदा के राजा यहोयाकीम को परमेश्वर के भवन के कई पात्रों सहित उस के हाथ में कर दिया।'' (दानि. 1:2)। उनमें से अनेक मार डाले गए और बचे हुए बंधुआई में बेबीलोन ले जाए गए।

निश्चित रूप से अब *अन्यजातियों का समय* (एक नया युग) आरंभ हो चुका था। ''वे तलवार का कौर हो जाएँगे, और सब देशों के लोगों में बन्दी होकर पहुँचाए जाएँगे, और जब तक अन्यजातियों का समय पूरा न हो, तब तक यरूशलेम अन्य जातियों से रौंदा जाएगा।'' (लूका 21:24)। यहूदियों ने अपना राष्ट्र खो दिया था।

प्रभावशाली राजनैतिक प्रशासन की व्यवस्था के लिए नबूकदनेस्सर ने एक योजना बनाई। वह समझ गया था कि इस कार्य के लिए वह यहूदियों का उपयोग कर सकता है। अतः उसने आज्ञा दी, ''इस्राएली राजपुत्रों और प्रतिष्ठित पुरुषों में से ऐसे कई जवानों को लाओ जो निर्दोष, सुन्दर और सब प्रकार की बुद्धि में प्रवीण, और ज्ञान में निपुण और विद्वान, और राजमंदिर में हाजिर रहने के योग्य हों और उन्हें कसदियों के शास्त्र और भाषा की शिक्षा दी जाए।'' (दानि. 1:3-4)।

तब यहूदा की सन्तान में से दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह नामक यहूदी चुने गए। सबसे पहले उनके नाम बदले गए और उन्हें बेबीलोन देश के नाम दिए गए।

इब्रानी नाम	**अर्थ**	**बेबीलोन नाम**	**अर्थ**
1. दानिय्येल	परमेश्वर मेरा न्यायी है	बेलतशस्सर	बेल उसके जीवन की सुरक्षा करता है
2. हनन्याह	यहोवा अनुग्रहकारी है	शद्रक (चाँद देवता)	आकू की आज्ञा
3. मीशाएल	परमेश्वर जैसा कौन है	मेशेक	आकू जैसा कौन है।
4. अजर्याह	जिसकी सहायता यहोवा करता है	अबेदनगो	नेबो का सेवक

फिर राजा ने आज्ञा दी कि राजा के भोजन और पीने के दाखमधु में से उन्हें प्रतिदिन खाने-पीने को दिया जाए। इस प्रकार तीन वर्ष तक उनका पालन-पोषण होता रहे। तब उसके बाद वे राजा के सामने हाजिर किए जाएँ। यह एक सच्चे इस्राएली के लिए स्वीकार योग्य नहीं था। क्योंकि उनके भोज में ऐसी वस्तुएँ थीं जो एक यहूदी के लिए वर्जित थीं। (लैव्य. 11)। इसके अलावा वह भोज संभवत: पहले देवी-देवताओं को अर्पित किया जाता था। अत: अब दानिय्येल के सामने एक चुनौती थी। ''परन्तु दानिय्येल ने अपने मन में ठान लिया था कि वह राजा का भोजन खाकर और उसके पीने का दाखमधु पीकर अपवित्र न होगा। उसके इस निर्णय में उसके साथियों ने भी साथ दिया। ''परमेश्वर ने खोजों के प्रधान के मन में दानिय्येल के प्रति कृपा और दया भर दी। खोजों के प्रधान ने दानिय्येल से कहा, 'मैं अपने स्वामी राजा से डरता हूँ, क्योंकि तुम्हारा खाना-पीना उसी ने ठहराया है, कहीं ऐसा न हो कि वह तेरा मुँह तेरे संग के जवानों से उतरा देखे और तुम मेरा सिर राजा के सामने जोखिम में डालो।' तब दानिय्येल ने अपने देखभाल करने वाले मुखिए के पास जाकर कहा, 'मैं तुझ से विनती करता हूँ कि अपने दासों को दस दिन तक जाँच और हमें सागपात और पानी ही दिया जाए। दस दिन के बाद हमारी तुलना उन जवानों से करना जो राजा का भोजन खाएँगे। और जैसा तुझे देख पड़े, उसी के अनुसार अपने दासों से व्यवहार करना।' उनकी यह विनती मुखिए ने मान ली।'' (दानि. 1:9-14)।

दस दिन के पश्चात् जब उन्हें जाँचा गया तो वह हर प्रकार से अन्य जवानों से बेहतर निकले। ''परमेश्वर ने उन चारों जवानों को सब शास्त्रों और सब प्रकार की विद्याओं में बुद्धिमानी और प्रवीणता दी।'' (दानि. 1:17)। हमारे जीवन में भी जो निर्णय हम लेते हैं उसके अनुसार हमारा जीवन निर्धारित होता है।

यह सच है कि परमेश्वर के लोगों के पापों के कारण उन पर न्याय आया था, परन्तु इन जवानों के परमेश्वर के प्रति समर्पित जीवन के द्वारा हमें रोशनी की किरण नज़र आती है।

प्रश्न :

1. परमेश्वर के लोग बंधुआई में क्यों गए?
2. यहोयाकीम का भयंकर पाप क्या था?
3. अन्यजातियों का काल कब आरंभ हुआ?
4. नबूकदनेस्सर ने जवानों को क्यों चुना?
5. उन चार जवानों के यहूदी नाम और उनके अर्थ बताइए।
6. उनको दिए गए नए नाम और अर्थ बताइए।
7. राजसी भोजन के विषय में दानिय्येल ने क्या निर्णय किया?

पाठ–15

दानिय्येल (3)

(दानिय्येल अध्याय 2)

सुनहरा पद : दानिय्येल 2:44

इस पाठ का शीर्षक हम ''एक विशाल मूर्ति'' रख सकते हैं। राजा नबूकदनेस्सर ने एक स्वप्न देखा परन्तु वह उसे भूल गया। परन्तु उसे लगा कि वह एक महत्वपूर्ण स्वप्न था। अत: उसने उस स्वप्न और उसके अर्थ का पता लगाया और हम सीखेंगे कि कैसे।

परमेश्वर ने उसे वह स्वप्न क्यों दिखाया?

अपने विशाल राज्य और अपनी सामर्थ्य पर उसे घमंड हो गया था। अत: उसे यह बताना आवश्यक था कि उसके शासन की अवधि थोड़ी है और स्वर्ग का शासन पृथ्वी पर लाया जाएगा। उसको यह बताना भी आवश्यक था कि उस के शासन काल में जो **अन्यजातियों का काल** आरंभ हुआ था, उसका भी अंत सदा के लिए हो जाएगा।

स्वप्न के विषय में राजा का क्या विचार था?

उस स्वप्न को देखने के पश्चात् उसका मन बहुत व्याकुल हो गया और फिर उसको नींद नहीं आई। संसार के राष्ट्र और शासक सामर्थ्य प्राप्त कर सकते हैं परन्तु शांति नहीं। संसार तब तक शांति प्राप्त नहीं कर सकता जब तक कि ''शांति का राजकुमार'' का राज्य इस संसार में न आए।'' (यशायाह 9:6)।

सांसारिक ज्ञान परमेश्वर के मार्गों को समझने में असमर्थ है :

तब राजा ने आज्ञा दी, कि ज्योतिषी, तंत्री, टोनहे ओर कसदी बुलाए जाएँ कि वे राजा को उसका स्वप्न बताएँ।

राजा ने उनसे कहा कि मैंने एक स्वप्न देखा है कि अब मेरा मन व्याकुल है। तब उन लोगों ने राजा से कहा कि राजा अपना स्वप्न बताएँ

और हम उसका अर्थ बताएँगे। तब राजा ने उनसे कहा कि यदि तुम मेरा स्वप्न भी बताओ तभी मैं जानूँगा कि उसका अर्थ भी तुम जानते हो। अन्यथा मैं तुम सब को मरवा डालूँगा। उन्होंने राजा से कहा कि पूरी पृथ्वी पर ऐसा कोई मनुष्य नहीं कि वह राजा के मन की बात बता सके। तब राजा ने उन सब को मार डालने की आज्ञा दी।

संसार की समस्याओं का समाधान कौन कर सकता है?

राजा के सम्मुख जो लोग आए थे उनमें दानिय्येल और उसके साथी नहीं थे, परन्तु मृत्यु दंड की आज्ञा उन पर भी लागू होती थी क्योंकि वे लोग भी बुद्धिमान लोगों में गिने जाते थे।

तब दानिय्येल ने अंगरक्षकों के प्रधान अर्योक से जो बेबीलोन के पंडितों को मार डालने निकला था, इस विषय पर बात की। अर्योक ने दानिय्येल को सब बातें विस्तार से बताईं। तब दानिय्येल राजा के पास गया और उसने राजा से कहा कि उसे कुछ समय दिया जाए और वह उस स्वप्न का अर्थ बता देगा।

दानिय्येल और उसके मित्रों की प्रार्थना :

तब दानिय्येल अपने घर गया। और अपने मित्रों को बुलाकर इस विषय में स्वर्ग के परमेश्वर की दया के लिए प्रार्थना की। तब रात में दर्शन में परमेश्वर ने दानिय्येल पर सब कुछ प्रकट कर दिया। तब दानिय्येल ने अर्योक के पास जाकर उसे बता दिया कि वह राजा को उसका स्वप्न और उसका अर्थ बताने के लिए तैयार है। अत: बेबीलोन के पंडितों को नाश न कर।

दानिय्येल राजा के सम्मुख :

अर्योक दानिय्येल को लेकर राजा के सम्मुख गया। राजा ने दानिय्येल से पूछा कि क्या वह राजा का स्वप्न और उसका भेद बता सकता है। दानिय्येल ने उत्तर दिया कि इस संसार का कोई ज्ञानी पंडित, या ज्योतिषी यह कार्य नहीं कर सकता। परन्तु भेदों का प्रगटकर्ता परमेश्वर जो स्वर्ग में है वही यह बता सकता है। (2:27-28)। तब दानिय्येल ने राजा को

उसका वह स्वप्न जिसे वह भूल चुका था और उसका अर्थ भी समझाया।

स्वप्न और उसका अर्थ :

नबूकदनेस्सर राजा ने स्वप्न में एक बड़ी सी मूर्ति देखी थी। दानिय्येल ने कहा, ''हे राजा, जब तू स्वप्न देख रहा था तब एक बड़ी मूर्ति देख पड़ी, और वह मूर्ति जो तेरे सामने खड़ी थी, वह लंबी-चौड़ी थी, उसकी चमक अनुपम थी, और उसका रूप भयंकर था। उस मूर्ति का सिर तो चोखे सोने का था, उसकी छाती और भुजाएँ चाँदी की, उसका पेट और जाँघें पीतल की, उसकी टाँगें लोहे की और उसके पाँव कुछ तो लोहे के और कुछ मिट्टी के थे। फिर तूने देखा कि एक पत्थर ने, बिना किसी के खोदे, अपने आप उखड़कर उस मूर्ति के पाँवों पर लगकर जो लोहे और मिट्टी से बने थे, उनको चूर-चूर कर डाला। तब लोहा, मिट्टी, पीतल, चाँदी और सोना भी सब चूर-चूर हो गए, और भूसे के समान हवा से उड़ गए। और वह पत्थर जो मूर्ति पर लगा था, वह बड़ा पहाड़ बनकर सारी पृथ्वी पर फैल गया।'' (दानि 2:31-35)।

राजा को उसका स्वप्न बताकर दानिय्येल ने उसका अर्थ भी बताया जो हम अगले अध्याय में सीखेंगे।

प्रश्न :

1. बेबीलोन के सब पंडितों को मार डालने की आज्ञा राजा ने क्यों दी?
2. यह आज्ञा कैसे रोकी गई?
3. इस समस्या के आने पर दानिय्येल और उसके मित्रों ने क्या किया?
4. नबूकदनेस्सर का स्वप्न क्या था?
5. इस पाठ से हम क्या सीख सकते हैं?

पाठ-16

दानिय्येल (4)

(दानिय्येल अध्याय 2)

सुनहरा पद : दानि. 2:45

दानिय्येल ने राजा को वह स्वप्न बता दिया जो राजा ने देखा था परन्तु भूल गया था। फिर दानिय्येल ने उस स्वप्न का अर्थ राजा नबूकदनेस्सर को यों बताया कि ''यह सोने का सिर तू ही है। तेरे बाद एक राज्य और उदय होगा जो तुझ से छोटा होगा। फिर एक और तीसरा, पीतल का सा राज्य होगा जिसमें सारी पृथ्वी आ जाएगी। चौथा राज्य लोहे के तुल्य मजबूत होगा। लोहे से तो सब वस्तुएँ चूर-चूर हो जाती और पिस जाती हैं। अतः चौथे राज्य से सब कुछ चूर-चूर होकर पिस जाएगा। अंत में पाँव जो कुछ मिट्टी और कुछ लोहे का था, उसी प्रकार वह राज्य बँटा हुआ होगा। वह राज्य कुछ तो दृढ़ और कुछ निर्बल होगा। उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा, और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा। वरन् वह सब राज्यों को चूर-चूर करेगा और उनका अन्त कर डालेगा और वह सदा स्थिर रहेगा। यह वह पत्थर है जो हाथ के बिना खोदे पहाड़ में से उखड़ा और उसने लोहे, पीतल, मिट्टी, चाँदी और सोने को चूर-चूर किया।'' (दानि. 2:38b-45)।

इतना सुनकर राजा ने मुँह के बल गिरकर दानिय्येल को दण्डवत् किया और राजा ने दानिय्येल से कहा, ''सच तो यह है कि तुम लोगों का परमेश्वर, सब ईश्वरों का ईश्वर, राजाओं का राजा और भेदों का खोलने वाला है।'' तब राजा ने दानिय्येल और उसके साथियों का पद बड़ा किया।

राजा के इस स्वप्न में हम संसार के राष्ट्रों की तस्वीर देख सकते हैं। यह यहूदियों पर शासन करने वाले चार अन्यजाति शक्तियों का

प्रतिनिधित्व करते हैं। सोने का सिर बेबीलोन के राज्य का प्रतीक है जो स्वयं नबूकदनेस्सर है। चाँदी से बनी छाती और बाजुएँ मादी-फारसी राज्य का प्रतीक हैं। पेट और जाँघें जो पीतल की थीं वह यूनानी साम्राज्य का प्रतीक हैं। लोहे और मिट्टी से मिले-जुले बने हुए पैर रोमी राज्य का प्रतीक हैं, जो बाद में पूरबी और पश्चिमी राज्य में विभाजित हो गया। हम इस विशाल मूर्ति की कुछ विशेषताएँ देख सकते हैं -

1. आकार और सौंदर्य : इसकी विशालता और भव्यता संसार के राष्ट्रों की सामर्थ्य और महानता का प्रतीक है। उन साम्राज्यों के द्वारा बनाई गई सभ्यता भव्य है।

2. कमज़ोर निर्माण : ऊपरी हिस्सा भारी था परन्तु निचला भाग कमज़ोर था, क्योंकि लोहा और मिट्टी आपस में जुड़ नहीं सकते। यह साम्राज्यों की अस्थिरता को दर्शाता है और इस बात का प्रतीक है कि वह किसी भी समय चूर-चूर हो सकता है।

3. सभी वस्तुएँ पृथ्वी के नीचे की थीं : इसके निर्माण में लगी सभी वस्तुएँ पृथ्वी के नीचे से खोद कर निकाली जाने वाली हैं। यह इस बात को दर्शाता है कि इस पृथ्वी के राष्ट्र भी ''सांसारिक'' ही हैं। उनमें ''स्वर्गीय'' जैसी कोई बात पाई नहीं जाती।

4. दस उंगलियाँ : इस मूर्ति के पाँवों में हम दस उंगलियाँ देखते हैं जो इस बात का प्रतीक हैं कि भविष्य में जो रोमी राज्य होगा उसके आधीन दस राष्ट्र होंगे। वर्तमान का यूरोपीय संघ (European Union) और उसकी मुद्रा ''यूरो'' इस बात का प्रतीक हो सकता है।

एक पत्थर : एक पत्थर जिसे किसी ने खोदा नहीं था, वह प्रभु यीशु मसीह को दर्शाता है। अपने जन्म, जीवन और मृत्यु में वह ''छूआ नहीं गया'' अर्थात् वह पवित्र और पाप रहित था। वह स्वर्ग से था। वह स्वयं परमेश्वर था। इसी कारण वह मृतकों में से जी उठा और स्वर्ग पर चढ़ गया। (रोमियों 1:4)। प्रभु यीशु के दोबारा आगमन पर भी यह बात प्रासंगिक है, जब प्रभु संसार की राजनीतिक प्रणाली को पूरी तरह कुचल देंगे और पूरे विश्व पर स्वयं शासन करेंगे। वह पत्थर जिसने पूरी मूर्ति

को चूर-चूर कर दिया था और फिर बड़ा पहाड़ बनकर सारी पृथ्वी में फैल गया था, स्वयं प्रभु हैं। यह सहस्र वर्ष के प्रभु के शासन काल में होगा। परलोक सिद्धान्त में इसे ''पाँचवाँ साम्राज्य'' कहते हैं।

इस अध्याय में पिछली और आने वाली बातों को सटीक बताया गया है। चार साम्राज्य समाप्त हो चुके हैं। हमारे आस-पास हो रही घटनाएँ इस बात का प्रमाण हैं कि किस प्रकार भविष्यद्वाणियाँ पूरी हो रही हैं। बाइबल सर्वज्ञानी परमेश्वर की पुस्तक है। अतः हम देख सकते हैं कि इसमें भविष्य कितना स्पष्ट और सत्य रूप से प्रकट किया गया है। आगे के पाठों में हम इस विषय में और अध्ययन करेंगे।

प्रश्न :

1. बड़ी मूर्ति की विशेषताएँ बताइए।
2. उस मूर्ति की वस्तुएँ किन बातों का प्रतीक हैं?
3. दस उंगलियों का क्या महत्व है?
4. ''पत्थर'' के द्वारा क्या हुआ? वर्णन करो।
5. ''पत्थर'' किस का प्रतीक है।
6. मूर्ति के अंग जिन वस्तुओं से बने हैं उसके नाम और वे किस साम्राज्य के प्रतीक हैं, -लिखें-

मूर्ति के अंग	**वस्तुएं**	**साम्राज्य**
सिर		
छाती व बाजुएं		
पेट व जाँघें		
टाँगें व पाँव		

पाठ-17

दानिय्येल (5)

(दानिय्येल अध्याय 3)

सुनहरा पद : दानि. 3:17,18.

अध्याय 3 और 6 में हम एक ऐसे परमेश्वर को देखते हैं जो सर्वोच्च न्यायी है। साथ ही, वह अपनी सन्तानों को छुड़ाने वाला भी है। अध्याय 3 में हम देखते हैं कि बेबीलोन परमेश्वर के लोगों का सर्वनाश करना चाहता है और अध्याय 6 में परमेश्वर के दास दानिय्येल को मार डालने का यत्न किया जाता है। परन्तु दोनों ही घटनाओं में परमेश्वर अपने लोगों का छुटकारा करते हैं। इब्रानियों 11 अध्याय में हम उन्हें विश्वास के वीरों की सूची में पाते हैं। (इब्रा. 11:33-34)।

इस पुस्तक के आरंभ में हम देखते हैं कि नबूकदनेस्सर ने उनके नाम बदले और बाद में भोजन भी। फिर उसने प्रयत्न किया कि वे अपने परमेश्वर को भी बदल दें। अपनी बनवाई हुइ बड़ी मूर्ति की आराधना करने की राजा ने उन्हें आज्ञा दी।

निश्चित रूप से दानिय्येल उस मूर्ति के समर्पण समारोह में उपस्थित नहीं था। अन्य तीनों युवक शद्रक, मेशक और अबेदनगो को उस समस्या का सामना करना पड़ा और एक निर्णय लेना पड़ा कि जल जाएँ या मूर्ति को दण्डवत् करें। जब बाजे बजाए गए तब उन्होंने निर्णय लिया कि वे मूर्ति को दण्डवत् नहीं करेंगे। वे कुछ दूरी पर उस धधकते हुए भट्ठे को देख सकते थे। राजा ने उन्हें उस आग से बचने के लिए एक अंतिम अवसर और दिया। उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा करते हुए बड़े हिम्मत के साथ राजा को उत्तर दिया, ''हे नबूकदनेस्सर, इस विजय में तुझे उत्तर देने का हमें कुछ प्रयोजन नहीं जान पड़ता। हमारा परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं, वह हम को उस धधकते हुए भट्ठे की आग से बचाने की शक्ति रखता है, वरन् हे राजा, तेरे हाथ से भी वह

हमें छुड़ा सकता है। परन्तु यदि नहीं, तो हे राजा, तुझे मालूम हो, कि हम लोग तेरे देवता की उपासना नहीं करेंगे, और न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत् करेंगे।'' (दानि 3:16-18)।

तब नबूकदनेस्सर झुंझला गया और उसने आज्ञा दी कि भट्ठे को सात गुणा अधिक धधका दिया जाए। तब उन तीनों युवकों को बाँध कर आग में डाल दिया गया।

तुरंत ही वे सेना के बलवान पुरुष उस आग में जल के मर गए जो उन युवकों को आग में डालने ले गए थे। जब राजा ने उस आग में देखा तो अचम्भित रह गया। उसने देखा कि चार पुरुष आग के बीच में खुले हुए टहल रहे हैं और उनको कुछ हानि नहीं पहुँची और उस चौथे पुरुष का स्वरूप ईश्वर के पुत्र के सदृश है। (दानि. 3:25)। ध्यान देने योग्य बात यह है कि उस आग ने केवल उनके बंधन जलाए। परमेश्वर का पुत्र उनके साथ उस भट्ठे में था।

आग का भट्ठा उन कष्टों का प्रतीक है जो संसार में रहकर विश्वासियों को सहना पड़ता है। परमेश्वर इस बात की अनुमति तो देते हैं परन्तु वे हमें कभी अकेला नहीं छोड़ते। कष्टों में प्रभु की उपस्थिति और भी वास्तविक हो जाती है। (यशायाह 43:2, यशायाह 48:10; अय्यूब 23:10; 1 कुरि. 10:13)।

इस घटना ने राजा पर बड़ा प्रभाव डाला। उसने कहा, ''धन्य है शद्रक, मेशक और अबेदनगो का परमेश्वर, जिसने अपना दूत भेजकर अपने इन दासों को इसलिए बचाया, क्योंकि इन्होंने राजा की आज्ञा न मानकर, तुझी पर भरोसा रखा, और यह सोचकर अपना शरीर भी अर्पण किया, कि हम अपने परमेश्वर को छोड़, किसी देवता की उपासना या दण्डवत् न करेंगे। इसलिए अब मैं यह आज्ञा देता हूँ कि देश-देश और जाति-जाति के लोगों में से जो कोई शद्रक, मेशक और अबेदनगो के परमेश्वर की कुछ निन्दा करेगा, वह टुकड़े-टुकड़े किया जाएगा, क्योंकि ऐसा कोई और देवता नहीं जो इस रीति से बचा सके।'' (दानि. 3:28-29)।

परमेश्वर पर विश्वास करने वालों के विषय में इब्रानियों 11:16 कहता है, ''इसीलिए परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने में उन से नहीं लजाता।''

प्रश्न :

1. शद्रक, मेशक और अबेदनगो के सामने कौन सी चुनौती थी?
2. उनका निर्णय क्या था?
3. ''आग के भट्ठे'' के द्वारा हम कौन सी आत्मिक पाठ सीखते हैं?
4. इस घटना से राजा पर क्या प्रभाव पड़ा और उसने क्या कहा?
5. विश्वास के वीरों के विषय में परमेश्वर क्या कहते हैं?

पाठ-18

दानिय्येल (6)

(दानिय्येल अध्याय 4)

सुनहरा पद : दानिय्येल 4:3

इस अध्याय के आरंभ में हम देखते हैं कि पृथ्वी पर रहने वाले सभी लोगों को नबूकदनेस्सर का संदेश मिलता है। कोई भी राजा संदेश भेजता है तो वह महत्वपूर्ण बात होती है। इस अध्याय में हम सीखेंगे कि यह पत्र क्यों महत्वपूर्ण था।

विशाल वृक्ष का स्वप्न :

नबूकदनेस्सर राजा ने एक और स्वप्न देखा जिसे वह भूला नहीं। उसने देखा कि पृथ्वी के बीचों-बीच एक वृक्ष लगा है, और वह स्वर्ग तक ऊँचा है। उसके पत्ते सुंदर, और उसमें बहुत फल थे, यहाँ तक कि उसमें सभों के लिए भोजन था। फिर एक पवित्र पहरुआ स्वर्ग से उतर आया। उसने ऊँचे शब्द से पुकारकर कहा, ''वृक्ष को काट डालो, तौभी उसके ठूँठ को जड़ समेत भूमि में छोड़ो और उसको लोहे और पीतल के बन्धन से बाँधकर मैदान की हरी घास के बीच रहने दो। वह आकाश की ओस से भीगा करे और भूमि की घास खाने में मैदान के पशुओं के संग भागी हो। उसका मन बदले और मनुष्य का न रहे, परन्तु पशु का सा बन जाए और उस पर सात काल बीतें। यह इस कारण हुआ ताकि जो लोग जीवित हैं वे जान लें कि परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है, और उसको जिसे चाहे उसे दे देता है, और वह छोटे से छोटे मनुष्य को भी उस पर नियुक्त कर देता है।'' (दानि. 4:14-17)।

इस स्वप्न से राजा बहुत डर गया अतः वह उसका अर्थ जानना चाहता था। अपने पिछले अनुभवों के कारण राजा जानता था कि दानिय्येल का परमेश्वर स्वर्ग और पृथ्वी का सर्वाधिकारी प्रभु है। वह यह भी

जानता था कि उसके राज्य के जादूगर और ज्ञानी लोग परमेश्वर के द्वारा दिए गए स्वप्न का अर्थ बताने में असमर्थ हैं, फिर भी उसने बेबीलोन के सब पंडितों को बुलवाया ताकि वे उसके स्वप्न का अर्थ बता सकें। परन्तु हमेशा की तरह वे असफल रहे। तब दानिय्येल को बुलवाया गया। स्वप्न सुनकर दानिय्येल घबरा गया क्योंकि वह न्याय का एक संदेश था। राजा ने दानिय्येल से कहा, ''हे बेलतशस्सर, इस स्वप्न से, या इसके फल से तू व्याकुल मत हो।'' दानिय्येल ने राजा से कहा, ''हे मेरे प्रभु, यह स्वप्न तेरे बैरियों पर, और इसका अर्थ तेरे द्रोहियों पर फले! जिस वृक्ष को तू ने देखा, जो बड़ा और दृढ़ हो गया, और जिसकी ऊँचाई स्वर्ग तक पहुँची, हे राजा, वह तू ही है। हे राजा, इसका फल जो परमप्रधान ने ठान लिया है कि राजा पर घटे, वह यह है, कि तू मनुष्यों के बीच से निकाला जाएगा, और मैदान के पशुओं के संग रहेगा। तू बैलों के समान घास चरेगा और आकाश की ओस से भीगा करेगा, और सात युग तुझ पर बीतेंगे, जब तक कि तू न जान ले कि मनुष्यों के राज्य में परमप्रधान की प्रभुता करता है, और जिसे चाहे वह उसे दे देता है। उस वृक्ष के ठूँठ को जड़ समेत छोड़ने की आज्ञा जो हुई है, इसका अर्थ यह है कि तेरा राज्य तेरे लिए बना रहेगा, और जब तू जान लेगा कि जगत का प्रभु स्वर्ग ही में है, तब तू फिर से राज्य करने पाएगा। इस कारण, हे राजा, मेरी यह सम्मति स्वीकार कर, कि यदि तू पाप छोड़कर धर्म करने लगे, और अधर्म छोड़कर दीन हीनों पर दया करने लगे, तो संभव है कि ऐसा करने से तेरा चैन बना रहे।'' (दानि. 4:19-27)।

स्वप्न पूरा हुआ :

इस घटना के पश्चात् बारह महीने बीत गए। राजा बेबीलोन के राजभवन की छत पर टहल रहा था, तब वह कहने लगा, ''क्या यह बड़ा बेबीलोन नहीं है, जिसे मैं ही ने अपने बल और सामर्थ्य से राजनिवास होने को और अपने प्रताप की बड़ाई के लिए बसाया है?'' यह वचन राजा के मुँह से निकलने भी न पाया था कि आकाशवाणी हुई, ''हे राजा नबूकदनेस्सर, तेरे विषय में यह आज्ञा निकलती है : राज्य

तेरे हाथ से निकल गया, और तू मनुष्यों के बीच से निकाला जाएगा, और मैदान के पशुओं के संग रहेगा, और बैलों के समान घास चरेगा, और सात काल तुझ पर बीतेंगे, जब तक कि तू न जान ले कि परमप्रधान, मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे चाहे वह उसे दे देता है।'' उसी घड़ी यह वचन नबूकदनेस्सर के विषय में पूरा हुआ। वह मनुष्यों में से निकाला गया, और बैलों के सामन घास चरने लगा, और उसकी देह आकाश की ओस में भीगती थी, यहाँ तक कि उसके बाल उकाब पक्षियों के परों से और उसके नाखून चिड़ियों के पंजों के समान बढ़ गए। (दानि. 4:29-33)। सात वर्षो तक नबूकदनेस्सर एक जानवर की तरह रहा परन्तु उसे सुरक्षित रखा गया। उन दिनों के बीतने पर वह परमेश्वर की ओर फिरा और स्वीकार किया कि परमेश्वर ही परमप्रधान हैं जो सदा जीवित है तब उसका राज्य उसे लौटा दिया गया। (दानि. 4:36)। नबूकदनेस्सर यह जान गया कि दानिय्येल के परमेश्वर को छोड़ कोई और ईश्वर नहीं है। यह बात वह सब लोगों को बताना चाहता था अत: अपना अनुभव बताने के लिए उसने अपने राज्य के भिन्न-भिन्न जाति और भाषा के लोगों को पत्र लिखा।

इस घटना के द्वारा हम भी कुछ पाठ सीख सकते हैं :

* परमेश्वर परमप्रधान हैं और वह सिंहासन पर विराजमान हैं। वह स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहनेवालों के बीच अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करता है। कोई उसको रोक कर उस से नहीं कह सकता है, ''तू ने यह क्या किया है?'' यशायाह 42:8 में परमेश्वर कहते हैं ''अपनी महिमा मैं दूसरे को न दूँगा।'' दानिय्येल और उसके मित्रों के जीवन के द्वारा सीखा हुआ यह पाठ नबूकदनेस्सर भूल गया था।
* नबूकदनेस्सर बहुत अहंकारी हो गया था। 1 पतरस 5:5-6 कहता है ''परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है। इसलिए परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।''

* हर एक व्यक्ति और राष्ट्र के लिए परमेश्वर की एक योजना है। नबूकदनेस्सर को राज्य लौटा देना भी इस्राएल और विश्व के लिए योजना का एक भाग था।

* नबूकदनेस्सर के जीवन की घटनाओं ने उसे परमेश्वर को समझने में सहायता की। प्रभु यीशु के द्वारा परमेश्वर की संतान बनाए गए हम लोगों को निडर होकर इस बात की गवाही देनी चाहिए।

प्रश्न :

1. राजा नबूकदनेस्सर ने क्या स्वप्न देखा?
2. दानिय्येल ने राजा के स्वप्न का क्या अर्थ बताया?
3. जब नबूकदनेस्सर ने अहंकार किया तब परमेश्वर ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया?
4. अपने राजमहल की छत पर टहलते हुए राजा ने क्या कहा?
5. हम इससे क्या पाठ सीख सकते हैं?

पाठ–19

दानिय्येल (7)

(दानिय्येल अध्याय 5)

सुनहरा पद : दानि. 5:30-31

562 ई.पू. नबूकदनेस्सर की मृत्यु हो गई। अब बेलशस्सर ने शासन संभाला। उसके पिता ने नबूकदनेस्सर की बेटी से विवाह किया था। बेलशस्सर ने अपने हजार प्रधानों के लिए एक बड़ा भोज किया। बेलशस्सर ने आज्ञा दी कि सोने-चाँदी के जो पात्र नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के मंदिर में से निकाले थे, उन्हें लाया जाए कि राजा अपने प्रधानों और रानियों और रखेलियों समेत उनमें पीए। वे दाखमधु पीकर सोने, चाँदी, पीतल, लोहे, काठ और पत्थर के देवताओं की स्तुति करने लगे।

दीवार पर लेख :

जब वे ऐसा कर रहे थे, उसी समय मनुष्य के हाथ की सी कई उँगलियाँ निकलकर दीवार के सामने राजमन्दिर की दीवार के चूने पर कुछ लिखने लगीं, और हाथ का जो भाग लिख रहा था, वह राजा को दिखाई पड़ा। उसे देखकर राजा भयभीत हो गया, और वह मन ही मन घबरा गया। तब राजा ने ऊँचे शब्द से पुकारकर तंत्रियों, कसदियों और अन्य भावी बताने वालों को हाजिर करवाने की आज्ञा दी। जब बेबीलोन के पण्डित पास आए, तब राजा उनसे कहने लगा, ''जो कोई वह लिखा हुआ पढ़कर उसका अर्थ मुझे समझाए उसे बैंजनी रंग का वस्त्र, और उसके गले में सोने की कण्ठमाला पहिनाई जाएगी, और मेरे राज्य में तीसरा वही प्रभुता करेगा।'' तब राजा के सब पंडित लोग भीतर आए, परन्तु उस लिखे हुए को न पढ़ सके और न राजा को उसका अर्थ समझा सके। तब राजा बहुत अधिक घबरा गया।

लेख का अर्थ :

राजा और प्रधानों के वचनों को सुनकर रानी भोज के भवन में आई और कहने लगी, ''हे राजा, तू युग-युग जीवित रहे। अपने मन में न घबरा और न उदास हो। तेरे राज्य में दानिय्येल नाम का एक पुरुष है, उसमें पवित्र ईश्वरों की आत्मा रहती है। तेरे पिता ने उसे सब ज्योतिषियों, तंत्रियों और भावी बताने वालों का प्रधान ठहराया था। इसलिए अब दानिय्येल को बुलाया जाए और वह इसका अर्थ बताएगा।'' (दानि. 5:10-12)।

तब दानिय्येल राजा के सामने बुलाया गया। राजा ने दानिय्येल से कहा, ''यदि तू उस लिखे हुए को पढ़ सके और उसका अर्थ समझा सके, तो तुझे बैंजनी रंग का वस्त्र, और तेरे गले में सोने की कण्ठमाला पहिनाई जाएगी, और राज्य में तीसरा तू ही प्रभुता करेगा।'' दानिय्येल ने राजा से कहा, ''अपने दान अपने ही पास रख, और जो बदला तू देना चाहता है, वह दूसरे को दे, वह लिखी हुई बात मैं राजा को पढ़कर सुनाऊँगा और उसका अर्थ भी बताऊँगा।'' तब दानिय्येल ने राजा को उन घटनाओं का स्मरण दिलाया जो नबूकदनेस्सर के जीवन में घटी थीं और फिर राजा से कहा, ''हे बेलशस्सर, यह सब जानते हुए भी तू ने परमेश्वर के भवन के पात्र मँगवाकर उनमें दाखमधु पीया और उन मूर्तियों की आराधना की जो न देख सकते हैं न ही सुन सकते हैं। परन्तु जिस परमेश्वर के हाथ में तेरा प्राण है उसका सम्मान तू ने नहीं किया। उस परमेश्वर की ओर से ये शब्द लिखे गए हैं : मने, मने, तकेल, ऊपर्सीन। अर्थात् मने का अर्थ है, परमेश्वर ने तेरे राज्य के दिन गिनकर उसका अन्त कर दिया है। तकेल, अर्थात् तू तराजू में तौला गया और हलका पाया गया है। ऊपर्सीन, अर्थात् बाँट दिया (पेरेस का बहुवचन है पर्सीन, ऊ का अर्थ है ''और'')। तेरा राज्य बाँट कर मादियों और फारसियों को दे दिया गया है।''

तब बेलशस्सर ने आज्ञा दी और दानिय्येल को बैंजनी रंग का वस्त्र और गले में सोने की कण्ठमाला पहिनाई गई और ढ़िढ़ोरिये ने उसके

विषय में पुकारा कि राज्य में तीसरा दानिय्येल ही प्रभुता करेगा। उसी रात राजा बेलशस्सर मार डाला गया और दारा मादी राजगद्दी पर विराजमान हुआ।

इस ऐतिहासिक घटना से हम कुछ आत्मिक पाठ सीखते हैं।

1. आवश्यकता की उस घड़ी में बेलशस्सर ने ज्योतिषियों और संसार के ज्ञानियों से सहायता मांगी। आज भी मनुष्य के स्वभाव में यह पाया जाता है। परन्तु वह सब बेकार साबित होता है। सभी समस्याओं के हल के लिए हमें परमेश्वर की ओर फिरना चाहिए।

2. परमेश्वर ठट्ठों में उड़ाया नहीं जा सकता। राजा ने परमेश्वर के मंदिर के पवित्र पात्रों को अपवित्र किया और उसे उसका दण्ड मिला।

''इसलिए इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की वाणी यह है कि जो मेरा आदर करे मैं उनका आदर करूँगा, और जो मुझे तुच्छ जाने वे छोटे समझे जाएँगे।'' (1 शमूएल 2:30)।

प्रश्न :

1. बेलशस्सर कौन था?
2. उसने किसके लिए बड़ा भोज किया था?
3. भोज कैसे समाप्त हुआ?
4. दीवार पर क्या लिखा था?
5. उस लेख का क्या अर्थ था?
6. उसका अर्थ किसने बताया?
7. इस घटना से हम कौन सा आत्मिक पाठ सीखते हैं?

पाठ-20

दानिय्येल (8)

(दानिय्येल अध्याय 6)

सुनहरा पद : दानिय्येल 6:10

राजा दारा ने अपने प्रशासन में कुछ परिवर्तन किए। उसने अपने राज्य में एक सौ बीस अधिपति ठहराए जो पूरे राज्य पर अधिकार रखें। इन एक सौ बीस अधिपतियों के ऊपर उसने तीन अध्यक्ष ठहराए जिनमें से एक दानिय्येल था। तब अध्यक्ष और अधिपति जो दानिय्येल से जलते थे वे उसके विरुद्ध दोष ढूँढ़ने लगे। परन्तु दानिय्येल विश्वासयोग्य था इस कारण किसी को उसमें कोई दोष नहीं मिला। तब वे लोग कहने लगे कि दानिय्येल के परमेश्वर की व्यवस्था को छोड़ किसी भी अन्य विषय में हमें उसके विरुद्ध कुछ भी दोष नहीं मिलेगा। तब उन्होंने दानिय्येल के विरुद्ध एक साजिश की और वे राजा के पास जाकर कहने लगे, ''हे राजा, तू युगयुग जीवित रहे। तेरे राज्य के सब अध्यक्षों, हाकिमों, अधिपतियों ने मिलकर यह सम्मति की है कि राजा ऐसी कड़ी आज्ञा निकाले, कि तीस दिन तक जो कोई तुझे छोड़ किसी अन्य देवता की आराधना करे वह सिंहों की माँद में डाल दिया जाए। इसलिए अब तू इस पत्र पर हस्ताक्षर कर ताकि यह आज्ञा बदली न जाए।'' तब राजा ने उस आज्ञा पत्र पर अपना हस्ताक्षर कर दिया।

दानिय्येल परमेश्वर से प्रार्थना करता है :

जब दानिय्येल को यह बात पता चली तब वह अपने घर गया। उसकी उपरौठी कोठरी की खिड़कियाँ यरूशलेम की ओर खुली रहती थीं। वह दिन में तीन बार अपने परमेश्वर के सामने घुटने टेककर प्रार्थना और धन्यवाद करता था। उस दिन भी उसने वैसा ही किया। तब उन पुरुषों ने उतावली से आकर दानिय्येल को अपने परमेश्वर से विनती

करते और गिड़गिड़ाते हुए पाया।

दानिय्येल सिंहों की माँद में :

तब वे राजा के पास गए और उन्होंने राजा से दानिय्येल की शिकायत की कि उसने राज आज्ञा का उल्लंघन किया और अपने परमेश्वर से प्रार्थना की। अतः अब उसे सिंहों की माँद में डाल दिया जाए। यह सुनकर राजा बहुत ही उदास हुआ और दानिय्येल को बचाने के उपाय सोचने लगा। परन्तु उन दानिय्येल के शत्रुओं के दबाव के कारण दानिय्येल को लाया गया। तब राजा ने दानिय्येल से कहा, ''तेरा परमेश्वर जिसकी तू नित्य उपासना करता है, वही तुझे बचाए!'' तब दानिय्येल माँद में डाला गया और गड़हे के मुँह पर पत्थर रख दिया गया और उस पर राजा की अंगूठी और प्रधानों की अंगूठियों से मुहर लगा दी गई।

दानिय्येल का छुटकारा :

राजा अपने महल में चला गया परन्तु उस रात को उसने भोजन नहीं किया, और राजा को नींद भी नहीं आई। बहुत सवेरे राजा उठ गया और सिंहों की माँद की ओर जल्दी से पहुँच गया। गड़हे के निकट आकर बड़े दुःख के साथ वह चिल्लाया, ''हे दानिय्येल, हे जीवते परमेश्वर के दास, क्या तेरा परमेश्वर जिसकी तू नित्य उपासना करता है, तुझे सिंहों से बचा सका है?'' तब दानिय्येल ने राजा से कहा, ''हे राजा, तू युगयुग जीवित रहे। मेरे परमेश्वर ने अपना दूत भेजकर सिंहों के मुँह को ऐसा बंद कर दिया कि उन्होंने मेरी कुछ हानि नहीं की। क्योंकि मैं परमेश्वर के सामने निर्दोष पाया गया, और हे राजा, तेरे सम्मुख भी मैंने कोई गलती नहीं की।'' तब राजा बहुत ही प्रसन्न हो गया और उसने दानिय्येल को गड़हे में से निकालने की आज्ञा दी। फिर राजा ने आज्ञा दी कि जिन पुरुषों ने दानिय्येल के विरुद्ध यह साजिश रची थी उन्हें और उनके पूरे परिवार को सिंहों की माँद में डाल दिया जाए। ऐसा ही किया गया और वे गड़हे की पेंदी तक भी न पहुँचे थे कि सिंहों ने उन पर झपटकर उन्हें चबा डाला।

दारा राजा की आज्ञा :

तब राजा दारा ने सारी पृथ्वी के रहने वाले भिन्न-भिन्न जाति और भाषा वालों के पास यह लिख भेजा कि यह मेरी आज्ञा है कि लोग दानिय्येल के परमेश्वर का भय मानें क्योंकि वही परमेश्वर है जो जीवता और युगानुयुग तक रहने वाला है।

इस प्रकार दानिय्येल दारा और कुस्त्रू दोनों के राज्य के दिनों में सुख-चैन से रहा।

प्रश्न :

1. दारा के प्रशासन में दानिय्येल का स्थान क्या था?
2. दानिय्येल के शत्रुओं ने क्या साजिश की?
3. राजा की आज्ञा जानने पर दानिय्येल ने क्या किया?
4. राजा को एक रात नींद नहीं आई। क्यों?
5. दानिय्येल कैसे बचाया गया?
6. उसके शत्रुओं का क्या हुआ?
7. इस घटना का राजा पर क्या प्रभाव पड़ा?
8. इस पाठ से हम क्या सीख सकते हैं?

पाठ–21

दानिय्येल (9)

(दानिय्येल अध्याय 7)

सुनहरा पद : दानिय्येल 7:27

अध्याय 7 से आगे हम भविष्यद्वाणियाँ देखते हैं। अध्याय 6 तक ऐतिहासिक घटनाएँ थीं जब अन्यजाति राजा स्वप्न देखा करते थे और उनका अर्थ बताने के लिए परमेश्वर ने दानिय्येल का उपयोग किया। यहाँ से आगे हम सीखेंगे कि दानिय्येल स्वप्न और दर्शन देखता है और परमेश्वर का दूत उसके अर्थ बताता है। बेलशस्सर के राज्य के पहले वर्ष में (553 ई.पू.) उसने एक स्वप्न देखा। यह बेलशस्सर के भोज और दीवार पर लिखे गए लेख की घटना के चौदह वर्ष पूर्व की बात है। इस अध्याय को दो भागों में बाँटा जा सकता है–

1. दानिय्येल का दर्शन पद 1–14.
2. उसका अर्थ पद 15–28.

दानिय्येल का दर्शन :

दानिय्येल ने स्वप्न देखा कि महासागर पर चारों ओर आँधी चलने लगी। तब समुद्र में से चार बड़े–बड़े जन्तु निकल आए। पहला जन्तु सिंह के समान था और उसके पंख उकाब के से थे। तब उसके पंखों के पर नोचे गए और वह भूमि पर से उठकर मनुष्य के समान पाँवों पर खड़ा हुआ और उसे मनुष्य का सा हृदय दिया गया। फिर एक और जन्तु आया जो रीछ के समान था। वह एक पाँजर के बल उठा हुआ था और उसके मुँह में दाँतों के बीच तीन पसलियाँ थीं। लोग उससे कह रहे थे, ''उठकर बहुत माँस खा।'' तब फिर तीसरा जन्तु आया जो चीते के समान था और उसकी पीठ पर पक्षी के से चार पंख थे और उसके चार

सिर थे। और उसे शासन करने अधिकार दिया गया। फिर चौथा जन्तु आया जो भयानक और डरावना और बहुत सामर्थी था। उसके बड़े-बड़े लोहे के दाँत थे। वह सब कुछ खा डालता और चूर-चूर करता है। उसके दस सींग भी थे। दानिय्येल जब उन सींगों को देख रहा था तो उनके बीच से एक और छोटा सा सींग निकला जिसके कारण पहले सींगों में से तीन सींग उखाड़े गए। उस सींग में मनुष्य की सी आँखें और बड़ा बोल बोलने वाला मुँह भी था।

दर्शन का अर्थ :

उस दर्शन का अर्थ दानिय्येल को बताया गया कि उन चार बड़े-बड़े जन्तुओं का अर्थ **चार राज्य** है जो पृथ्वी पर उदय होंगे। परन्तु परमप्रधान के पवित्र लोग राज्य को पाएँगे और युगानुयुग उसके अधिकारी बने रहेंगे।

चौथा जन्तु सबसे अलग और सबसे भयंकर था। उसके दस सींगों का अर्थ है कि उस राज्य में से दस राजा उठेंगे और उनके बाद उन पहिलों से भिन्न एक और राजा उठेगा जो तीन राजाओं को गिरा देगा। वह परमप्रधान के विरुद्ध बातें कहेगा और परमप्रधान के पवित्र लोगों को पीस डालेगा। परन्तु उसकी प्रभुता छीनकर नष्ट कर दी जाएगी और उसका अन्त हो जाएगा। तब राज्य और प्रभुता परमप्रधान की प्रजा को दी जाएगी। उसका राज्य सदा का राज्य है।

सिंहासनों का दर्शन :

दानिय्येल ने दर्शन देखा कि सिंहासन रखे गए और कोई अति प्राचीन (परमेश्वर) विराजमान हुआ। उसका वस्त्र हिम सा उजला और सिर के बाल निर्मल ऊन सरीखे थे। उसका सिंहासन अग्निमय और उसके पहिए धधकती हुई आग के से दिखाई पड़ते थे। उस प्राचीन के सम्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही थी। फिर हज़ारों हज़ार लोग उसकी सेवा टहल कर रहे थे और लाखों लाख लोग उसके सामने हाजिर थे। फिर न्यायी बैठ गए और पुस्तकें खोली गईं। उस समय उस सींग का बड़ा बोल सुनकर दानिय्येल देखता रहा और अन्त में देखा कि

वह जन्तु घात किया गया और उसका शरीर आग से भस्म किया गया। फिर मनुष्य के सन्तान-सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुँचा। तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया और उसकी प्रभुता सदा तक अटल और उसका राज्य अविनाशी ठहरा।

प्रश्न :

1. दानिय्येल ने क्या दर्शन देखा?
2. दर्शन में देखे गए चार बड़े-बड़े जन्तु किसका प्रतीक थे?
3. चौथे जन्तु का वर्णन करो।
4. चौथे जन्तु के दस सींगों और उस छोटी सींग का क्या अर्थ है?
5. परमेश्वर और उनके सिंहासन का वर्णन करो।
6. दानिय्येल ने मनुष्य के सन्तान के विषय में दर्शन में क्या देखा?

पाठ–22

दानिय्येल (10)

(दानिय्येल अध्याय 8)

चार बड़े जन्तुओं का दर्शन देखने के दो वर्ष के बाद दानिय्येल ने एक और दर्शन देखा जब वह एलाम नामक प्रान्त में शूशन राजगढ़ में रहता था। उसने देखा कि वह ऊलै नदी के किनारे पर है और उस नदी के सामने दो बड़ी सींगों वाला एक मेढ़ा खड़ा है। उसके सींगों में से एक दूसरे वाले से अधिक बड़ा है। जो बड़ा सींग है वह छोटे वाले के बाद निकला। कोई जन्तु उस मेढ़े के सामने खड़ा नहीं हो सकता था।

तभी एक बकरा पश्चिम दिशा से निकलकर सारी पृथ्वी पर ऐसा फिरा कि चलते समय भूमि पर पाँव न छुआया और उस बकरे की आँखों के बीच एक सींग था। वह उस मेंढ़े के पास जाकर उस पर लपका और उसको मारकर उसके दोनों सींगों को तोड़ दिया और उसे भूमि पर गिराकर रौंद डाला। और मेढ़े को छुड़ानेवाला कोई न मिला। तब वह बकरा अत्यंत बड़ाई मारने लगा और जब बलवन्त हुआ तब उसका बड़ा सींग टूट गया और उसके बदले चार सींग निकलकर चारों दिशाओं की ओर बढ़ने लगे।

फिर इनमें से एक छोटा सा सींग और निकला और वह दक्षिण, पूरब और शिरोमणि देश की ओर बहुत बढ़ गया। वह स्वर्ग की सेना तक बढ़ गया और उसमें से और तारों में से कितनों को भूमि पर गिराकर रौंद डाला। वह सेना के प्रधान तक भी बढ़ गया और उसका नित्य होमबलि बन्द कर दिया गया और उसका पवित्र वास स्थान गिरा दिया गया। तब दानिय्येल ने एक पवित्र जन को बोलते सुना। फिर एक और पवित्र जन ने उस पहले बोलने वाले से पूछा, ''नित्य होमबलि और उजड़वाने वाले अपराध के विषय में जो दर्शन देखा गया अर्थात् पवित्रस्थान

और सेना का रौंदा जाना कब तक होता रहेगा?'' तब उसने उत्तर दिया और कहा, ''जब तक साँझ और सवेरा दो हजार तीन सौ बार न हों, तब तक वह होता रहेगा, तब पवित्रस्थान शुद्ध किया जाएगा।''

दर्शन का अर्थ :

दानिय्येल इन बातों को समझने का यत्न करने लगा तब एक पुरुष उसके सामने खड़ा दिखाई पड़ा। तब ऊलै नदी के बीच में से यह शब्द सुनाई दिया, ''हे जिब्राएल, उस जन को उसकी देखी हुई बातों का अर्थ समझा दे।'' तब वह दानिय्येल के पास गया और उससे कहा, ''हे मनुष्य के सन्तान, उन देखी हुई बातों को समझ ले। ये बातें अन्त के समय में पूरी होगी। दो सींग वाला मेढ़ा मादियों और फारसियों का राज्य है। और वह बकरा यूनान का राज्य है। उसकी आँखों के बीच से जो सींग निकला वह पहला राजा था। वह सींग जो टूट गया और उसके बदले चार सींग निकले उसका अर्थ यह है कि उस जाति से चार राज्य उदय होंगे। उनमें से एक राजा उठेगा जो सामर्थियों और पवित्र लोगों के समुदाय को नष्ट करेगा। परन्तु अन्त में खुद ही टूट जाएगा। भविष्य में होने वाली इन घटनाओं का दर्शन देखकर दानिय्येल बीमार पड़ गया। फिर स्वस्थ होकर राजा का कामकाज फिर से करने लगा।

प्रश्न :

1. दानिय्येल ने दर्शन में खुद को कहाँ पर खड़े देखा?
2. मेढ़ा और बकरा किसके प्रतीक हैं?
3. बकरे के सींग का क्या हुआ?
4. छोटा सींग कहाँ से निकला?
5. छोटा सींग किसका प्रतीक है?

पाठ-23

दानिय्येल (11)

दानिय्येल का सत्तरवाँ सप्ताह

परिचय :

यह दारा मादी के राज्य का पहला वर्ष था। उस समय दानिय्येल लगभग 85 वर्ष का था। उसने एक विद्यार्थी के रूप में बेबीलोन में अपना जीवन आरंभ किया था। इस उम्र में भी वह परमेश्वर के वचन का विद्यार्थी था। उसने यिर्मयाह की भविष्यद्वाणियों का अध्ययन किया जिससे उसे पता चला कि यरूशलेम की दुर्दशा 70 वर्षों तक रहेगी। (यिर्मयाह 25:11; 29:10)। इस्राएल को यह व्यवस्था दी गई थी। कि सातवें वर्ष वे लोग भूमि को जोतेंगे बोएंगे नहीं (लैव्य. 25:1-4)। परन्तु उन्होंने इस आज्ञा का पालन नहीं किया (लैव्य. 26:33-35; यिर्मयाह 34:12-22; 2 इति. 36:21)। अत: 490 वर्षों का सब्त का कर्ज 70 वर्ष हुए।

यद्यपि दानिय्येल स्वयं भी एक भविष्यद्वक्ता था, परन्तु उसे अन्य भविष्यद्वक्ताओं के वचनों को पढ़ना आवश्यक लगा क्योंकि वह परमेश्वर का वचन है। (मंदिर के विनाश के पश्चात् दानिय्येल ने पुराने नियम की पुस्तकों को संभाल कर रखा होगा)। भविष्य के विषय में दानिय्येल को अनेक दर्शन मिले परन्तु बन्धुआई का अन्त कब होगा इस विषय में उसे कोई दर्शन नहीं दिया गया। यिर्मयाह को दी गई भविष्यद्वाणी के विषय में परमेश्वर दानिय्येल को और जानकारी दे रहे थे।

दानिय्येल की प्रार्थना :

दानिय्येल समझ गया था कि 70 वर्षों का समय समाप्त होने वाला था। अपना व्यक्तिगत पाप और समस्त इस्राएल का पाप जो उनकी बंधुआई का कारण था, उसके लिए उसने सत्यनिष्ठा के साथ परमेश्वर

से प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना एक अच्छा उदाहरण है। हम उसकी विशेषताएँ देखेंगे–

1. परमेश्वर का वचन पढ़ने के पश्चात् उसने प्रार्थना की।

2. उसने उपवास के साथ प्रार्थना किया (एज्रा 8:23; नहेम्याह 9:1; एस्तेर 4:1,3,16, अय्यूब 2:12 योना 3:5, 6 भी पढ़ें)।

3. परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर आधारित होकर उसने प्रार्थना की (पद 4)।

4. वह लोगों के साथ एक होकर प्रार्थना करता है और कहता है ''हम ने'' पाप किया।

5. वह परमेश्वर की वाचा का स्मरण दिलाता है। (9:4)। संभवत: वह अब्राहम से की गई वाचा के विषय में सोच रहा था कि कनान देश हमेशा उनका रहेगा। (उत्पत्ति 12:7; 13:14)। परमेश्वर की सन्तान अपनी प्रार्थना में परमेश्वर के वायदों का दावा कर सकते हैं।

6. वह पूरी तरह परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर रहता है ''अपने धर्म के कामों पर नहीं, वरन् तेरी बड़ी दया ही के कामों पर भरोसा रखकर करते हैं।'' (9:18)।

भविष्यद्वाणी :

दानिय्येल की प्रार्थना के उत्तर में परमेश्वर ने भविष्य की बात बताने के लिए उसके पास जिब्राएल स्वर्गदूत को भेजा। उसने कहा, ''हे दानिय्येल, मैं तुझे बुद्धि और प्रवीणता देने को अभी निकल आया हूँ। जब तू गिड़गिड़ाकर प्रार्थना कर रहा था, तब ही इसकी आज्ञा निकली, इसलिए मैं तुझे बताने आया हूँ क्योंकि तू अति प्रिय ठहरा है; इसलिए उस विषय को समझ ले और दर्शन की बात का अर्थ जान ले। तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर के लिए सत्तर सप्ताह ठहराए गए हैं कि उनके अन्त तक अपराध का होना बन्द हो, और पापों का अन्त और अधर्म का प्रायश्चित किया जाए और युगयुग की धार्मिकता प्रकट हो, और दर्शन की बात पर और भविष्यद्वाणी पर छाप दी जाए, और परमपवित्र

का अभिषेक किया जाए (दानि. 9:23-24)।

छः उद्देश्य : परमश्वेर अपने लोगों के लिए जो कार्य करने वाले हैं वह पद 24 में हम पढ़ते हैं।

1. अपराध का होना बन्द
2. पापों का अन्त
3. अधर्म का प्रायश्चित
4. युगयुग की धार्मिकता
5. दर्शन और भविष्यद्वाणी पर छाप
6. परमपवित्र (स्थान) का अभिषेक

इनमें से पहले तीन उद्देश्य प्रभु यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के साथ पूरे हुए। अंतिम तीन प्रभु के वापस आने पर पूरे होंगे।

प्रश्न :

1. दानिय्येल की प्रार्थना एक अच्छा उदाहरण क्यों है?
2. उसकी प्रार्थना की क्या विशेषताएँ हैं?
3. परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना का उत्तर कैसे दिया?
4. इस भविष्यद्वाणी के छः उद्देश्य क्या हैं?
5. इन उद्देश्यों की पूर्ति कब होगी?

पाठ-24

दानिय्येल (12)

(दानिय्येल अध्याय 10)

सुनहरा पद : दानिय्येल 10:6

''उसका शरीर फीरोज़ा के समान, उसका मुख बिजली के समान, उसकी आँखें जलते हुए दीपक की सी, उसकी बांहें और पाँव चमकाए हुए पीतल के से, और उसके वचनों का शब्द भीड़ के शब्द का सा था।'' (दानि. 10:6)।

फारस देश के राजा कुस्त्रू के राज्य के तीसरे वर्ष (ई.पू. 536) में दानिय्येल ने यह अंतिम दर्शन देखा। बेबीलोन की बंधुआई से छूटकर इस्राएली वापस अपने देश जा चुके थे और उन्होंने मंदिर के पुनर्निर्माण का कार्य आरंभ कर लिया था। संभवत: अपनी वृद्धावस्था के कारण दानिय्येल उनके पास नहीं गया। यह माना जाता है कि इस समय तक दानिय्येल की उम्र 90 वर्ष हो चुकी थी।

उन दिनों में दानिय्येल ने तीन सप्ताह परमेश्वर की उपस्थिति में बिताए। वह तीन सप्ताह तक शोक करता रहा। उस समय के पूरे होने तक दानिय्येल ने न तो स्वादिष्ट भोजन किया और न माँस या दाखमधु अपने मुँह में रखा और न ही अपनी देह में कुछ तेल लगाया। पहले महीने के चौबीसवें दिन दानिय्येल और उसके साथी हिद्देकेल नामक नदी के तट पर खड़े थे। तब उसने सन का वस्त्र पहिने हुए एक पुरुष का दर्शन देखा। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में हम प्रभु यीशु मसीह के विषय में बिल्कुल ऐसा ही वर्णन पढ़ते हैं। (प्रका. 1:13-16)।

मसीह यीशु की महिमा की तुलना–

देह-धारण से पहले	महिमान्वित प्रभु
दानिय्येल 10:5-6: ''तब मैंने आँखें उठाकर देखा कि सन का वस्त्र पहिने हुए और ऊफाज देश के कुन्दन से कमर बाँधे हुए एक पुरुष खड़ा है। उसका शरीर फीरोज़ा के समान, उसका मुख बिजली के समान, उसकी आँखें जलते हुए दीपक की सी, उसकी बांहें और पाँव चमकाए हुए पीतल के से, और उसके वचनों का शब्द भीड़ों के शब्द का सा था।''	प्रकाशितवाक्य 1:13-15 ''और उन दीवटों के बीच में मनुष्य के पुत्र के सदृश एक पुरुष को देखा, जो पाँवों तक का वस्त्र पहिने, और छाती पर सोने का पटुका बाँधे हुए था। उसके सिर और बाल श्वेत ऊन के वरन पाले के समान उज्ज्वल थे, और उसकी आँखें आग की ज्वाला के समान थीं। उसके पाँव उत्तम पीतल के समान थे जो मानो भट्ठी में तपाया गया हो और उसका शब्द बहुत जल के शब्द के समान था। ''

प्रभु यीशु ने अनेक पुराने नियम के सन्तों के सामने स्वयं को प्रकट किया जैसे अब्राहम, मूसा और दानिय्येल। दानिय्येल ने प्रभु को उनके देहधारण से पहले देखा जबकि यूहन्ना ने प्रभु को उनके क्रूस की मृत्यु और पुनरुत्थान के पश्चात महिमान्वित रूप में देखा। प्रभु के दर्शन का प्रभाव दानिय्येल और यूहन्ना पर एक जैसा था। दानिय्येल कहता है, ''तब मैं अकेला रहकर यह अद्भुत दर्शन देखता रहा, इससे मेरा बल जाता रहा, मैं भयातुर हो गया, और मुझ में कुछ भी बल न रहा।'' (दानि. 10:8)। यूहन्ना कहता है ''जब मैं ने उसे देखा तो उसके पैरों पर मुर्दा सा गिर पड़ा।'' (प्रका. 1:17)।

दानिय्येल के मित्रों ने प्रभु को नहीं देखा। ''उसको केवल मुझ दानिय्येल ही ने देखा, और मेरे संगी मनुष्यों को उसका कुछ भी दर्शन न हुआ, परन्तु वे बहुत ही थरथराने लगे, और छिपने के लिए भाग गए। तब मैं अकेला रहकर यह अद्भुत दर्शन देखता रहा, इससे मेरा बल जाता रहा, मैं भयातुर हो गया और मुझ में कुछ भी बल न रहा। तौभी मैंने उस पुरुष के वचनों का शब्द सुना। तब मैं मुँह के बल गिर गया

और गहरी नींद में भूपि पर औंधे मुँह पड़ा रहा।'' (दानि. 10:7-9)। प्रभु ने दोनों से कहा ''मत डर''। (दानि. 10:12; प्रका. 1:17)। वे दोनों ही प्रभु को बहुत प्रिय थे। (दानि. 10:11; यूहन्ना 21:7)।

दानिय्येल की प्रार्थना का उत्तर :

(दानि. 10:10-14) यह माना जाता है कि यह स्वर्गदूत जिब्राएल था। उसने दानिय्येल को तीन बार छुआ (पद 10, 16, 18)। उसने दानिय्येल से कहा, ''हे दानिय्येल मत डर, क्योंकि पहले ही दिन को जब तू ने समझने-बूझने के लिए मन लगाया और अपने परमेश्वर के सामने अपने को दीन किया, उसी दिन तेरे वचन सुने गए, और मैं तेरे वचनों के कारण आ गया हूँ। फारस के राज्य का प्रधान इक्कीस दिन तक मेरा सामना किए रहा, परन्तु मीकाएल जो मुख्य प्रधानों में से है, वह मेरी सहायता के लिए आया, इसलिए मैं फारस के राजाओं के पास रहा।

दानिय्येल इस स्वर्गीय दर्शन के कारण बहुत कमज़ोर हो गया था। तब मनुष्य के समान किसी ने दानिय्येल को छूकर उसका हियाब बंधाया और उससे कहा, ''हे अति प्रिय पुरुष, मत डर, तुझे शांति मिले, तू दृढ़ हो और तेरा हियाब बंधा रहे। अब मैं फारस के प्रधान से लड़ने को लौटूँगा और जब मैं निकलूँगा, तब यूनान का प्रधान आएगा।'' ये ''प्रधान'' शैतान के प्रतिनिधि हैं जो आत्मिक शक्तियों का विरोध करने के लिए ठहराए गए हैं।

जिब्राएल दानिय्येल को यह बताने आया था कि सच्ची बातों से भरी हुई पुस्तक में क्या लिखा है। जिब्राएल दानिय्येल को बताने आया था कि इस्राएल के लिए परमेश्वर की क्या योजना है। इसे दानिय्येल 11:2-35 में पढ़ते हैं।

प्रश्न :

1. दानिय्येल ने किस स्थान पर दर्शन देखा?
2. दानिय्येल के दर्शन और यूहन्ना के दर्शन की तुलना करें।
3. दर्शन का अर्थ बताने कौन आया था?
4. प्रभु यीशु के देहधारण से पहले और महिमान्वित रूप की तुलना करें।

पाठ–25

दानिय्येल (13)

(दानिय्येल अध्याय 11:1-35)

सुनहरा पद : दानि. 11:32

"और जो लोग दुष्ट होकर उस वाचा को तोड़ेंगे, उनको वह चिकनी-चुपड़ी बातें कह-कहकर भक्तिहीन कर देगा, परंतु जो लोग अपने परमेश्वर का ज्ञान रखेंगे, वे हियाव बाँधकर बड़े काम करेंगे।" (दानि. 11:32)।

जब यह अध्याय लिखा गया था, तब पद 1-35 भविष्यद्वाणी थी। परन्तु अब यह इतिहास बन चुका है क्योंकि वे बातें अक्षरशः पूरी हो चुकी हैं। पद 36-45 में दी गई बातों का अभी पूरा होना बाकी है। यहूदी इतिहासकार जोसीफस कहते हैं कि 332 ई.पू. में जब सिंकदर यरूशलेम पहुँच रहे थे, तब महायाजक की अगुवाई में एक प्रतिनिधि मंडल ने जाकर उसे दानिय्येल की पुस्तक में से वह भाग दिखाया जो स्वयं उसके विषय में भविष्यद्वाणी थी।

स्वर्गदूत ने दानिय्येल को छूकर उसका हियाब बंधाया और कहा, "हे अति प्रिय पुरुष, मत डर, तुझे शांति मिले, तू दृढ़ हो और तेरा हियाब बंधा रहे।" (10:19)। उन शब्दों को सुनकर दानिय्येल ने शारीरिक और मानसिक रूप से हियाब बांधा और उसकी बातें सुनने के लिए तैयार हो गया। स्वर्गदूत ने दानिय्येल को वे बातें बताई जो इस्राएल के साथ जल्दी ही घटने वाली थीं

युद्ध, जो शीघ्र ही होने वाले थे :

दारा नामक मादी राजा के राज्य के पहले वर्ष में दानिय्येल को हियाव दिलाने और बल देने के लिए स्वर्गदूत आया। (11:1)। स्वर्गदूत ने दानिय्येल से कहा, "फारस के राज्य में अब तीन राजा और उठेंगे,

और चौथा राजा उन सभों से धनी होगा, और जब वह धन के कारण सामर्थी होगा, तब सब लोगों को यूनान के राज्य के विरुद्ध उभारेगा। उसके बाद एक पराक्रमी राजा उठकर अपना राज्य बहुत बढ़ाएगा। जब वह बड़ा होगा, तब उसका राज्य टूटेगा और चारों दिशाओं में बंटकर अलग-अलग हो जाएगा (11:4)। उसका राज्य उखड़कर और लोगों को प्राप्त होगा। यहाँ जिस पराक्रमी राजा की भविष्यद्वाणी की गई है, वह सिंकदर महान ही था। उसका राज्य बड़ा और महान था। परन्तु 33 वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई और उसका राज्य चार भागों में बंट गया। (पद 4)। इस्राएल के राज्य के संबंध में, मिस्र को दक्षिणी राज्य और सीरिया को उत्तर का राज्य कहा गया है।

प्रश्न :

1. दानिय्येल के अध्याय 11 के कितने पद तक की भविष्यद्वाणी पूरी हो चुकी है?
2. यहूदी इतिहासकार जोसीफस सिकंदर महान के विषय में क्या कहते हैं?
3. दर्शन देखकर दानिय्येल जब बलहीन हो गया था तब स्वर्गदूत ने उससे क्या कहा?
4. पराक्रमी राजा कौन था और उसके राज्य के विषय में क्या कहा गया था?

पाठ-26

दानिय्येल (14)

(दानिय्येल अध्याय 11:36-45)

सुनहरा पद : दानिय्येल 11:44

''इतना करने पर भी उसका अंत आ जाएगा, और कोई उसका सहायक न रहेगा।'' (दानिय्येल 11:45)

यह पूर्वानुमानित भविष्यद्वाणी है जिसमें सीरिया के दुष्ट राजा (पद 21-35) और ख्रीस्त विरोधी (पद 36-45) के लिए दिए गए संदेश पर ज़ोर दिया गया है। दोनों का नाम नहीं दिया गया है परन्तु पहला दूसरे का प्रतीक है।

दानिय्येल के प्रत्येक अध्याय के आगे बढ़ने के साथ ही विश्वासियों के शत्रु ख्रीस्त विरोधी की तस्वीर स्पष्ट होती जाती है।

ख्रीस्त विरोधी : (11:35-45)

''वह राजा अपनी इच्छा के अनुसार काम करेगा'' (11:36; तुलना करें-प्रका. 13:7; 17:13) ''और अपने आप को सारे देवताओं से ऊँचा और बड़ा ठहराएगा, वरन् सब देवताओं के परमेश्वर के विरुद्ध भी अनोखी बातें कहेगा। जब तक परमेश्वर का क्रोध शांत न हो जाए तब तक उस राजा का कार्य सफल होता रहेगा, क्योंकि जो कुछ निश्चय करके ठना हुआ है वह अवश्य ही पूरा होने वाला है।'' (11:36)। ''वह अपने पुरखाओं के देवताओं की चिन्ता न करेगा, न स्त्रियों की प्रीति की कुछ चिन्ता करेगा और न किसी देवता की, क्योंकि वह अपने आप को सभों के ऊपर बड़ा ठहराएगा।'' (पद 37)। ख्रीस्त विरोधी सभी संगठित धर्मों के ऊपर आक्रमण करेगा। वही ''भेद-बड़ा बेबीलोन पृथ्वी की वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता'' का भी नाश करेगा (प्रका. 17:5;) जो कि 'विश्व चर्च' है। ''इतना करने पर भी उसका

अन्त आ जाएगा और कोई उसका सहायक न रहेगा।'' (11:45 तुलना करें प्रका. 19:11-21)।

प्रश्न :

1. पूर्वानुमानित भविष्यद्वाणी क्या है।
2. यह संदेश किसके लिए है?
3. ख्रीस्त विरोधी कैसे कार्य करेगा?
4. अंत में उसका क्या होगा?

पाठ–27

दानिय्येल (15)

(दानिय्येल अध्याय 12)

सुनहरा पद : दानि. 12:3

''तब सिखाने वालों की चमक आकाशमण्डल की सी होगी, और जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा तारों के समान प्रकाशमान रहेंगे।'' (दानि. 12:3)

अध्याय 12 का आरंभ ''उसी समय'' शब्दों के साथ होता है जिसका अर्थ है, ''अंत के समय के दौरान''। यह वह समय है जब ख्रीस्त विरोधी इस्राएल के साथ अपनी वाचा को तोड़ेगा और मंदिर पर कब्जा कर लेगा और स्वयं को ईश्वर करके ठहराएगा। दानिय्येल के सत्तर सप्ताहों के अंत के साढ़े तीन वर्ष भयंकर पीड़ा के होंगे। इस भयंकर समय में ख्रीस्त विरोधी इस्राएल के साथ युद्ध करेगा, परन्तु मीकाएल स्वर्गदूत जो यहूदियों की सुरक्षा के लिए तैनात किया गया है, वह उनकी सहायता के लिए आएगा। परमेश्वर के चुने हुए लोग सुरक्षित रहेंगे। उनमें वे 144,000 लोग भी होंगे जिन पर प्रभु की छाप लगी है। अब्राहम से किए अपने वायदे के अनुसार परमेश्वर बचे हुए यहूदियों को उस राज्य में पहुँचाएँगे जिसकी उनसे प्रतिज्ञा की गई थी।

दानिय्येल को यह भी बताया गया कि अनेक मृतक जी उठेंगे। जब प्रभु यीशु अपनी कलीसिया को लेने बादलों पर आएँगे, तब जो प्रभु में मरे हैं वे पहले जी उठेंगे तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएँगे कि प्रभु के साथ रहें। (1 थिस्स. 4:13–18)।

क्लेश के समय के अंत में प्रभु अपने लोगों के साथ पृथ्वी पर लौटेंगे और वे उस विजय और महिमा में भागीदार होंगे। उस समय पुराने नियम के संत और क्लेश काल के शहीद जिलाए जाएँगे ताकि उस

राज्य में प्रवेश कर सकें। परन्तु जो लोग प्रभु पर विश्वास किए बगैर मर गए वे इस राज्य के युग के अन्त होने तक जीवित नहीं होंगे, परन्तु उसके बाद उनका न्याय होगा। जैसे दानिय्येल कहता है कि कुछ लोग जी उठेंगे ताकि परमेश्वर के साथ महिमामय जीवन का आनंद उठाएँ, परन्तु कुछ लोग जी उठेंगे (एक हजार वर्ष के पश्चात्) कि अनंतकाल के शर्म और दण्ड को भोगें।

मसीह के न्याय आसन के सामने हमें क्या प्रतिफल मिलेगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम ने कैसा जीवन व्यतीत किया और प्रभु की सेवा की। हम प्रभु की महिमा के भागीदार होंगे और जिन्होंने अन्य लोगों को प्रभु के पास लाने में परिश्रम किया वे स्वर्ग में तारों के समान चमकेंगे। प्रभु ने जोर देकर कहा कि जो लोग उनके प्रति सच्चे और वफादार रहेंगे वे आने वाले राज्य में उत्तराधिकार और प्रतिफल प्राप्त करेंगे। (मत्ती 13:43; लूका 19:12-27; प्रका. 2:26-27)। प्रभु के सेवक को किसी बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिए क्योंकि प्रभु सही समय पर उन्हें निर्देश देते और उनका मार्गदर्शन करते हैं। अपने लंबे जीवन काल में दानिय्येल ने विश्वासयोग्यता के साथ प्रार्थना की और वचन का अध्ययन किया और प्रभु की सेवा करने का प्रयत्न किया। परमेश्वर ने हमेशा उसकी सहायता की, अगुवाई की, सुरक्षा की और अपनी महिमा के लिए उसका उपयोग किया। आज हम भविष्यद्वाणी का अध्ययन कर सकते हैं क्योंकि उस समय दानिय्येल विश्वस्त रहा।

यद्यपि दानिय्येल ने परमेश्वर से प्राप्त सभी भविष्यद्वाणियों को लिख लिया तौभी वह उन्हें पूरी तरह से समझ नहीं पाया था। तब उसे निर्देश दिया गया कि "हे दानिय्येल, चला जा, क्योंकि ये बातें अन्त समय के लिए बन्द हैं और इन पर मुहर दी हुई है।" (पद 9)।

दानिय्येल को यह सूचना भी दी गई थी कि "जब पवित्र प्रजा की शक्ति टूटते-टूटते समाप्त हो जाएगी, तब ये सब बातें पूरी होंगी।" (पद 7)। वे इस्राएली और अन्यजाति लोग जो मसीही बन गए, उनका संसार के शासक के द्वारा न्याय होगा। दानिय्येल ने फिर से कहा कि उसे

भविष्यद्वाणी का अर्थ समझ नहीं आया अतः उसने पूछा, ''हे मेरे प्रभु, इन बातों का अन्तफल क्या होगा?'' तब स्वर्गदूत ने उसे उत्तर दिया, ''हे दानिय्येल, चला जा, क्योंकि ये बातें अन्त समय के लिए बन्द हैं, और उन पर मुहर दी हुई है।'' (पद 8-9)। दानिय्येल को यह भी बताया गया कि ''बहुत से लोग तो अपने-अपने को निर्मल और उजले करेंगे, और स्वच्छ हो जाएँगे, परन्तु दुष्ट लोग दुष्टता ही करते रहेंगे।'' (पद 10)। अंततः अंत समय के अंत में ''नित्य होमबलि उठाई जाएगी, और वह घिनौनी वस्तु जो उजाड़ करा देती है, स्थापित की जाएगी, तब से 1290 दिन बीतेंगे। क्या ही धन्य है वह, जो धीरज धरकर 1335 दिन के अंत तक भी पहुँचे।'' (पद 11-12)। महान क्लेश के अंतिम साढ़े तीन वर्ष में नित्य होमबलि समाप्त करके घृणित वस्तु को मंदिर में लाया जाएगा। (7:25; 9:27, प्रका. 11:2-3)। यह न्याय का भयंकर समय होगा।

स्पष्टतः दानिय्येल को इन भविष्यद्वाणियों का अर्थ समझ में नहीं आया। उसे कहा गया कि उसकी मृत्यु के पश्चात् यह होगा, ''अब तू जाकर अन्त तक ठहरा रह, और तू विश्राम करता रहेगा, और उन दिनों के अन्त में तू अपने निज भाग पर खड़ा होगा।'' (12:13)।

दानिय्येल ने सर्वज्ञानी परमेश्वर के सम्मुख अपना जीवन व्यतीत किया और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले कार्य किए। उसने उन संदेशों को लोगों तक पहुँचाया जो परमेश्वर ने उसे दिए थे और उसके परिणाम को परमेश्वर पर छोड़ दिया। गीतकार फिलिप पी. ब्लिस के द्वारा लिखे गए गीत का स्थायी कहता है-

''दानिय्येल बनने का साहस है!
अकेले खड़े होने का साहस है!
दृढ़ उद्देश्य का साहस है!
उसे सबको बता देने का साहस है!''

प्रश्न :

1. ख्रीस्त विरोधी इस्राएल के साथ बाँधी गई वाचा को कब तोड़ेगा?
2. महाक्लेश के समय यहूदियों की सुरक्षा किसे सौंपी गई है?
3. पुराने नियम के संत और शहीद कब जी उठेंगे?
4. मसीह यीशु पर विश्वास किए बगैर जो मर गए वे कब जी उठेंगे?
5. महाक्लेश के अंतिम साढ़े तीन वर्षों में क्या होगा?

पाठ-28

पुराने व नए नियम के बीच (1)

''देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले, मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूँगा। वह माता-पिता के मन को उनके पुत्रों की ओर, और पुत्रों के मन को उन के माता-पिता की ओर फेरेगा; ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी का सत्यानाश करूँ।'' (मलाकी. 4:5-6)

पुराने नियम की अंतिम पुस्तक मलाकी और नए नियम की पहली पुस्तक मत्ती के बीच लगभग 400 वर्षों का लंबा अंतराल रहा। इतिहासकार इस अंतराल को ''नि:शब्द वर्ष'' कहते हैं। हम इसे ''तैयारी के वर्ष'' कह सकते हैं। संसार के मुक्तिदाता के आने की तैयारी के वर्ष। इन वर्षों में कोई प्रकटीकरण नहीं दिए गए। इस अंतराल में किसी भी भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वाणी नहीं की।

जब मलाकी ने अपनी पुस्तक लिखी तब यहूदियों का देश फारसी साम्राज्य के भीतर था। अगले सौ वर्षों तक वह ऐसा ही रहा जब तक कि सिकंदर महान ने उस पर कब्जा न कर लिया।

यूनान विभाजित देश था जिस पर एथेंस, स्पार्टा और कुरिन्थ जैसे महत्वपूर्ण शहरों ने शासन किया। फिलिप ऑफ मेसीड़ोन (382-336) ने समस्त यूनान पर अपना शासन बनाकर रखा। जब वह फारसी साम्राज्य को जीतने की योजना बना रहा था, उसी समय उसकी हत्या हो गई। उसकी योजना को उसके पुत्र सिकंदर ने आगे बढ़ाया। उसने एक नया विश्व बनाने का स्वप्न देखा जो यूनानी संस्कृति और भाषा के द्वारा आपस में जुड़ा हो। सिकंदर महान पूरे संसार में सुसमाचार को फैलाने के लिए परमेश्वर के हाथ में एक उपकरण की तरह था। नए नियम को पहले यूनानी भाषा में ही लिखा गया क्योंकि वह उस समय की प्रचलित भाषा थी। 332 ई.पू. तक पलिश्तीन भी, फैलते हुए यूनानी साम्राज्य का हिस्सा बन गया था। इतिहास इस बात का गवाह है कि सिकंदर महान

ने यहूदियों के साथ उदारता के साथ व्यवहार किया। 323 में 33 वर्ष की उम्र में सिकंदर महान की मृत्यु हो गई। अगले 150 वर्षों तक उसके साम्राज्य पर कब्जा करने के लिए उसके उत्तराधिकारियों के बीच में खींचा तानी चलती रही, और इस्राएल उसके बीच में फँसा रहा।

भूमध्यसागर से लगभग अठारह मील की दूरी पर 753 ई.पू. के आसपास रोम शहर के स्थापना हुई। आरंभ में यह एक छोटा शहर था, परन्तु धीरे-धीरे इसने पूरे इटली, उत्तरी अफ्रीका, यूनान आदि को अपने नियंत्रण में कर लिया। बाद में 48 ई.पू. में पोम्पी ने सत्ता खो दी और उसके पुराने साथी जूलियस कैसर ने 44 ई.पू. तक सत्ता संभाली। फिर उसकी हत्या हो गई। फिर उसके दत्तक पुत्र ओक्टेवियन सिंहासन पर बैठा। 27 ई.पू. में रोमी राज सभा ने ओक्टेवियन को ''औगुस्तुस'' नाम की उपाधि दी। इसी औगुस्तुस कैसर ने रोमी साम्राज्य की पुन: स्थापना की और अगले दो दशकों तक उसके साम्राज्य में शांति और समृद्धि बनी रही। औगुस्तुस का शासन काल रोमी इतिहास का सुनहरा युग था। यह कारण बनता है कि हम उस परमेश्वर के विषय में सोचें जो अपने अनंत उद्देश्यों को पूरा करने के लिए इतिहास के द्वारा कार्य करता है। यहूदिया में दिव्य घटनाओं के होने के लिए वह कितना सटीक समय था। जिसके विषय में प्रेरित पौलुस कहते हैं ''परन्तु **जब समय पूरा हुआ,** तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ, ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले। और तुम जो पुत्र हो, इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो 'हे अब्बा, हे पिता' कहकर पुकारता है, हमारे हृदयों में भेजा है।'' (गला. 4:4-6)।

प्रश्न :

1. ''नि:शब्द वर्ष'' का क्या अर्थ है?
2. यह नाम क्यों पड़ा?
3. किस राजा ने समस्त यूनान पर अपना शासन बना कर रखा?
4. सिकंदर महान परमेश्वर के हाथ में एक उपकरण था-व्याख्या करें।
5. ''जब समय पूरा हुआ'' का क्या अर्थ है?

पाठ–29

पुराने व नए नियम के बीच (2)

''जब तक मैं न आऊँ, तब तक पढ़ने और उपदेश देने और सिखाने में लौलीन रह।'' (1 तीमु. 4:13)।

''जो बागा मैं त्रोआस में करपुस के यहाँ छोड़ आया हूँ, जब तू आए तो उसे और पुस्तकें विशेष करके चर्मपत्रों को लेते आना।'' (2 तीमु. 4:13)।

यद्यपि इन दो नियमों के दिए जाने के मध्य काल में कोई भी नई भविष्यद्वाणी लिखी नहीं गई, फिर भी यह एक ऐसा समय रहा जब उस युग को संबोधित करने वाला ढेर सारा साहित्य यहूदी लोगों ने प्रस्तुत किया। इनमें तीन सबसे मुख्य हैं-सेप्टुआगिंट, अपोक्रिफा, और मृत सागर दस्तावेज़।

सेप्टुआगिंट : 250 ई.पू. के लगभग पुराने नियम का यूनानी अनुवाद सेप्टुआगेंट के द्वारा उन यहूदियों को और समस्त यूनानी भाषा बोलने वालों को वचन प्राप्त हुआ जो अब अपनी पैतृक भाषा नहीं बोलते थे।

अपोक्रिफा : नि:शब्द वर्षों में लिखे गए लेखों का संग्रह अपोक्रिफा कहलाता है। इसको पवित्र आत्मा की प्रेरणा के द्वारा लिखा गया है, ऐसा माना जाता है परन्तु इस बात का सत्य होना कलीसिया के इतिहास में चर्चा और वाद-विवाद का विषय रहा है। आज के दिन अपोक्रिफा केथोलिक और पूर्वी ऑरथोडॉक्स बाइबल में ही पाया जाता है, प्रोटेस्टेंट बाइबल में नहीं है। क्योंकि उनमें गलतियाँ और मनुष्य की कल्पनाएँ ही पाई जाती हैं।

मृत सागर दस्तावेज़ : मृत सागर दस्तावेज़ों का मिलना आधुनिक युग का एक महत्वपूर्ण खोज है। 1947 में एक अरबी चरवाहे लड़के को कुछ दस्तावेज़ मिले जब वह अपनी खोई हुई बकरी को ढूँढ़ रहा था।

उन दस्तावेज़ों में पुराने नियम की पुस्तकें, अपोक्रिफा की कुछ पुस्तकें, भविष्यसूचक पुस्तकें और उस गुट की पुस्तकें जो इन्हें लिखती हैं, आदि प्राप्त हुईं।

जो दस्तावेज़ मिले उनमें एक तिहाई बाइबल पर आधारित थी जिनमें भजन संहिता, व्यवस्थाविवरण और यशायाह भी थे। बाइबल के पाठकों के लिए यह एक महत्वपूर्ण बात है कि पुराने नियम के दस्तावेज़ों को किस प्रकार सुरक्षित रखा गया। यद्यपि उस कालाविधि में परमेश्वर ने कोई नया वचन नहीं दिया परन्तु जो पहले से दिया गया था उसे सुरक्षित रखा।

जब हम नए नियम के युग में आते हैं, तब हम यहूदियों के आराधनालयों और धार्मिक गुटों को देखते हैं जिनका वर्णन हम पुराने नियम में नहीं पाते। फिर वे कहाँ से आए? बाइबल के विद्वान कहते हैं कि इनका आरंभ बेबीलोन की बंधुआई के समय में हुआ जब यहूदी लोगों को परमेश्वर के मंदिर से दूर किया गया। प्रभु यीशु के समय तक ये यहूदी आराधनालय अच्छी तरह स्थापित हो चुके थे जहाँ यहूदी समूह आराधना और प्रार्थना के लिए एकत्र होते थे। प्रभु यीशु मंदिर में और इन यहूदी आराधनालयों में जाकर शिक्षा देते थे और रोगियों को चंगा करते थे।

दोनों नियमों के दिए जाने के बीच की कालाविधि में अनेक प्रकार के प्रभावों ने यहूदी समाज को विभिन्न धार्मिक गुटों में बाँट दिया था जिनमें मुख्य एस्सेनेस, फरीसी और सदूकी थे।

एस्सेनेस : शहरी जीवन और उसके कारण धार्मिक जीवन के पतन से असंतुष्ट होकर कुछ लोगों ने स्वयं को यहूदी धर्म से बाहरी रूप से अलग कर लिया और सभ्यता से दूर संन्यास लेकर रहने लगे। वे कमरान गुफाओं के आस पास समूहों में रहने लगे और अपना समय वचन के अध्ययन और मनन में व्यतीत करने लगे। पुराने नियम के दस्तावेज़ों को संभालकर रखने के लिए हम उनके आभारी हैं।

फरीसी : ये यहूदी आराधनालय के ही लोग थे। वे संरक्षक, लिखने

वाले, और व्यवस्था के व्याख्या करने वाले लोग थे। दुर्भाग्य से वे व्यवस्था की गलत व्याख्या करते थे। जीवन में व्यवस्था को लागू करने की चाहत में उन्होंने बहुत सारे नियम कानून बना लिए जिन्हें मौखिक व्यवस्था कहते हैं। उन ही बातों ने परंपरा बनकर व्यवस्था का पालन करने में अवरोध उत्पन्न कर दिया।

सदूकी : ये भी मंदिर से जुड़े लोग थे, परन्तु इनके द्वारा यहूदी समाज में यूनानी विचारधारा और संस्कृति का प्रवेश हुआ। उनका विश्वास था कि शरीर के साथ ही आत्मा की भी मृत्यु हो जाती है। वे पुनरुत्थान पर विश्वास नहीं करते।

सेन्हेदरीन : यह यहूदियों का 70 लोगों का राजनीतिक धार्मिक समूह होता था। यहूदियों के धार्मिक और राजनैतिक जीवन पर इनका अधिकार होता था। यह सेन्हेदरीन ही था जिसने प्रभु यीशु को क्रूस पर चढ़ाने का निर्णय लिया था।

प्रश्न :

1. सेप्टुआगिंट क्या है? उसका क्या महत्व है?
2. अपोक्रिफा को बाइबल का भाग क्यों नहीं माना जाता?
3. ''मृत सागर दस्तावेज'' क्या है? वे कहाँ पाए गए? वे महत्वपूर्ण क्यों हैं?
4. प्रभु यीशु के समय के धार्मिक समूह कौन से थे?
5. यहूदी आराधनालयों का आरंभ कैसे हुआ?

पाठ–30

उद्धार

परिचय :

उद्धार का साधारण सा अर्थ है छुटकारा। यह उस क्रिया का वर्णन करता है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति का किसी खतरे से बचाव किया जाता है। हम किसी व्यक्ति को डूबने से बचाना, जलती इमारत में से बचाना या डूबते जहाज़ में से बचाना आदि कहते हैं। प्रत्येक स्थिति में तीन बातें सोची जाती हैं–

1. वह व्यक्ति खतरे में है जिसे बचाया जाता है।

2. किसी ने उसकी विपत्ति देखी और उसे बचाने गया।

3. बचाने वाला अपने उद्देश्य में सफल रहा। उसने उस व्यक्ति को जो विपत्ति में था बचा लिया अत: उसका छुटकारा किया।

परिभाषा : बचाना, छुड़ाना, उद्धार करना, उद्धारकर्ता, उद्धार आदि शब्द बाइबल में अनेक बार आए हैं जिनका तात्पर्य आत्मिक बचाव या छुटकारे से ही है। छुटकारे का विचार प्रभु यीशु के नाम पर ही केंद्रित होता है। इब्रानी नाम यहोशू का यूनानी रूप है 'यीशु'। यहोशू का अर्थ है– यहोवा–छुड़ाने वाला। इस्राएल के सेनापति के लिए यह कितना महान नाम है। यहोशू और उसके योद्धाओं को यह नाम स्मरण दिलाता रहा कि "उद्धार यहोवा ही से है।" इस नाम के अर्थ के कारण ही हमारे प्रभु को भी उसके जन्म के समय यह नाम दिया गया। "तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उन के पापों से उद्धार करेगा।" (मत्ती 1:21)। हम तब तक प्रभु यीशु को नहीं जानते जब तक कि हम उन्हें अपने उद्धारकर्ता की तरह नहीं पहचानते। क्योंकि उनका नाम ही यह प्रकट करता है कि वह कौन हैं।

मनुष्य को छुटकारे की आवश्यकता है क्योंकि वह पापी है। अपने कार्य का वर्णन करते हुए प्रभु ने कहा, "मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को

ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।'' (लूका 19:10)। जिनका उद्धार नहीं हुआ वे खोए हुए हैं। बाइबल में उद्धार शब्द का अर्थ है-खोए हुए पापी को बचाना।

आवश्यकता : मनुष्य का पापी स्वभाव एक सत्य है। समय-समय पर यह पापमय विचारों, शब्दों, कार्यों और रवैए के द्वारा परमेश्वर से शत्रुता को प्रकट करता है।

निम्नलिखित पद इस बात को स्पष्ट करते हैं-रोमियों 5:12, 18, 19; 6:16; 8:5-8; उत्पत्ति 6:5; इफि. 2:1-3; 2 कुरि 4:3, 4; यशा. 53:6; यिर्म. 17:9; मरकुस 7:20-23; रोमियों 1:21-32; 3:19-23।

इन पदों से यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य पापी है और उसे क्षमा की आवश्यकता है। मनुष्य खोया हुआ है, उसे ढूँढ़े जाने की आवश्यकता है। वह बरबाद है उसे बचाया जाना है। मनुष्य दोषी है उसे क्षमा की आवश्यकता है। वह आत्मिक रूप से मरा हुआ है उसे जीवन की आवश्यकता है। वह अंधा है उसे ज्योति की आवश्यकता है। वह गुलाम है उसे स्वतंत्रता की आवश्यकता है। मनुष्य स्वयं को बचाने में असमर्थ है।

परमेश्वर पवित्र हैं और पाप को दण्ड देना होगा। परमेश्वर ने यह स्पष्ट किया है कि वे पाप से घृणा करते हैं और जो लोग पाप में रहकर मर जाते हैं वे सदाकाल के लिए परमेश्वर की उपस्थिति से दूर रहेंगे। (पढ़ें-यूहन्ना 8:21-24; मरकुस 9:43-48; लूका 16:22-31; यहूदा 11-13; प्रका. 20:11-15)। निष्कर्ष स्पष्ट है। क्योंकि मनुष्य पापी है और परमेश्वर धर्मी हैं, अत: पापी का उसके पापों के दण्ड से छुटकारा आवश्यक है।

उसका प्रावधान : सुसमाचार परमेश्वर का शुभ संदेश है कि परमेश्वर ने अपने अद्‌भुत अनुग्रह से अपने प्रिय पुत्र के द्वारा इस उद्धार का प्रावधान किया। मत्ती 1:21 के अनुसार वह पापियों का उद्धारकर्ता बनने के लिए आए। अनंत परमेश्वर और पवित्र आत्मा के बराबर होने पर भी उद्धार का प्रावधान करने के लिए प्रभु यीशु ने देहधारण किया। (यूहन्ना

3:16-17; 10:11, 15-18; मरकुस 10:45; मत्ती 9:12-13)।

परमेश्वर की अनंत योजनानुसार मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा मनुष्यजाति के लिए इस उद्धार का प्रावधान किया गया। जब प्रभु स्वेच्छा से क्रूस पर लटके थे तब उन्होंने स्वेच्छा से हमारे पापों और अपराधों को अपने ऊपर उठा लिया और हमारे बदले अपना बलिदान दे दिया। मनुष्यजाति के पापों का न्याय और दण्ड प्रभु पर पड़ा और मसीह की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर के धार्मिकता की माँग पूरी हुई। परमेश्वर ने प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाकर और अपने दाहिने हाथ बैठाकर इस विषय में पूर्ण स्वीकृति प्रदान की। (1 कुरि. 15:1-4; 2 कुरि. 5:21; 1 पतरस 2:24; यशा. 53:5; रोमियों 5:6-9; प्रेरितों 4:10-12; 5:31; 17:31)।

उसकी शर्त : एक पापी के उद्धार के लिए आवश्यक सभी कार्यों को प्रभु यीशु ने अपने बलिदान के द्वारा पूरा कर लिया। अब इस उद्धार को प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना होगा? हमें पश्चाताप करना होगा। पश्चाताप मन का परिवर्तन है जिसके परिणामस्वरूप पाप के प्रति स्वयं के प्रति, उद्धार और उद्धारकर्ता के प्रति भी हमारा रवैया बदल जाता है। यह मन का परिवर्तन हमारे कार्यों के बदल जाने का प्रमाण है। (लूका 13:3; प्रेरितों 17:31; 20:21)।

प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व और कार्य के विषय में सुसमाचार पर हमें विश्वास करना होगा (1 यूहन्ना 5:9,10)। एक खोए हुए पापी के रूप में हमें व्यक्तिगत रूप से यह विश्वास करना होगा कि प्रभु यीशु ने मेरे लिए अपना प्राण दिया। प्रभु ने मेरे पापों को उठाकर, मेरे बदले अपना प्राण दिया और इस प्रकार मेरे उद्धार के लिए आवश्यक कार्य को पूरा कर दिया।

अपनी सम्पूर्ण स्वेच्छा से यह निर्णय लेना हेगा कि प्रभु यीशु ही मेरे उद्धारकर्ता हैं और अब से आगे के जीवन में वही मेरे प्रभु भी है। (यूहन्ना 1:12; रोमियों 10:9-10)।

उसका निश्चय :

एक व्यक्ति को कैसे पता चलता है कि उसका उद्धार हुआ है? परमेश्वर के वचन के द्वारा। परमेश्वर ने यह स्पष्ट रूप से प्रकट किया है कि जो कोई परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है उसे पापों की क्षमा प्राप्त होती है और उसका उद्धार होता है। उसे अनंत जीवन प्राप्त होता है और वह अनंतकाल के लिए सुरक्षित हो जाता है। (प्रेरितों 13:38; 1 यूहन्ना 2:12, इफि. 2:8; 1 कुरि. 6:11; 1 यूहन्ना 5:13; रोमियों 5:1; 8:1; यूहन्ना 10:27-30)।

उसका विस्तार :

भूतकाल : प्रभु यीशु को उद्धारकर्ता स्वीकार करने से पहले के पापों का परिणाम और दण्ड से भी हमें छुटकारा और क्षमा प्राप्त होती है क्योंकि प्रभु यीशु ने पूरा पूरा दण्ड अपने ऊपर उठा लिया। (यूहन्ना 5:24; रोमियों 8:1)।

वर्तमान : वर्तमान में हमें पाप की सामर्थ और नियंत्रण से छुटकारा प्राप्त होता है क्योंकि परमेश्वर पवित्र आत्मा हमारे अंदर वास करते हैं और हमें एक नया स्वभाव भी दिया जाता है। इस कारण पाप हमारे जीवन में राज्य नहीं कर पाता। (1 कुरि. 6:19; 2 पतरस 1:3-4; रोमियों 6:1-14)।

इसका अर्थ यह नहीं है कि एक विश्वासी पाप करने में असमर्थ हो जाता है। हमारे भीतर पुराना स्वभाव रहता है और हम इस शरीर में रहते हैं इस कारण पाप हो सकता है। परन्तु यदि हम अपने जीवन का नियंत्रण पवित्र आत्मा को सौंप देते हैं तब हम पाप के नियंत्रण से बचकर जीवन व्यतीत कर सकते हैं। यह निम्नलिखित बातों पर निर्भर करता है–

1. परमेश्वर के वचन को पढ़ना और उसका पालन करना (2 तीमु. 2:15)

2. प्रार्थना के द्वारा प्रभु के साथ सदा संपर्क में रहना (इब्रा. 4:14-16)।

3. अपने शरीर को परमेश्वर के कार्य और धार्मिकता के लिए उपयोग करना (रोमि. 6:13; 12:1-2)।

4. परमेश्वर के सम्मुख तत्काल पाप अंगीकार करना और सभी ज्ञात पापों को छोड़ देना। (1 यूह. 1:8-9; तीतुस 2:11-15)।

भविष्य : भविष्य में पाप की उपस्थिति से भी हमारा उद्धार होगा। यह तब होगा जब प्रभु यीशु दोबारा आएँगे और जो लोग प्रभु में मरे हैं वे जीवित किए जाएँगे और जो जीवित हैं वे सब भी बदल जाएँगे और उन्हें ऐसा शरीर दिया जाएगा जो न पाप कर सकता है और न मर सकता है। यह उद्धार का अंतिम पहलू है। (इब्रा. 9:28; 1 थिस्स. 4:13-18)।

प्रश्न :

1. ''उद्धार'' की परिभाषा बताएँ। यह मनुष्यजाति के लिए क्यों आवश्यक है?
2. परमेश्वर ने मनुष्यजाति के लिए जिस उद्धार का मार्ग तैयार किया है उसका वर्णन करो।
3. उद्धार पाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?
4. उद्धार के निश्चय का क्या आधार है?
5. भूतकाल, वर्तमान और भविष्य में उद्धार के विस्तार का वर्णन करो।

पाठ-31

उद्धार और पवित्र आत्मा

उद्धार के कार्य में पवित्र आत्मा का महत्वपूर्ण भूमिका है। ''आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। पृथ्वी बेड़ौल और सुनसान पड़ी थी और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था; तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था।'' (उत्पत्ति 1:1-2)। जिस प्रकार पवित्र आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था और फिर जीवन की उत्पत्ति हुई उसी प्रकार आत्मिक रूप से जीवन रहित मनुष्य के जीवन में पवित्र आत्मा कार्य करता है और उसे पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में बोध कराता है। विश्वास करने वाले व्यक्ति को पवित्र आत्मा नया जीवन देता है। नया जन्म या नया जीवन पुराने जीवन को सुधारना नहीं है। यह तत्काल ही होने वाला एक परिवर्तन है। यह नए जन्म के द्वारा हमें नई सृष्टि बनाना है। (2 कुरि. 5:18)। इस नए जन्म में पवित्र आत्मा हमें नया शरीर नहीं देते पर एक नया जीवन देते हैं। हम अपने पुराने शरीर में ही रहते हैं। प्रभु यीशु के दोबारा आगमन पर ही हमें नया शरीर प्राप्त होगा।

पवित्र आत्मा का निवास : हर एक नया जन्म पाए हुए विश्वासी में पवित्र आत्मा का निवास होता है। जिस क्षण एक व्यक्ति अपने पापों से पश्चाताप करके प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करता है, उसी समय पवित्र आत्मा उसके भीतर निवास करने आते हैं। यह अस्थायी नहीं बल्कि एक स्थायी स्थिति है। यदि किसी के भीतर पवित्र आत्मा का निवास नहीं है तो इसका अर्थ है कि उसका उद्धार नहीं हुआ।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा : पवित्र आत्मा का बपतिस्मा तब होता है जब एक व्यक्ति प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता मानता है और उसी क्षण पवित्र आत्मा उसे नया जीवन देकर उसके भीतर निवास करने के लिए आता है और उसके शरीर को परमेश्वर का मंदिर बनाता है। सभी

विश्वासियों को एक बार होने वाली इस घटना का अनुभव होता है। (1 कुरि. 12:13)। वचन में कहीं भी हमें इस बपतिस्मे का इंतज़ार करने के लिए नहीं कहा गया क्योंकि यह उसी क्षण हो चुका होता है और दोहराया नहीं जाता।

पवित्र आत्मा का अभिषेक : सभी मसीहियों का पवित्र आत्मा के द्वारा अभिषेक होता है (2 कुरि. 1:21)। पुराने नियम में भविष्यद्वक्ताओं, याजकों और राजाओं का अभिषेक किया जाता था। उनका अभिषेक उन्हें उनके सेवा कार्य के लिए तैयार करता था। जब हम स्वयं को पवित्र आत्मा के नियंत्रण में कर देते हैं तब वह हमें परमेश्वर की सेवा करने और भक्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करने में सहायता करते हैं। (1 यूहन्ना 2:20,27)।

पवित्र आत्मा की छाप : हम पर पवित्र आत्मा की छाप लगी है। (2 कुरि. 1:22; इफि. 1:13) क्योंकि हम मसीह के हैं। हमारे भीतर पवित्र आत्मा हमारे सच्चे होने की गवाही देता है। (रोमियों 5:5; 8:9)। आत्मा हमें यह निश्चय देता है कि वह हमारी सुरक्षा करेंगे क्योंकि हम प्रभु की संपत्ति हैं।

पवित्र आत्मा हमारा बयाना : पवित्र आत्मा, परमेश्वर की ओर से हमारा बयाना (गारंटी, सुरक्षा) है, कि एक दिन हम प्रभु के साथ स्वर्ग में होंगे (इफि. 1:14)। अपने हृदय में स्वर्गीय आशीषों का आनंद उठाने के लिए पवित्र आत्मा हमारी सहायता करते हैं। बयाना एक रुचिकर शब्द है! पौलुस के समय में किसी ज़मीन जायदाद को पूरा धन देकर खरीदने से पहले थोड़ा धन जिसे बयाना कहते हैं देकर उसे अपना बनाया जाता था। आज के समय में भी यह किया जाता है जिसे 'एडवांस'' कहते हैं। पवित्र आत्मा परमेश्वर की ओर से पहली किश्त है कि हमें खरीदा गया है और हम प्रभु के हैं और अपना कार्य पूरा करके वे हमें अपने पास ले जाएँगे। यह कार्य तब पूरा होगा जब प्रभु दोबारा आएँगे और हमारे शरीरों का भी छुटकारा होगा। (रोमियों 8:18-23; 1 यूहन्ना 3:1-3)।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा, पवित्र आत्मा का अभिषेक, पवित्र आत्मा की छाप और पवित्र आत्मा हमारा बयाना आदि सभी बातों को हमेशा भूतकाल में कहा गया है। इसका अर्थ यह है कि यह एक बार हमेशा के लिए पूरा किया गया कार्य है। दूसरे शब्दों में यह वे कार्य हैं जो नया जन्म प्राप्त व्यक्ति में दोहराए नहीं जाते। तथापि, पवित्र आत्मा की भरपूरी वह है जो जीवन में लगातार होते रहना चाहिए। पवित्र आत्मा की भरपूरी के द्वारा हम विजयी मसीही जीवन जी सकते हैं। हम पवित्र आत्मा से कैसे भरे जा सकते हैं? पवित्र आत्मा एक व्यक्ति हैं। अत: पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना का अर्थ है कि हमें पूरी तरह से स्वयं को पवित्र आत्मा के अधीनता में रखकर अपने जीवन का नियंत्रण उन्हें सौंप देना है। इसका अर्थ यह हुआ कि जितना अधिक हम स्वयं को पवित्र आत्मा के अधीन करते हैं उतना अधिक हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते हैं। आत्मा से परिपूर्ण व्यक्ति ''आत्मिक'' होता है। (1 कुरि. 2:12-3:3)।

इस भाग में प्रेरित पौलुस लोगों को तीन वर्गों में बाँटते हैं-

स्वाभाविक	जिसका नया जन्म नहीं हुआ।
शारीरिक	जिसका नया जन्म हो चुका परन्तु वह ''स्वयं'' से भरा हुआ आत्मिक शिशु है।
आत्मिक	नया जन्म प्राप्त, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण परिपक्व मसीही

रोमियों 8:9 कहता है - ''परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं, तो वह उसका जन नहीं।'' उद्धार प्राप्त व्यक्ति के विषय में रोमियों 8:16 कहता है- ''आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की संतान हैं।'' हमारा शरीर परमेश्वर का मंदिर बन जाता है। (1 कुरि. 6:19-20)। यद्यपि शरीर को नाश होना है तौभी आत्मा जीवन देता है ताकि हम परमेश्वर की सेवा कर सकें। यदि हमारी मृत्यु हो जाए तौभी यह शरीर

प्रभु के आगमन पर जिलाया जाएगा, क्योंकि पवित्र आत्मा ने हर एक विश्वासी पर छाप दी है। (इफि. 1:13–14)।

प्रश्न :

1. नया जन्म क्या है?
2. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा कब होता है?
3. पुराने नियम में किसका अभिषेक किया जाता था?
4. नए नियम में किसका अभिषेक होता है? और यह कब होता है?
5. किसी व्यक्ति के भीतर पवित्र आत्मा का न होना क्या बताता है?
6. पवित्र आत्मा की छाप किस बात की गारंटी या निश्चय है?
7. ''बयाना'' हमारे जीवन में क्या अर्थ रखता है?
8. पवित्र आत्मा का कौन-सा कार्य विश्वासी के जीवन में दोहराया जाता है?
9. हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण कैसे होते हैं?

पाठ-32

उद्धार की सुरक्षा

(उद्धार की सुरक्षा के विरुद्ध दिए जाने वाले तर्कों का खंडन)

बाइबल के कुछ भाग ऐसे हैं जिनसे यह प्रतीत होता है कि उद्धार प्राप्त व्यक्ति का उद्धार सुरक्षित नहीं है अत: वह नष्ट हो सकता है। हम ऐसे ही कुछ तर्कों को देखेंगे जो महत्वपूर्ण प्रतीत होते हैं।

नाम को काटना : (निर्गमन 32:32)

इस्राएलियों के लिए मध्यस्थता करते हुए मूसा ने यह कहा था ''तौभी अब तू उनका पाप क्षमा कर-नहीं तो अपनी लिखी हुई पुस्तक में से मेरे नाम को काट दे।'' यहोवा ने मूसा से कहा, ''जिसने मेरे विरुद्ध पाप किया है, उसी का नाम मैं अपनी पुस्तक में से काट दूँगा।'' (पद 33) यहाँ तर्क यह है कि ''परमेश्वर की पुस्तक में से नाम के काटे जाने की संभावना है। इस कारण कुछ लोग तर्क देते हैं कि उद्धार नष्ट हो सकता है।

मूसा ने प्रार्थना की थी कि जो नाम परमेश्वर ने लिखा था उसे वह काट दें। हम जानते हैं कि स्वर्ग में अनेक पुस्तकें हैं-(भजन 69:28; यशा. 4:3; दानि. 12:1; भजन 56:8; मलाकी 3:16; यशा. 65:6; प्रका. 20:12)। भजन 69:28 में जिन पुस्तक का वर्णन है वह है ''जीवन की पुस्तक''। यह स्पष्ट है कि मनुष्य के जन्म के समय उसका नाम उस पुस्तक में लिखा जाता है और उसकी मृत्यु के समय वह काटा जाता है। अत: यहाँ इस तर्क में उद्धार का तात्पर्य नहीं है।

छ: लाख इस्राएलियों की मृत्यु : (गिनती 14; व्यवस्था 1:33-38)। यहाँ पर तर्क यह है कि छ: लाख लोग वायदे के देश में पहुँचने से पहले ही मर गए। अत: परमेश्वर के लोग जो पाप करते हैं वे स्वर्ग नहीं पहुँच पाएँगे। सत्य यह है कि मरुभूमि की मृत्यु उद्धार के नष्ट होने को नहीं बताती। नए नियम के विश्वासी के लिए वायदे की भूमि स्वर्ग

नहीं बल्कि इस संसार में रहकर आत्मिक आशीषें को प्राप्त करना व उसका आनंद उठाना है। (इफि. 1:3) इस बात पर ध्यान दें कि मूसा की भी बगैर वायदे के देश में पहुँचे, जंगल में ही मृत्यु हो गई थी। परन्तु प्रभु यीशु के रूपांतर के समय पर मूसा भी उस पर्वत पर थे। अतः मरुभूमि में मृत्यु होना उद्धार को खोना नहीं है।

उद्धार के लिए अंत तक धीरज धरना है :

(मत्ती 24:13) ''परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।'' यह पद एक भविष्यद्वाणी का भाग है जो यहूदियों और महाक्लेश के समय के विषय में है। (पद 14 पढ़ें)। दानिय्येल की पुस्तक में लिखे गए। 1335 दिनों के अंत समय की यह भविष्यद्वाणी है। वे यहूदी जो महाक्लेश को सह लेंगे वे हज़ार वर्ष के राज्य में प्रवेश कर सकेंगे और स्वर्ग के वारिस बन सकेंगे (रोमियों. 11:25-27; यशा. 4:4) महाक्लेश के समय धीरज धरना उद्धार पाने की कसौटी है। इसका तात्पर्य विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार पाए हुए नए नियम के विश्वासी से नहीं है।

''भेड़ों और बकरियों'' का न्याय : (मत्ती 25:31-46) यह गलत मान्यता है कि यह अंतिम न्याय है। ''जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएँगे, तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा। और सब जातियाँ उसके सामने इकट्ठा की जाएँगी, और जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसे ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा।'' मत्ती में हम पढ़ते हैं- ''आएगा'' ''इक्ट्ठा की जाएँगी''-यह यहोशापात की तराई में होगा। तथापि महाश्वेत सिंहासन के समय पृथ्वी का अस्तित्व ही नहीं होगा। अतः यह दो अलग-अलग समयों में दो अलग-अलग घटनाओं का वर्णन है। यहोशापात की तराई में ''महिमा का सिंहासन'' है, जबकि प्रकाशितवाक्य 20 में महान श्वेत सिंहासन है जो अंतरिक्ष में है। अतः इस बात का भी अनुग्रह के इस युग में प्राप्त उद्धार से कोई संबंध नहीं है।

अपने उद्धार का कार्य पूरा करो : (फिलि. 2:12) विश्वासियों से कहा गया है कि उद्धार का कार्य पूरा करो। स्पष्टतः यह ''उद्धार के लिए कार्य'' नहीं है बल्कि ''उद्धार का कार्य'' है। पौलुस यह पत्री ''संतों'' को लिख रहे हैं फिलि. 1:1)। ''कार्य पूरा करो'' अर्थात् किसी कार्य को पूरा करना। परमेश्वर हमसे चाहते हैं कि हम भी प्रभु यीशु की समानता में बदल जाएँ। ''क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है, उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों, ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे।'' (रोमियों 8:29)।

बच्चे जनने के द्वारा उद्धार : (1 तीमु. 2:15)। यहाँ 'जनने' का तात्पर्य ''देखभाल'' से है। स्त्री के द्वारा एक माता के रूप में विश्वासयोग्यता के साथ अपना उत्तरदायित्व निभाना।

झाड़ी और ऊँटकटारे का जलाया जाना : (इब्रा. 6:1-8) यहाँ पर लेखक एक खेत का उदाहरण देते हैं। यह हमें उस दृष्टांत का स्मरण दिलाता है जो प्रभु यीशु ने बीज बोने वाले के विषय में कहा था, (मत्ती 13:1-9, 18-23) साथ ही पौलुस की वह शिक्षा भी जो उन्होंने हमारे कार्यों की अग्नि परीक्षा के विषय में कहा था। (1 कुरि 3:6-23)। भूमि अपनी योग्यता अपनी उपज के द्वारा प्रकट करती है, और एक सच्चा विश्वासी भी परमेश्वर की महिमा के लिए फल लाता है। इस बात पर ध्यान दें कि झाड़ी और ऊँटकटारे जलाए जाते हैं, खेत नहीं! परमेश्वर अपनों को कभी नष्ट नहीं करते! एक विश्वासी अनंतकाल के लिए बचाया जाता है। बाइबल का ध्यानपूर्वक अध्ययन से हम जान सकते हैं कि परमेश्वर एक उद्धार प्राप्त व्यक्ति को गिरने से बचाते हैं।

प्रश्न :

अनुग्रह के द्वारा प्राप्त हुआ उद्धार नष्ट हो सकता है इस तर्क के खण्डन का वर्णन करें।

पाठ-33

उद्धार की सुरक्षा

उद्धार से हमारा तात्पर्य है - अनंत नरक से छुटकारा। जैसे हमने देखा, यह उद्धार परमेश्वर का निःशुल्क दान है। जब एक पापी प्रभु यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता स्वीकार करता है, तब एक बार सदा के लिए उसका उद्धार हो जाता है। (यूहन्ना 5:24; 6:37; 10:27-31)।

अनंतकाल तक सुरक्षा : ''क्या एक बार उद्धार प्राप्त व्यक्ति फिर खो सकता है?'' अक्सर लोग यह प्रश्न पूछते हैं। ''विश्वास के द्वारा अनुग्रह से तुम्हारा उद्धार हुआ है'' यह वाक्य स्पष्ट है कि वह व्यक्ति अनंतकाल के लिए बचाया गया है। (इन पदों को पढ़ें -इफि. 2:5-8; रोमियों 8:24; तीतुस 3:4, 5; 2 तीमु. 1:9-10; प्रेरितों 2:47)। यदि इन सत्यों को हम स्वीकार नहीं करते तब फिर हमें यह कहना होगा कि एक व्यक्ति का कभी-कभी उद्धार होता है जब वह आवश्यक नैतिक स्तर को बनाए रखता है! इसका अर्थ यह हुआ कि बाकी सब समयों में वह खोई हुई दशा में है। निस्संदेह कोई भी व्यक्ति अपने व्यावहारिक जीवन में सिद्धता का दावा नहीं कर सकता। अतः किसी आत्मा के उद्धार का निश्चय उसके जीवन के अंत में ही हो सकता है। यदि यही सच है तो फिर यह उद्धार के सिद्धान्त को खोखला साबित करता है कि विश्वास के द्वारा अनुग्रह से हमारा उद्धार हुआ है, और यह निःशुल्क दान है।

2. उद्धार का अर्थ है पुनर्जन्म। जब एक व्यक्ति का उद्धार होता है तब उसका नया जन्म होता है। इस प्रकार वह परमेश्वर का पुत्र/पुत्री बन जाता है (यूहन्ना 1:12)। स्पष्टतः परमेश्वर उस उद्धार प्राप्त व्यक्ति का पिता है। यह पिता-पुत्र संबंध कभी भी समाप्त नहीं होता।

3. प्रभु यीशु मसीह के याजक पद के आधार पर हमारा उद्धार सुरक्षित है। ''इसी लिए जो उस के द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह

उनका पूरा-पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिए विनती करने को सर्वदा जीवित है।''

4. हमारे उद्धार को अनंत उद्धार कहा गया है। ''और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया।'' (इब्रा. 5:9)।

5. विश्वासी को जो जीवन प्राप्त हुआ है वह अनंत जीवन है। (यूहन्ना 3:16)।

6. परमेश्वर की अनंत सामर्थ विश्वासी को संभालती है। ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिसने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिए नया जन्म दिया, अर्थात् एक अविनाशी, और निर्मल, और अजर मीरास के लिए जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में रखी है; जिनकी रक्षा परमेश्वर की सामर्थ्य से विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिए, जो आने वाले समय में प्रगट होने वाली है, की जाती है।'' (1 पतरस 1:3-5)।

7. विश्वासी लोग मसीह यीशु में पूर्ण हैं। ''क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता संदेह वास करती है। और तुम उसी में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है।'' (कुलु. 2:9-10)।

8. मसीह हमारा जीवन है। ''क्योंकि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे।'' (कुलु. 3:3-4)। मसीह का जीवन अनन्त काल का है।

9. हम परमेश्वर के पूर्वज्ञान के अनुसार बचाए गए हैं। अत: हमारा उद्धार सुरक्षित है। (रोमि. 8:29; इफि. 1:4-12; प्रेरितों. 13:48; 1 थिस्स 5:9)। फिर भी हमें पाप करने की अनुमति नहीं है। यदि हम पाप करें परमेश्वर एक पिता के रूप में उसका दण्ड देते हैं। परमेश्वर अपने संतान का अनुशासन करते हैं। ''क्योंकि प्रभु जिस से प्रेम करता है,

उसकी ताड़ना भी करता है, और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है।'' (इब्रा 12:6)। सच्चाई यह है कि कमज़ोर मनुष्य होने के कारण हम से पाप होने की संभावना है। क्या यदि हम से पाप हो जाए? प्रेरित यूहन्ना कहते हैं, ''यदि हम कहें कि हम में कुछ पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं, और हम में सत्य नहीं। यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।'' (1 यूहन्ना 1:8-9)। अतः हमें अपना पाप अंगीकार करके अपन पिता परमेश्वर से क्षमा प्राप्त करना होगा। किस आधार पर परमेश्वर हमें क्षमा कर सकते हैं? ''...उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।'' (1 यूहन्ना 1:7)। यूहन्ना कहते हैं, ''हे मेरे बालकों, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि तुम पाप न करो, और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात् धर्मी यीशु मसीह, और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है, और केवल हमारे ही नहीं वरन् सारे जगत के पापों का भी।'' (1 यूहन्ना 2:1-2)। परमेश्वर अपने पुत्र के बलिदान के बहाए हुए रक्त के आधार पर और अपने पुत्र और हमारे उद्धारकर्ता की मध्यस्थता के कारण हमें क्षमा कर देते हैं। यह आश्वासन हमें प्रेरणा देता है कि हम पूर्ण भक्ति के साथ अपने प्रभु से प्रेम करें ओर उनकी सेवा करें।

प्रश्न :

1. उद्धार की सुरक्षा के आधार क्या हैं?
2. यदि विश्वासी पाप करें तो परमेश्वर उसके साथ क्या व्यवहार करते हैं?
3. हमारा उद्धार सुरक्षित है इस बात का क्या आधार है?

पाठ–34

धर्मी ठहराना, पवित्रीकरण और महिमान्वित करना

जब एक व्यक्ति प्रभु यीशु पर विश्वास करके उद्धार प्राप्त करता है तब से एक नई शुरुआत होती है। परमेश्वर का अनुग्रह तीन तरह से उसमें कार्य करता है। वह धर्मी ठहराया जाता है, वह पवित्र किया जाता है और उसे महिमा दी जाती है। हम उद्धार के इन तीन पहलुओं का अध्ययन करेंगे।

धर्मी ठहराना :

''धर्मी ठहराया जाना एक दिव्य कार्य है, जिसके द्वारा अनंत पवित्र परमेश्वर न्यायपूर्ण घोषणा करते हैं कि विश्वास करने वाला पापी धर्मी ठहरा है, और वह परमेश्वर के सम्मुख ग्रहणयोग्य है, क्योंकि प्रभु यीशु मसीह ने पापी के पाप को क्रूस पर उठा लिया और उसे अपने लिए धार्मिकता बना लिया।''

परमेश्वर के साथ हमारा सच्चा संबंध जब वापस जुड़ जाता है उसे धर्मी ठहरना कहते हैं। यह संबंध पाप के कारण टूट गया था। हमारी धार्मिकता का आधार परमेश्वर का वह अनुग्रह है, जो हमारे प्रभु यीशु की आज्ञाकारिता और बलिदान के सिद्ध जीवन से प्रकट हुआ है ''हम उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे'' (रोमियों 5:9)। प्रभु की धार्मिकता को हम पर रोपा गया (रोमि. 4:6; 1 कुरि 1:30; 2 कुरि. 5:21)।

रोमियों 5:1 कहता है, ''अत: जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर से मेल रखें।'' धर्मी ठहराया जाना एक ऐसा कार्य है जो पूर्ण हो चुका है।

पवित्रीकरण :

यह परमेश्वर के मुफ्त अनुग्रह का कार्य है, जिसके द्वारा हम पूर्ण

रूप से नए होकर परमेश्वर के स्वरूप में बदलते हैं, और पाप के लिए और अधिक मर जाते और धार्मिकता के लिए जीवन बिताते हैं। धर्मी ठहरना पवित्रीकरण से भिन्न है।

धर्मी ठहरना (मसीह हमारे लिए)	**पवित्रीकरण (मसीह हम में)**
a. हमारी स्थिति	a. हमारा स्थिति
b. हमारा स्थान	b. हमारा हाल
c. संबंध	c. संगति
d. हमारा मेल-मसीह हमारे लिए	d. हमारी पवित्रता-मसीह हम में
e. स्वीकृति	e. प्राप्त करना
f. तुरंत ही	f. प्रगतिशील

नए जन्म के समय पवित्र आत्मा के द्वारा हमें दिए गए नए जीवन में लगातार उन्नति पवित्रीकरण से संबंधित है। मसीह में प्राप्त नए जीवन के कारण एक विश्वासी परमेश्वर के लिए अलग किया हुआ है, यह उसका स्थान है। (1 कुरि. 6:11)। इस पद में क्रिया शब्द भूतकाल में है जिससे यह संकेत मिलता है कि यह कार्य पूरा हो चुका है। नया जन्म पाना तुरंत होता है जबकि पवित्रीकरण प्रगतिशील है जिसका अर्थ है कि एक विश्वासी को बढ़ना चाहिए। प्रेरित पतरस कहते हैं-

''पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ।'' (2 पतरस 3:18)। प्रेरित पौलुस कहते हैं- ''हे भाइयो, तुम्हारे विषय में हमें हर समय परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, और यह उचित भी है, इसलिए कि तुम्हारा विश्वास बहुत बढ़ता जाता है, और तुम सबका प्रेम आपस में बहुत ही बढ़ता जाता है।'' (2 थिस्स. 1:3)। बाइबल अनुग्रह में बढ़ने, आशा और प्रेम बहुतायत से होने और स्वर्गीय बातों के ज्ञान में उन्नति करने की बात कहती है। यह कहने की आवश्यकता न होती यदि नए जन्म के समय हमारी पवित्रता सिद्ध हो जाती। पवित्रीकरण में यह बात भी आती है कि एक विश्वासी परमेश्वर

के लिए अलग किया हुआ है, जिसमें उसका स्थान और कार्य को सिद्ध ताल मेल में लाया जाएगा। (इफि. 5:26, 27; यहूदा 24:25)।

पवित्रीकरण का तिगुना पहलू		
भूतकाल	**वर्तमान**	**भविष्य**
पिछली स्थिति/ स्थान	व्यावहारिक स्थिति	सिद्ध स्थिति
तुरंत प्राप्त उपहार	प्रगतिशील प्राप्ति	अंतत: प्राप्त महिमा
1 कुरि. 6:11	1 पतरस 1:15-16	फिलि. 3:21

1 थिस्स. 5:23 में पौलुस प्रार्थना करते हैं कि ''शांति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे, और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे-पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।''

पवित्र किए हुए लोग परमेश्वर के द्वारा चुने हुए लोग हैं, और पुत्र के द्वारा छुड़ाए गए हैं और पवित्र आत्मा के द्वारा पवित्र किए गए हैं (यशा. 62:12)। परमेश्वर का उद्धार मनुष्य के प्राण, आत्मा और शरीर के लिए संपूर्ण है।

महिमान्वित करना :

परमेश्वर के उद्धार के कार्य की कड़ी में यह अंतिम चरण है। ''फिर जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी, और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है, और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है।'' (रोमि. 8:30)। मसीह की मृत्यु, पुनरुत्थान और बिचवई के कार्य में हमारी महिमा सुरक्षित है। ''पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है, और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु के वहाँ से आने की बाट जोह रहे हैं। वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा।'' (फिलि. 3:20-21)। हमारे प्रभु के दोबारा आगमन पर हम महिमा प्राप्त करेंगे।

प्रश्न :

1. धर्मी ठहराना क्या है? हम कैसे धर्मी ठहराए जाते हैं?
2. हमारे धर्मी ठहरने का आधार क्या है?
3. पवित्रीकरण क्या है?
4. महिमान्वित किया जाना क्या है और यह कब होगा?

पाठ–35

बपतिस्मा

प्रभु यीशु ने कलीसिया को दो अध्यादेश दिए हैं। पहला है–बपतिस्मा जो एक विश्वासी में हुए परिवर्तन का प्रतीक है। दूसरा है–प्रभु भोज, एक यादगार जो प्रभु यीशु की मृत्यु की घोषणा करता है। इस पाठ में हम ''बपतिस्मा'' के विषय में सीखेंगे।

इसका महत्व : बपतिस्मा एक आज्ञा है जो हमारे प्रभु यीशु ने दी है। प्रभु ने अपने शिष्यों को यह आज्ञा दी ''इसलिए तुम जाओ और सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता, और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो'' (मत्ती 28:19, 20; मरकुस 16:15,16)। शिष्यों ने और आरंभिक कलीसिया ने इस कार्य को संपूर्ण निष्ठा और गंभीरता के साथ किया। (प्रेरितों. 2:41; प्ररितों 8:36–38)। पौलुस और पतरस ने अपने पत्रियों में इस अध्यादेश के अर्थ को समझाया है। (रोमियों 6:1–4; 1 पतरस 3:21)। अत: हम देखते हैं कि इस अध्यादेश की स्थापना सुसमाचारों में हुई, प्रेरितों के कार्य में उसका पालन हुआ और पत्रियों में उसका अर्थ समझाया गया। इस विषय में यह ध्यान देने योग्य बात है कि यदि प्ररितों के द्वारा हमें इसका अर्थ समझाया गया न होता तो इसे हम एक रस्म की तरह करते रहते। वास्तव में आज ऐसे अनेक व्यक्ति और चर्च हैं जो इस अध्यादेश का पालन एक रिवाज़ की तरह करते हैं।

इसका अर्थ : नया जन्म प्राप्त हुए एक विश्वासी के जीवन में जो आंतरिक परिवर्तन हुआ है, बपतिस्मा उसका बाहरी प्रकटीकरण है। यह आंतरिक परिवर्तन क्या है?

एक पापी के रूप में हम मृत्यु दण्ड के आधीन थे। हमारा पुराना स्वभाव दुष्ट था। परमेश्वर ने उस पुराने स्वभाव को सुधारा नहीं बल्कि यह आज्ञा दी कि आदम से जन्मे पापी संतानों को मृत्यु प्राप्त हो।

निश्चित रूप से यदि हमारी मृत्यु होती तब हम अनंतकाल के लिए नष्ट हो जाते। तथापि, परमेश्वर ने अपने अनंत अनुग्रह में यह नहीं चाहा कि मनुष्य का ऐसा अंत हो। अत: परमेश्वर ने अपने पुत्र को हमारा उद्धारकर्ता बना कर इस संसार में भेजा ताकि प्रभु हमारे स्थान पर मारे जाएँ। इसका अर्थ यह है कि जब प्रभु यीशु ने क्रूस की मृत्यु सही तब हम भी प्रभु के साथ मर गए। प्रभु अपनी मृत्यु को बपतिस्मा कहते हैं (मत्ती 20:22; लूका 12:50)। इसका अर्थ यह है कि प्रभु यीशु ने परमेश्वर के न्याय को अपने ऊपर उठा लिया जो दूसरी मृत्यु है। (प्रका. 20:14)। कोरह के पुत्र भजन में कहते हैं-''.....तेरी सारी तरंगों और लहरों में मैं डूब गया।'' (भजन 42:7)। यहाँ ''तेरी'' और ''सारी'' शब्दों पर ध्यान दें। परमेश्वर के द्वारा दिए गए संपूर्ण पाप के न्याय और दंड को हमारे प्रभु यीशु ने अपने ऊपर उठा लिया।

रोमियों 6 में हम पढ़ते है-''.... हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया। अत: उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए।'' (रोमियों 6:3-4) ''क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएँगे। हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए। (रोमि. 6:5-6)। परमेश्वर की पवित्रता की माँग के अनुसार यह आवश्यक था कि हमारा पुराना पापमय मनुष्यत्व परमेश्वर की दृष्टि से सदा के लिए दूर किया जाए। मृत्यु ही जिसका विकल्प था वह, कलवरी के क्रूस पर पूरा हुआ। मसीह की मृत्यु का हम उस समय लाभ उठाते हैं, जिस क्षण हम उद्धार प्राप्त करते हैं। जब पानी में हमारा बपतिस्मा होता है तब हम सार्वजनिक रूप से यह गवाही देते हैं कि जब प्रभु की मृत्यु हुई तब हम भी उनके साथ मर गए और एक पापी के रूप में हमारा पुराना जीवन परमेश्वर की दृष्टि में समाप्त हो गया।

रोमियों 6:4 में बपतिस्मे की तुलना गाड़े जाने के साथ की गई है। पानी के बपतिस्मे में एक विश्वासी स्वयं को प्रभु यीशु की मृत्यु, गाड़े

जाने और जी उठने की समानता में लाता है। प्रभु यीशु ने एक विश्वासी के स्थान पर क्रूस की मृत्यु सह ली। बपतिस्मा में एक विश्वासी यह स्वीकार करता है कि मसीह की मृत्यु स्वयं उसकी मृत्यु है। पानी के भीतर जाना इसी बात का प्रतीक है। जब एक विश्वासी पानी से बाहर आता है तब यह मसीह के साथ जी उठने की समानता का प्रतीक है। अतः अब हम नई सृष्टि हैं। ''मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है।'' (गल. 2:20)। अब विश्वासी पुराना जीवन नहीं जीता बल्कि नए जीवन की सी चाल चलता है।

बपतिस्मा नए जीवन की घोषणा है। ''यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है, पुरानी बातें बीत गई हैं, देखो, सब बातें नई हो गई हैं।'' (2 कुरि 5:17)। ''अतः उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।'' (रोमियों 6:4)।

अतः आज सब मनुष्यों के लिए यह संदेश है कि पश्चाताप करो और सुसमाचार पर विश्वास करो। ऐसा करने पर एक व्यक्ति तुरंत पवित्र आत्मा को प्राप्त करता है। तब उसे प्रभु के साथ जुट जाने के प्रतीक के रूप में बपतिस्मा लेना चाहिए और उसके द्वारा यह प्रकट करना चाहिए कि अब वह नए जीवन की सी चाल चलेगा।

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु ने कलीसिया को कौन से दो अध्यादेश दिए हैं?
2. ''बपतिस्मा'' का अर्थ समझाइए।
3. किन-किन बातों में हम प्रभु यीशु के साथ समानता में हो जाते हैं?
4. बपतिस्मे में यह कैसे प्रतीक के रूप में होता है?

पाठ–36

बपतिस्मा

शिशु के बपतिस्मे का अपसिद्धांत

मसीही जगत में अनेक लोग शिशु के बपतिस्मे का पालन करते हैं। परन्तु क्या यह वचनानुसार है? वास्तव में नए नियम में एक भी पद नहीं पाया जाता जो इस बात का समर्थन करता है। सिर्फ उनका बपतिस्मा होना चाहिए जो प्रभु यीशु पर किए गए विश्वास की गवाही देते हैं।

मरकुस 10:13–16 को शिशु के बपतिस्मे के समर्थन में कहा जाता है। परन्तु वहाँ हम 'पानी' के विषय में नहीं परंतु प्रभु यीशु के विषय में पढ़ते हैं। वचन में कहीं–कहीं पर हम पढ़ते हैं कि पूरे घराने ने बपतिस्मा लिया। उदाहरण के लिए–लुदिया और उसके घराने के विषय में यह कहा गया है। (प्रेरितों 16:15)। फिलिप्पी के दारोगा और उसके घराने ने बपतिस्मा लिया (प्रेरितों 16:33)। प्रेरित पौलुस ने स्तिफनास को और परिवार को बपतिस्मा दिया (1 कुरि. 1:16)। इनमें से किसी भी भाग में शिशुओं के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया। वास्तव में, फिलिप्पी के दारोगा के परिवार के विषय में यह स्पष्ट कहा गया कि पूरे परिवार ने प्रभु पर विश्वास किया और आनंद किया। (प्रेरितों 16:34) ''घराना'' का अर्थ मात्र परिवार के सदस्य ही नहीं बल्कि उनके सेवक और नौकर भी उसमें शामिल है।

नए नियम का अन्य हिस्सा इस बात का स्पष्ट समर्थन करता है कि मात्र विश्वास करने वाला व्यक्ति बपतिस्मा पाकर कलीसिया में जोड़ा जाता है। (प्रेरितों 2:41; 18:8)।

'बपतिस्मा' के प्रकार :

वचन में अनेक प्रकार के बपतिस्मे के विषय में कहा गया है, और हर एक का अपना विशिष्ट महत्व है।

1. इस्राएल का बपतिस्मा (1 करि. 10:1-2)

400 वर्षों तक इस्राएली मिस्र की गुलामी में रहे। परमेश्वर ने उनके छुटकारे के लिए मूसा को भेजा। परमेश्वर की आज्ञा से मूसा ने लाल समुद्र को दो भागों में बाँट दिया और इस्राएली सूखी भूमि पर पार चले गए। उनके पार जाने पर समुद्र वापस पहले जैसा हो गया और उनका पीछा करने वाली फिरौन की सेना उसमें डूब मरी। पौलुस प्रेरित उस घटना के विषय में कहते हैं-''हमारे सब बापदादे बादल के नीचे थे, और सबके सब समुद्र के बीच से पार हो गए। और सबने बादल में और समुद्र में मूसा का बपतिस्मा लिया।''

यहाँ पर बपतिस्मा का अर्थ है उनके अगुए मूसा के साथ एक हो जाना या जुड़ जाना।

2. यूहन्ना बपतिस्मा दाता का बपतिस्मा : (मत्ती 3:16; मरकुस 1:8; लूका 3:16; यूहन्ना 1:33)

परमेश्वर ने यूहन्ना को भेजा था कि वह प्रभु यीशु मसीह के लिए मार्ग तैयार करे। यूहन्ना का बपतिस्मा इस्राएलियों के लिए था। जब यूहन्ना ने मन फिराव का प्रचार किया तो अनेकों ने अपने पापों से पश्चाताप करके यूहन्ना से बपतिस्मा लिया। यह निश्चित रूप से पानी में ही था। यह बपतिस्मा पश्चाताप का (प्रतीकात्मक गवाही) एक चिह्न था।

3. प्रभु यीशु का बपतिस्मा (मरकुस 3:16)

यूहन्ना बपतिस्मादाता ने प्रभु यीशु को बपतिस्मा दिया। अपने बपतिस्मे के द्वारा प्रभु ने मनुष्यों के साथ एक होने को दर्शाया। उनका बपतिस्मा हमारे लिए एक उदाहरण था। यूहन्ना से बपतिस्मा लेकर प्रभु ने सब धार्मिकता को पूरा किया। (मत्ती 3:15)। प्रभु ने कहा, ''मुझे तो एक बपतिस्मा लेना है, और जब तक वह न हो ले तब तक मैं कैसी व्यथा में रहूँगा।'' (लूका 12:50)। यह प्रभु के कष्ट उठाने व मृत्यु सहने की ओर संकेत था।

4. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा :

पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा शिष्यों पर उतरे और इसके

परिणामस्वरूप उन्हें एक शरीर के रूप में बपतिस्मा दिया गया कि कलीसिया बनें। यह प्रभु की शारीरिक देह नहीं परन्तु आध्यात्मिक देह है –जो कलीसिया है। इस ऐतिहासिक घटना का वर्णन यूहन्ना ने पहले से ही किया था (लूका 3:16)। इस प्रकार पिन्तेकुस्त के दिन मसीही कलीसिया का जन्म हुआ।

तब से आगे को जिनका नया जन्म होता है वे परमेश्वर की कलीसिया में जोड़े जाते हैं (प्रेरितों. 2:47)।

प्रभु यीशु कलीसिया का सिर हैं, और हर एक नया जन्म प्राप्त विश्वासी प्रभु के शरीर का अंग है। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा एक ऐतिहासिक कार्य है जो पिन्तेकुस्त के दिन हुआ। इस आत्मा के बपतिस्मे में हर एक विश्वासी का साझा है। पवित्र आत्मा के इसी कार्य के द्वारा एक विश्वासी को मसीह के शरीर का अंग बनाया जाता है। इसके बगैर कोई भी व्यक्ति मसीही नहीं बन सकता।

5. आग का बपतिस्मा :

मत्ती और मरकुस रचित सुसमाचार में यूहन्ना बपतिस्मादाता ने कहा, ''मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूँ परन्तु जो मेरे बाद आने वाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है, मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।'' (मत्ती 3:11; लूका 3:16)।

आग से बपतिस्मा पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं है। यह आलंकारिक भाषा है।

मत्ती 3:12 में इसे समझाया गया है ''उसका सूप उस के हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपने गेहूँ को तो खत्ते में इकठ्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं।'' यह बात प्रभु ने न्याय के विषय में कही थी। यह केवल अविश्वासियों के लिए है। एक विश्वासी पर दण्ड की आज्ञा न होगी। (यूहन्ना 5:24) क्योंकि उसका दण्ड प्रभु यीशु मसीह ने उठा

लिया। अविश्वासी का एक दिन न्याय होगा और उसे आग की झील में डाल दिया जाएगा। यही आग का बपतिस्मा है। (तुलना करें–प्रका. 20:13–15)।

प्रश्न :

1. शिशु का बपतिस्मा वचन के विरुद्ध है–यह प्रमाणित करें।
2. लाल समुद्र को पार करना कैसे बपतिस्मा का उदाहरण है?
3. यूहन्ना का बपतिस्मा और विश्वासी का बपतिस्मा में क्या अंतर है?
4. प्रभु यीशु ने बपतिस्मा क्यों लिया?
5. किस बपतिस्मे के द्वारा एक विश्वासी मसीह के शरीर अर्थात् कलीसिया का अंग बनता है?
6. ''आग का बपतिस्मा'' का क्या अर्थ है?

पाठ-37

बपतिस्मा : जीवन में लागू करना

हम ने बपतिस्मे के सिद्धान्तों का अध्ययन किया अब हम यह सीखेंगे कि इन्हें एक विश्वासी के जीवन में किस प्रकार लागू किया जा सकता है।

हम जानते हैं कि जो व्यक्ति प्रभु यीशु को उद्धारकर्ता ग्रहण करता है वह उसी क्षण नई सृष्टि बन जाता है। प्रेरित पौलुस कहते हैं-''इसलिए यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गई हैं, देखों सब बातें नई हो गई हैं।'' (2 कुरि 5:17)। हो सकता है कि हम इन बातों की गहराई को पूरी रीति से समझ न सकें, परन्तु मुख्य बात हम समझ सकते हैं कि यह मसीह के साथ एक हो जाना है (रोमि. 6:3-5)। ''जो हमारा जीवन है।'' (कुलु. 3:4)। कितना अद्भुत है यह!

वास्तव में यह हमारा सौभाग्य है। पिता परमेश्वर यही चाहते हैं कि उनके पुत्र/पुत्रियाँ उनके पुत्र प्रभु यीशु के ही समान हों, इस पृथ्वी पर रहकर भी और फिर स्वर्ग में भी!

यह प्रभु की आज्ञा है कि एक विश्वासी जिसका आंतरिक परिवर्तन हुआ है वह इस बात को बपतिस्मे के द्वारा संसार को बता दे। यह मसीह के साथ एक हो जाने के चिह्न हैं। सबसे पहले उसे प्रभु की मृत्यु की समानता में होना है। अर्थात् उसे यह मान लेना है कि वह मसीह यीशु के साथ मर गया। ध्यान दें कि मसीह यीशु की मृत्यु पाप के लिए थी, अत: हमें अब मृत्यु सहने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु हमें पाप के प्रति मरा हुआ होना चाहिए। (रोमि. 6:2)। पाप के प्रति मर जाने का अर्थ है कि अब पाप से कोई संबंध न रखना। पौलुस पूछते हैं, ''हम जब पाप के लिए मर गए तो फिर आगे को उसमें कैसे जीवन बिताएं?'' (रोमि. 6:2)। गलातियों 6:14 कहता है, ''संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ।''

हम मृत देह के साथ क्या करते हैं? हम उसे दफना देते हैं। अत: यह मानने पर कि हम पाप के लिए मर चुके तब एक विश्वासी को बपतिस्मा में अपने प्रतीकात्मक दफन किए जाने के बारे में सोचना चाहिए। एक सच्चा विश्वासी इसका इंजतार देर तक नहीं कर सकता। उस कूशी खोजे के समान वह भी प्रभु की आज्ञा मानने की शीघ्रता करेगा। जो बपतिस्मा में पानी के भीतर जाता है वह ऐसे पानी से बाहर आता है जैसे कब्र में से। यह हमारे प्रभु यीशु के जी उठने का प्रतीक है। इस प्रकार वह व्यक्ति प्रभु के साथ पुनरुत्थान की समानता में हो जाता है। अब उसे नए जीवन की सी चाल चलना चाहिए। (रोमि. 6:4)।

''नए जीवन की सी चाल'' क्या है?

इस संदर्भ में नयापन पुनरुत्थान के संबंध में कहा गया है, इस कारण वह शक्ति और सामर्थ्य को दिखाता है। अत: बहुतायत का मसीही जीवन जीने और प्रभावकारी गवाही के लिए बपतिस्मे में प्रभु की आज्ञा का पालन करना आवश्यक है। इस बात पर ध्यान दें कि जब एक विश्वासी बपतिस्मा लेने का निर्णय करता है तब शत्रु का भयंकर विरोध होता है।

यह न सोचें कि बपतिस्मा लेने के साथ ही मसीह में हमारी समानता समाप्त हो जाती है। मात्र प्रतीकात्मक कार्य समाप्त होता है, परन्तु उसके वास्तविक सत्य हमारे जीवन में कार्य करते रहते हैं। हम प्रतिदिन मसीह के साथ मरते हैं। जहाँ तक पाप का सवाल है हम उसके प्रति मृतक के समान हैं। हमें पाप के प्रति अपने अंगों को मार देना है (कुलु. 3:5; रोमियों 8:13)। परन्तु हम मसीह के साथ जीवित हैं (इफि 2:1)। और जीवन जीना एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। (रोमि 12:2) जिसमें हम अपने प्रभु मसीह यीशु के स्वरूप में निरंतर परिवर्तित होते जाते हैं। (रोमि 8:29)। ये संभावनाएँ मसीही जीवन को अद्‌भुत बनाती हैं।

अपने जीवन को प्रभु यीशु को समर्पित करने के द्वारा हम दिन प्रति दिन परिपक्व होते जाते हैं। फिलि. 1:21 में पौलुस कहते हैं-''मेरे लिए

जीवित रहना मसीह है और मर जाना लाभ है।'' ''मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ। अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है।'' (गला. 2:20)।

तेरी मृत्यु में बपतिस्मा लेकर,
तेरे साथ मृत्यु की समानता में हो गए हम,
तेरे साथ हमारा जीवन भी जी उठा,
और तेरे साथ महिमा भी पाएंगे हम।
पाप, संसार और शैतान से,
तेरे लहू से छुड़ाए गए हम,
संसार में रहेंगे अजनबी बनकर,
तेरे साथ परमेश्वर के लिए जीवित हम।।

– जे.जी. डेक

प्रश्न :

1. अपने मन परिवर्तन से पहले एक विश्वासी 'किस' में मरा था?
2. नया जन्म पाने के बाद पाप पर विजय कैसे प्राप्त होती है?
3. हमें अपने शरीर के अंगों का क्या करना है?
4. दिन प्रतिदिन हमें बदलना है और किसके स्वरूप को पाना है?
5. ''मेरे लिए जीवित रहना मसीह है'' इसे समझाइए।

पाठ-38

प्रभु-भोज (1)

परिचय :

याद करना आवश्यक है। बहुत सी बातें है जो हमें स्मरण रखनी चाहिए। जो कार्य होने हैं उन्हें स्मरण दिलाने के लिए हम लिखकर रख लेते हैं। उसी प्रकार हम किसी घटना या व्यक्ति को याद करने के लिए कुछ चिह्न रख लेते हैं जो हमें उनकी याद दिलाते रहते हैं। उनको हम यादगार कहते हैं जो हमें पिछली घटनाओं का स्मरण दिलाते हैं।

परमेश्वर का यादगार भोज :

हमारे समय में परमेश्वर ने एक ऐसा अध्यादेश दिया जो हमारी याद को प्रेरित करता है। यह ''प्रभु भोज'' कहलाता है।

प्रभु ने कहा-''मेरे स्मरण के लिए यही किया करो'' (1 कुरि. 11:24)

A. अंतिम फसह : प्रभु यीशु अपने शिष्यों के साथ किराए की उपरौठी कोठरी में थे, जब उन्होंनं इस नए भोज की स्थापना की (मत्ती 26:17-30)। यह फसह का समय था। मिस्र की दासता से इस्राएलियों के छुटकारे और प्रभु यीशु के आने की भविष्यद्वाणी जो बलिदान होने आने वाला मेम्ना था, उनकी यादगार में फसह का पर्व मनाया जाता था। अपने शिष्यों के साथ प्रभु यीशु ने यह अंतिम फसह मनाया, क्योंकि अगले ही दिन प्रभु एक मेम्ने की तरह अपने क्रूस की मृत्यु के द्वारा भविष्यद्वाणी के उस पहलू को पूरा करने वाले थे। (पढ़ें - लूका 12:14-18)।

B. प्रभु-भोज की स्थापना : ''प्रभु यीशु ने रोटी ली, और धन्यवाद करके उसे तोड़ी और कहा, ''यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिए है, मेरे स्मरण के लिए यही किया करो।' इसी रीति से प्रभु ने कटोरा भी लिया

और कहा, 'यह कटोरा मेरे लहू में नई वाचा है, जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिए यही किया करो'।'' इससे यह स्पष्ट होता है कि फसह के पर्व के पश्चात प्रभु ने जो किया वह 'प्रभु भोज' की स्थापना थी।

C. मेरी देह, मेरा लहू : प्रभु यीशु ने रोटी ली और धन्यवाद करके उसे तोड़ी और चेलों को देकर कहा, ''लो, खाओ, यह मेरी देह है।'' (मत्ती 26:26)। टूटी हुई रोटी को खाना हमें प्रभु की टूटी देह का स्मरण कराता है। यह रोटी जैसे एक है वैसे ही विश्वासी भी प्रभु के साथ एक हैं इस बात का भी स्मरण यह रोटी दिलाती है। (1 कुरि. 10:17)। यह प्रभु की मृत्यु का भी यादगार है। प्रभु ने कहा-''मेरे स्मरण के लिए यही किया करो'' (1 कुरि. 11:24)।

''फिर प्रभु ने कटोरा लेकर धन्यवाद किया और उन्हें देकर कहा, 'तुम सब इसमें से पीओ, क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है'।'' (मत्ती 26:27-28)। यहाँ पर यादगार न केवल स्मरण दिलाता है परन्तु हमें सिखाता भी है। हमारे पापों की क्षमा प्रभु की मात्र मृत्यु से ही नहीं बल्कि प्रभु ने जो लहू बहाया उस से भी होती है।

D. आने वाला राज्य : फसह की तरह ही प्रभु-भोज एक भविष्यद्वाणी भी है। यह उस समय की ओर देखता है जब प्रभु हमारे साथ पिता के राज्य में नया दाख का रास पीएंगे। (मत्ती 26:29)। जैसे फसह प्रभु यीशु की मृत्यु की भविष्यद्वाणी करता था, वैसे ही प्रभु-भोज भविष्यद्वाणी करता है कि हमारा प्रभु राज्य करने के लिए एक राजा के रूप में वापस आएगा।

E. व्यक्तिगत जाँच : यह यादगार प्रभु की मृत्यु को पीछे की ओर देखती है और आगे की ओर प्रभु के द्वितीय आगमन की ओर। वर्तमान में यह हमें स्वयं की जाँच करने का कारण है जब हम उसमें भागीदार होते हैं। (कुरि. 11:28)।

F. उचित व्यवस्था : नए नियम की कलीसिया इस भोज का संरक्षक

व प्रशासक है। यह भोज भूख मिटाने के लिए नहीं है परन्तु हमें स्मरण दिलाने के लिए है। (1 कुरि.11:20-22)।

''प्रभु-भोज' नाम से ही हम जान सकते हैं कि यह किसका अधिकार है जो हमें उस भोज के लिए निमंत्रित करता है। हम प्रभु की मेज़ पर आते हैं क्योंकि हम प्रभु के द्वारा नियंत्रित लोग हैं।

प्रभु भोज एक अध्यादेश है जिसकी विशेषता उसकी सादगी है। तथापि उसका अर्थ गहरा है। कलीसिया के आरंभिक दिनों में प्रभु की यादगार रोज़ करते थे। स्पष्टत: एक साथ भोजन करने और प्रभु-भोज में भाग लेने, दोनों कार्यों के लिए ''रोटी तोड़ना'' ही कहा जाता था। बाद में प्रेरितों 20:7 से यह स्पष्ट होता है कि यह सप्ताह में एक बार किया जाता था। अक्सर पौलुस अपनी यात्राओं के दौरान प्रभु के दिन में रोटी तोड़ने के लिए रुक जाया करते थे।

सप्ताह का पहला दिन हमें अपने प्रभु के पुनरुत्थान का स्मरण कराता है। जब उसी दिन हम प्रभु-भोज में से भाग लेते हैं, तब हम प्रभु की मृत्यु को उनके पुनरुत्थान के साथ भी जोड़ते हैं। और साथ ही प्रभु के दोबारा आगमन की भी आस लगाते हैं।

जब हम प्रभु के दिन में एकत्र होते हैं तब यह पवित्र आत्मा है जो आराधना में हमारी अगुआई करते हैं। हम अपने पापों को स्मरण करने के लिए नहीं आते। और ना ही यह आशीषों को स्मरण करने का समय है। क्योंकि उद्धारकर्ता को भूलकर अन्य बातों में उलझ जाना संभव है।

यह संभव है कि हम अपने छुटकारे पर पूरा ध्यान केंद्रित करें और छुड़ानेवाले को स्मरण न करें। लूका 17:15-18 में हम पढ़ते हैं कि प्रभु ने दस कोढ़ियों को चंगा किया। निस्संदेह दसों आभारी थे कि उनका कोढ़ दूर हो गया, परन्तु सिर्फ एक वापस आया और चंगा करने वाले प्रभु के चरणों पर गिरा। यही सच्चा धन्यवाद देना और चंगा करने वाले को स्मरण करना है।

हमारी आत्मा की चाहत भी अपने प्रभु के नाम के लिए और प्रभु

की यादगार के लिए हो। (यशा. 26:8)।

भूल जाना मनुष्य की प्रवृत्ति है। हम दिन प्रतिदिन के जीवन में बहुत कुछ भूल जाते हैं। परन्तु कुछ ऐसी बातें हैं जो हमें बिल्कुल भी भूलना नहीं चाहिए। निश्चित रूप से हमारे प्रभु की मृत्यु उनमें से एक है। इस अध्यादेश को अच्छे से समझने के द्वारा ये बातें हमेशा हम स्मरण रखेंगे।

प्रश्न :

1. उस फसह का क्या महत्व है जो प्रभु ने अपने शिष्यों के साथ मनाया?
2. प्रभु यीशु ने प्रभु-भोज की स्थापना कैसे की?
3. रोटी और दाखरस किसके प्रतीक हैं?
4. प्रभु-भोज में भाग लेने की शर्तें क्या है?
5. इस अध्यादेश का पालन हमें कब तक करना होगा?

पाठ-39

प्रभु-भोज (2)

पिछले पाठ में हमने प्रभु-भोज की स्थापना, उसका अर्थ और उसके पालन की विधि के विषय में सीखा था। इस पाठ में हम इस अध्यादेश के कुछ अपसिद्धान्त जो कलीसिया में मिल गए, उनके विषय में सीखेंगे।

तत्त्वांतरण (Transubstantiation) :

यह ऐसी शिक्षा है जिसमें यह सिखाते हैं कि रोटी और दाखरस प्रभु यीशु के वास्तविक शरीर और लहू में परिवर्तित हो जाते हैं। यह शिक्षा गलत तरीके से प्रभु के वचनों पर आधारित है- ''यह मेरी देह है'' (मत्ती 26:26)। स्पष्टत: प्रभु का यह तात्पर्य नहीं था, न ही उनके शिष्यों ने ऐसा समझा। कुरिन्थियों को पत्री लिखते हुए पौलुस ने उन शब्दों को दोहराया-''क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।'' (1 कुरि. 11:26) यह तत्त्वांतरण के अपसिद्धान्त का सीधा खंडन है। यहाँ पर रोटी को ''रोटी'' ही कहा गया है। धन्यवाद देने के बाद भी वह ''रोटी'' ही है। प्रभु ने ''रोटी'' लेकर धन्यवाद किया, तब वह रोटी ही थी। धन्यवाद करके जब शिष्यों को दिया तब भी वह ''रोटी'' ही रही। जब उन्होंने खाया तब भी वह ''रोटी'' ही थी। अत: यह स्पष्ट है कि प्रभु आलंकारिक भाषा का प्रयोग कर रहे थे। ऐसी भाषा का प्रभु अक्सर उपयोग करते थे। स्वयं के बारे में उन्होंने कहा, ''सच्ची दाखलता मैं हूँ।'' ''द्वार मैं हूँ'', इत्यादि। ऐसे कथन को शाब्दिक रूप में नहीं लेना है।

बलिदान : रोमन केथोलिक समुदाय इसे ''मास'' (Mass) कहते हैं और वे कहते हैं कि जब भी वे इसका पालन करते हैं तब प्रभु यीशु तुरंत ही वास्तविक बलिदान के कार्य को दोहराते हैं। यह पूर्ण रूप से परमेश्वर के वचन के विरुद्ध है। इब्रानियों 7:27 कहता है, ''उन महायाजकों

के समान उसे आवश्यक नहीं कि प्रतिदिन पहले अपने पापों के लिए बलिदान चढ़ाए, क्योंकि उसने अपने आप को बलिदान चढ़ाकर उसे **एक ही बार में** पूरा कर दिया।''

''उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के **एक ही बार** बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं।'' (इब्रा. 10:10)। अत: नए नियम की स्पष्ट शिक्षा है कि प्रभु यीशु का बलिदान संपूर्ण और अंतिम था।

तत्त्वउपस्थिति (Consubstantiation) : महान सुधारक मार्टिन लूथर भी इस विचारधारा से सहमत थे। उन्होंने कहा कि रोटी और दाखरस में से भाग लेते समय प्रभु यीशु स्वयं शरीर में उन वस्तुओं में उपस्थित रहते हैं। यदि यह सही है तो, रोटी तोड़ते समय प्रभु प्रत्यक्ष दिखाई देने चाहिए। हम जानते हैं कि प्रभु के पुनरुत्थान के पश्चात् उनके शिष्यों ने उन्हें अपनी आँखों से देखा था जब भी प्रभु उनके पास आए या उन्हें दर्शन दिया। मार्टिन लूथर की यह शिक्षा तत्त्वांतरण (Transubstantiation) का एक और रूप है।

प्रभु भोज किसके लिए है?

''अत: जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया, और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए। **और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने और रोटी तोड़ने और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।**'' (प्रेरितों 2:41-42)। यहाँ पर हम देखते हैं कि जिन्होंने रोटी तोड़ी उन्होंने पहले विश्वास किया था और फिर बपतिस्मा में प्रभु की आज्ञा का पालन किया था। वे यरूशलेम की कलीसिया के सदस्य थे। यह स्पष्ट करता है कि ''रोटी तोड़ना'' वे ही कर सकते हैं जिनका उद्धार हुआ है और बपतिस्मा हुआ है और संगति में हैं। हम पहले ही देख चुके हैं कि प्रभु यीशु ने कलीसिया को दो आदेश दिए हैं। पहला बपतिस्मा, और दूसरा प्रभु-भोज है। दूसरी आज्ञा उन लोगों के लिए है जिन्होंने पहली आज्ञा का पालन किया है। परमेश्वर की कलीसिया में सही कार्य करने का यही तरीका है।

"पर मेरा कहना यह है कि यदि कोई भाई कहलाकर, व्यभिचारी, या लोभी, या मूर्तिपूजक, या गाली देने वाला, या पियक्कड़, या अन्धेर करने वाला हो, तो उसकी संगति मत करना, वरन ऐसे मनुष्य के साथ खाना भी न खाना।" (1 कुरि. 5:11)। प्रभु-भोज में केवल वही भागीदार हो सकते हैं जिनकी गवाही अच्छी है।

प्रश्न :

1. तत्त्वांतरण (Transubstantiation) का उपसिद्धांत क्या है?
2. प्रभु-भोज 'बलिदान' क्यों नहीं है?
3. तत्वउपस्थिति (Consubstantiation) क्या है? इनकी गलतियाँ बताएँ।
4. प्रभु भोज किस के लिए है?

पाठ-40

अलगाव

I. अलगाव का कर्त्ता

a. अलगाव के उदाहरण :

बाइबल के आरंभ में ही हम देखते हैं कि परमेश्वर ज्योति को अंधकार से अलग कर देते हैं। ''और परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि अच्छा है, और परमेश्वर ने उजियाले को अंधियारे से अलग किया।'' (उत्पत्ति 1:4)। परमेश्वर उदाहरण पेश कर रहे हैं यह सिखाने के लिए कि अनेक बातों को अलग-अलग किया जाना चाहिए। कुछ वस्तुएँ अपने मूल स्वभाव के कारण आपस में घुल-मिल नहीं सकते। जिस क्षण प्रकाश आता है उसी क्षण अंधकार समाप्त हो जाता है।

अंधकार की परिभाषा है ज्योति का न होना। जहाँ एक है वहाँ दूसरा नहीं रह सकता। यह सत्य सोचने पर बहुत हल्का लगता होगा परन्तु यह वह सत्य है, जिस पर परमेश्वर का वचन हमारा ध्यान बार-बार आकर्षित करता है।

परमेश्वर ने माँग की थी कि दाख की बारी में भी बीजों को अलग किया जाए। ''अपनी दाख की बारी में दो प्रकार के बीज न बोना, ऐसा न हो कि सारी उपज, अर्थात् तेरा बोया हुआ बीज और दाख की बारी की उपज दोनों अपवित्र ठहरें।'' (व्यवस्था. 22:9)। एक साथ बीज के बोए जाने पर वे आपस में इतना घुल मिल जाते हैं कि उनका फल पवित्र नहीं रहता। बोए जाने के बाद उन्हें अपनी जाति के अनुसार अलग-अलग करना असंभव होता है। मत्ती 13:24-30; 36-43 में यही मुख्य पाठ सिखाया गया है।

खेतों में काम करने वाले जानवरों के विषय में भी यही कहा गया है। ''बैल और गदहा दोनों संग जोतकर हल न चलाना।'' (व्यवस्था 22:10)। यह असंगतता को दिखाता है। इन दोनों जानवरों के स्वभाव

अलग-अलग हैं उन्हे एक साथ जोता नहीं जाना चाहिए अपनी चाल और शक्ति में वे बहुत अलग हैं।

परमेश्वर ने अपने लोगों को वस्त्र में भी मिलावट करने से मना किया था। ''ऊन और सनी की मिलावट से बना हुआ वस्त्र न पहिनना।'' (व्यवस्था. 22:11)

b. अलगाव का स्पष्टीकरण :

परमेश्वर के स्पष्ट कथन का क्या उद्देश्य था कि बीज में, जानवरों में अथवा वस्त्र में मिलावट ना करें। क्या परमेश्वर को वास्तव में उन वस्तुओं या पशुओं की चिंता थी? इस रस्म के नियम के पीछे छिपे सिद्धान्त को पौलुस 1 कुरि. 9:7-10 में स्पष्ट करते हैं।

नैतिक सत्य को लगातार याद दिलाते रहने के लिए एक तस्वीर के रूप में परमेश्वर ने कुछ रस्मों के नियम दिए। परमेश्वर ने बीज, जानवरों और वस्त्रों में मिलावट की अनुमति नहीं दी। परमेश्वर ने प्रकाश को अंधकार से अलग करके मनुष्य को यह सिखाया कि जो मूल स्वभाव में अलग-अलग हैं उन्हें मिलाया न जाए। जो मनुष्य आत्मिक अंधकार में रहते हैं वे उन मनुष्यों के साथ घुल मिल नहीं सकते जो एक आत्मिक जीवन जीते हैं। अच्छे का विशिष्ट गुण और गवाही बुरे की संगति में छिप जाता और निगला जाता है। अपने आकार और ताकत में भिन्न-भिन्न जानवर एक साथ समानता में कोई कार्य नहीं कर सकते। संसार के कार्य कलाप भी एक मसीही के जीवन शैली के अनुरूप नहीं हो सकते। जब परमेश्वर ने अपने लोगों को वस्त्र में मिलावट न करने की आज्ञा दी जब वह उनको यह शिक्षा दे रहे थे कि परमेश्वर के लोग परमेश्वर की बातों का सांसारिक बातों के साथ मिलावट ना करें। यह परमेश्वर के लोगों का उत्तरदायित्व है कि वे संसार की बातों से अलग रहें जैसे ज्योति अंधकार से अलग है। जंगली पौधों के साथ इतना घुल मिल न जाएं कि अंतिम कटनी पर ही वे अलग हो सकें।

II. अलगाव की आज्ञा :

a. अंधकार को दूर करो :

ऐसा नहीं है कि परमेश्वर ने मात्र उदाहरण के साथ अलगाव सिखा दिया। परन्तु परमेश्वर मसीहियों को संसार की चाल से अलग किया हुआ जीवन व्यतीत करने की आज्ञा देते हैं। रोमियों 13:12-14 में पौलुस कहते हैं-''रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है, इसलिए हम अंधकार के कामों को त्याग कर ज्योति के हथियार बाँध लें। जैसा दिन को शोभा देता है, वैसा ही हम सीधी चाल चलें, न कि लीला-क्रीड़ा और पियक्कड़पन में, न व्यभिचार और लुचपन में, और न झगड़े और ड़ाह में। वरन् प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो, और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो।'' (रोमियों 13:12-14)

b. असमान जुए में न जुतो :

2 कुरिन्थियों 6:14 में विश्वासियों को आज्ञा दी गई है कि वे अविश्वासियों के साथ असमान जुए में न जुतें। उनके एक साथ किए गए कार्य से परमेश्वर की महिमा नहीं होगी। जब हम कार्य की बात करते हैं तो उसके पीछे के उद्देश्य से तात्पर्य है। एक मसीही का उद्देश्य अपने कार्यों से प्रभु यीशु के द्वारा परमेश्वर की महिमा करना है। एक अविश्वासी स्वयं के लिए ही महिमा लाता है।

C. बाहर निकलो :

परमेश्वर की स्पष्ट आज्ञा है कि अविश्वासियों के बीच में से बाहर निकलो। हम अविश्वासियों से पूरी तरह कटकर जीवन व्यतीत नहीं कर सकते परन्तु हमें उनके साथ अपनी पहचान नहीं बनाना चाहिए। हमारे लक्ष्य उनके लक्ष्यों से अलग हैं। हमारे उद्देश्य उनके उद्देश्यों से अलग हैं। हमारे क्रिया-कलाप उनके कार्यों से अलग हैं। हमारा रवैया भी उनके रवैए से अलग होना चाहिए। एक विश्वासी को अपनी अलग पहचान बनानी चाहिए। यह परमेश्वर की आज्ञा है।

III. अलगाव के दो पहलू :

अलगाव का अर्थ अपने आप को शारीरिक रूप से संसार से अलग कर लेना नहीं है। यूहन्ना 17:15 में प्रभु ने प्रार्थना की, ''मैं यह विनती नहीं करता कि तू उन्हें जगत से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचाए रख।'' रोमियों 12:2 कहता है, ''इस संसार के सदृश न बनो, परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए।'' रोमियों 13:12-14 हमें सिखाता है, ''अंधकार के कार्यो को त्याग कर ज्योति के हथियार बाँध लें।'' अलगाव के दो पहलू हैं-संसार की वस्तुओं को उतार फेंकना या त्याग देना और मसीह यीशु की सामर्थ्य और अनुग्रह को पहन लेना या अपना कर लेना। हमें प्रभु यीशु को अपने जीवन का स्वामी बना लेना है और प्रभु की सिद्ध इच्छा के अनुसार संपूर्ण समर्पण करना है (रोमियों 12:1-12) यह अलगाव का अंतिम लक्ष्य है कि हम स्वयं को पूरी रीति से प्रभु के प्रति समर्पित करें।

अलगाव का परिणाम :

अलगाव का परिणाम पिता से संगति है। धार्मिकता का अधर्म से कोई मेल नहीं। प्रकाश का अंधकार से कोई संगति नहीं। मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता? मूर्तियों के साथ परमेश्वर के मंदिर का क्या संबंध? हम तो जीवते परमेश्वर के मंदिर हैं। (2 कुरि 6:14-16)।

परमेश्वर की आज्ञा के साथ वायदा भी है। यदि हम स्वयं को संसार से अलग रखेंगे तो परमेश्वर हमें स्वीकार करेंगे, हमारे साथ संगति रखेंगे और हमारे पिता होंगे। परमेश्वर का यह वायदा हमें सच्चे अलगाव के लिए प्रेरित करे। ''अत: हे प्रियों, जब कि ये प्रतिज्ञाएं हमें मिली हैं, तो आओ हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय मानते हुए पवित्रता को सिद्ध करें।'' (2 कुरि. 7:1)।

प्रश्न :

1. अलगाव की क्या आवश्यकता है?
2. हमारा प्रभु अलगाव का कर्त्ता है इसके उदाहरण दीजिए।
3. एक विश्वासी को किन बातों से अलगाव की आवश्यकता है?
4. यूहन्ना 17:15 के अनुसार अलगाव के प्रति प्रभु का क्या रवैया है?
5. अलगाव का प्रतिफल क्या है?